अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501

राजस्थान, भारत

मोबाईलः +919414007497, +919414150607

फैक्स – 02974-238951

ई-मेल – bksparc@gmail.com

कुमार जीवन

कुमार ग्रुप :- (गीत गाया - मैं बाबा का, बाबा मेरा......) अच्छा है, कुमार, डबल कुमार हो गये हो। एक दुनिया के हिसाब से भी कुमार हो और इस ब्राह्मण जीवन में भी ब्रह्माकुमार हो। तो डबल कुमार हो। तो डबल काम करना पड़ेगा। करेंगे? हुआ ही पड़ा है। दृढ़ संकल्प किया और सफलत हुई ही पड़ी है।

(07-03-2005)

यूथ ग्रुप :- यूथ ग्रुप को मुबारक हो। देखो, थोडे समय में ऑर्डर मिलने से पहुँच गये हो। इसकी विशेष मुबारक है। अच्छा यहाँ तो आये लेकिन मंसा सेवा की? जो विशेष आत्मायें आनी थी उन्हों की यहाँ बैठे मंसा सेवा की? कारण अकारण आ नहीं सके लेकिन मंसा सेवा से उन आत्माओं को कुछ पहुँचाया कि सिर्फ मीटिंग की? वह आत्मायें भी याद तो करती होंगी, आना था, पहुँचना था। अच्छा है यूथ ग्रुप और बढ़ता जाए, तो भारत की समस्या खत्म हो जाए। यूथ का कर्तव्य है अपने-अपने स्थान के यूथ को ब्राह्मण यूथ बनावे। भ्रष्टाचार से बचाये, श्रेष्ठाचारी बनाये। अभी देखो गवर्मेन्ट तक भी आवाज पहुँचा है लेकिन स्पष्ट रिजल्ट उनकी बुद्धि में क्लीयर हो जाए, तो उन्हों को और नजदीक लाना पड़ेगा। हर शहर के, स्थान के जो भ्रष्टाचार, झगड़ा करने वाले यूथ ग्रुप हैं उन्हों की सेवा का कुछ न कुछ तरीका बनाना चाहिए। कोई ऐसा यूथ का परिवर्तन करके दिखाओ। हर एक शहर में यूथ ग्रुप तो होता ही है ना, तो हर एक शहर वाले कोई दो तीन यूथ ग्रुप को परिवर्तन करके दिखावे जो सबके ध्यान पर आ जाये। जैसे जेल में सेवा की थी तो कई परिवर्तन हुए जो जहाँ तहाँ अनुभव सुनाते थे, ऐसे ही कोई यूथ ग्रुप की जो एसोशियेशन्स हैं उसका परिवर्तन करके दिखाओ। और वह यूथ, दूसरे यूथ को अनुभव सुनावें। कर रहे हैं, अच्छा है। लेकिन अभी ऐसा कोई एक्जैम्पल निकालो, जो अति झगड़ालू हो, उसको ठीक करके दिखाओ, नामीग्रामी हो। है ना हिम्मत? ऐसा कोई परिवर्तन करके दिखाओ, जैसे बापदादा कहते हैं ना माइक बनाओ, वैसे आप झगड़ालू को शान्तमय बनाके एक्जैम्पुल दिखाओ, ऐसा ग्रुप बनाके यहाँ लाना। देखो कितने यूथ आये हैं, बहुत हैं। अच्छे-अच्छे हैं और सब तरफ के हैं। फॉरेनर्स भी हैं। अच्छा है। अभी कोई आवाज फैलाओ। थोड़ा-थोड़ा सेवा तो कर रहे हो, खाली तो नहीं बैठे हो लेकिन कोई ऐसे जैसे बॉम्ब डालते हैं ना तो आवाज होता है, ऐसे कोई आत्मिक बॉम्ब लगाओ। एटम बॉम्ब नहीं, आत्म बॉम्ब। अच्छा - मुबारक हो बहुत। टाइम पर पहुँचने की मुबारक हो।

(15-12-2004)

कुमार जीवन

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'कुमार जीवन'** एक है।

लहराना चाहिए। पवित्र हैं, पवित्र संस्कार विश्व में फैलायेंगे, यह नारा लगे। सुना कुमारियों ने। देखो कुमारियाँ कितनी हैं। अभी देखेंगे कुमारियाँ यह आवाज फैलाती हैं या कुमार? ब्रह्मा बाप को फालो करो। **अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, ना अधरकुमार-कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियाँ खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियाँ कहाँ भी हो, मधुवन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो..... गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।**

(15-11-2003)

पर भी अशान्ति नहीं। अपने शहर में भी अशान्ति नहीं। बस कुमारों के चेहरे में बोर्ड लगाने की ज़रूरत नहीं लेकिन मस्तक में ऑटोमेटिकली लिखा हुआ अनुभव हो कि यह शान्तिदूत हैं। ठीक है ना!

(30-11-2002)

कुमारों से :- कुमार - वारिस बना सकते हैं। कुमार माइक भी बना सकते हैं। कुमार तो गवर्मेन्ट को जगा सकते हैं। कुमार कमाल करके दिखायेंगे। वह दिन भी आना ही है। तो कुमारों को जगाओ, समीप लाओ। उनको जगाओ कहो आप भी कुमार, हम भी कुमार, आओ तो आपको कहानियाँ सुनायें।

(15-12-2002)

बापदादा को खुशी होती है और इस ग्रुप में सभी की संख्या अच्छी आई है। कुमारों की संख्या भी अच्छी आई है। देखो, कुमार अपने हमजिन्स को जगाओ। अच्छा है। कुमार यह कमाल दिखावें कि स्वप्न मात्र पवित्रता में परिपक्व हैं। बापदादा विश्व मं चैलेन्ज करके बताये कि ब्रह्माकुमार यूथ कुमार, डबल कुमार हैं ना। ब्रह्माकुमार भी हो और शरीर में भी कुमार हो। तो पवित्रता की परिभाषा प्रैक्किल में हो। तो ऑर्डर करें, आपको चेक करें पवित्रता के लिए। करें ऑर्डर? इसमें हाथ नहीं उठा रहे हैं। मशीनें होती हैं चेक करने की। स्वप्न तक भी अपवित्रता हिम्मत नहीं रखे। कुमारियों को भी ऐसा बनना है, कुमारी अर्थात पूज्य पवित्र कुमारी। कुमार और कुमारियाँ यह बापदादा को प्रोमिस करें कि हम सभी इतने पवित्र हैं जो स्वप्न में भी संकल्प नहीं आ सकता, तब कुमार और कुमारियों की पवित्रता सेरीमनी मनायेंगे। अभी थोड़ा-थोड़ा है, बापदादा को पता है। **अपवित्रता की अविद्या हो क्योंकि नया जन्म लिया ना। अपवित्रता आपके पास्ट जन्म की वात है। मरजीवा जन्म, जन्म ही ब्रह्मा मुख से पवित्र जन्म है। तो पवित्र जन्म की मर्यादा बहुत आवश्यक है।** कुमार कुमारियों को यह झण्डा

परखने की शक्ति को तीव्र बनाओ

आज विशेष क्या देख रहे हैं? परिवर्तन कैसे देखते हैं? इस ग्रुप में प्रश्न का उत्तर देने में होशियार कौन हैं? देखने और परखने की शक्ति कहाँ तक आई है। अच्छा! योग की स्थिति में निरंतर रहने वाला कौन है? दिव्य गुणों की धारणा में दिव्य-गुणमूर्त कौन नज़र आता है? यह क्यों पूछते हैं? क्योंकि अगर परखने की प्रैक्टिस होगी, तो जब दुनिया में कार्य अर्थ जाते हो और आसुरी सम्प्रदाय के साथ सम्बन्ध रखना पड़ता है, तो परखने की प्रैक्टिस होने से बहुत बातों में विजयी बन सकते हो। अगर परखने की शक्ति नहीं तो विजयी नहीं बन सकते। यह तो थोडी-सी देखरेख की कि अपने ही परिवार के अन्दर कहाँ तक परख सकते हो। यूं तो हरेक रत्न एक-दो से श्रेष्ठ है। लेकिन फिर भी परखने की प्रैक्टिस जरूर चाहिए। यह परखने की प्रैक्टिस छोटी बात नहीं समझना। इस पर ही नम्बर ले सकते हो। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, वर्तमान और भविष्य - दोनों कालों को भी परखने की प्रैक्टिस चाहिए। विशेष करके जो पाण्डव सेना है, उन्हों को यह परखने की शक्ति बहुत आवश्यक है। क्योंकि आप गोपों को बहुत प्रकार की परिस्थितियाँ सामने आती हैं, उन्हों का सामना करने लिये यह बुद्धि की सफाई बहुत आवश्यक है। परखने की पावर कैसे आयेगी, उसके लिए मुख्य साधन कौन-सा है? परखने की शक्ति को तीव्र बनाने लिए मुख्य कौन-सा साधन है? परखने का तरीका कौन-सा होना चाहिए? तुम्हारे सामने कोई भी आये उनको परख सकते हो? (हरेक ने अपना-अपना विचार बताया) सभी का रहस्य तो एक ही है। अव्यक्त स्थिति वा याद वा आत्मिक स्थिति बात तो वही है। लेकिन आत्मिक स्थिति के साथ-साथ यथार्थ रूप से वही परख सकता है जिनकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प नहीं चलते होंगे, उनकी बुद्धि एक की ही याद में, एक के ही कार्य में और एकरस स्थिति में होगी। वह दूसरे को जल्दी परख सकेंगे। जिनकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प उत्पन्न होंगे, तो उनकी बुद्धि में दूसरों को परखने के समय भी अपने व्यर्थ संकल्प की मिक्सचरिटी होगी, इसलिए जो जैसा है वैसा परख नहीं

सकेंगे। तो मूल रहस्य निकला - बुद्धि की सफाई । जितना बुद्धि की सफाई होगी उतना ही योगयुक्त अवस्था में रह सकेंगे। यह व्यर्थ संकल्प और विकल्प जो चलते हैं वह अव्यक्त स्थिति होने में विघ्न हैं। बार-बार इस शरीर के आकर्षण में आ जाते हैं, उसका मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन रहे। एक की याद को छोड़ अनेक तरफ बुद्धि जाने के कारण शक्तिशाली नहीं रहते। वैसे भी जब बुद्धि बहुत कार्य तरफ लगी हुई होती है, तो अनुभव किया होगा - बुद्धि में वीकनेस (कमज़ोरी), थकावट महसूस होती है। और जो भी है यथार्थ रूप से निर्णय नहीं कर सकेंगे। इसी रीति व्यर्थ संकल्प, विकल्प जो चलते हैं, यह भी बुद्धि को थकावट में लाते हैं। थकी हुई कोई भी आत्मा न परख सकेगी, न निर्णय कर सकेगी। कितना भी होशियार होगा, तो थकावट में उनके परखने, निर्णय करने में फर्क पड़ जाता है। सारा दिन इन संकल्पों से बुद्धि थकी हुई होने कारण निर्णय करने की शक्ति में कमी आ जाती है। इसलिए विजयी नहीं बन सकते। हार खाने का मुख्य कारण यह है - बुद्धि की सफाई नहीं है। जैसे उन्हों की हाथ की सफाई होती है ना। आप फिर बुद्धि की सफाई से क्या से क्या कर सकते हो! वह हाथ की सफाई से झट से बदल देते हैं, देरी नहीं लगती। इसलिए कहते हैं जादूगर। आप में भी बदलने का जादू आ जायेगा। अभी बदलने सीखे हो, लेकिन जादू के समान नहीं बदल सकते हो, अर्थात जल्दी नहीं बदल सकते हो। समय लगता है। जादू चलाने के लिये जितना समय जिसको मंत्र याद रहता है उतना उसका जादू सफल होता है। आपको भी अगर महामंत्र याद होगा तो जादू के समान कार्य होगा। अब इसी में देरी हैं। तो अब इस भट्ठी से क्या बनकर निकलेंगे? (जादूगर) अगर इतने जादूगर भारत के कोने-कोने में, छा जायेंगे तो क्या हो जावेगा? एक मास के अन्दर कुछ और नज़ारा देखने में आयेगा! अब तो तैयारी करनी पड़ेगी ना। अगर इतने जादूगर बदलने का कार्य शुरू कर देंगे तो फिर क्या करना पड़ेगा? ऐसी कुछ नवीनता आप भी देखना चाहते हो और बापदादा भी देखना चाहते हैं। ऐसा आवाज

उठाओ। कुमारियों ने आप समान बनाया है? अच्छा प्लैन बना रही हैं। यह हॉस्टेल वाली हाथ उठा रही हैं। अभी सेवा का सबूत नहीं लाया है। तो कुमार और कुमारियों को सेवा का सबूत लाना है। ठीक हैं!

(14-11-2002)

कुमारों से :- मधुबन के भी कुमार हैं। देखो, कुमारों की संख्या देखो कितनी है? आधा क्लास तो कुमारों का है। कुमार अभी साधारण कुमार नहीं हैं। अभी कुमारों का टाइटल हैं, कौन-से कुमार हो? ब्रह्माकुमार तो हो ही। लेकिन ब्रह्माकुमारों की विशेषता क्या है? कुमारों की विशेषता है कि सदा जहाँ भी अशान्ति होगी उसमें शान्ति फैलाने वाले शान्तिदूत हैं। न मन की अशान्ति, न बाहर की अशान्ति। कुमारों का कार्य ही है मुश्किल काम करना, हार्ड वर्कर होते हैं ना! तो आज सबसे हार्ड में हार्ड वर्क है - अशान्ति को मिटाए शान्ति दूत बन शान्ति फैलाना। ऐसे कुमार हो? हो? अशान्ति का नाम निशान नहीं रहे। ऐसे शान्तिदूत हो? न विश्व में, न आपके सम्बन्ध सम्पर्क में। शान्तिदूत, जैसे आग बुझानेवाले कहाँ भी आग होगी तो आग बुझयेंगे ना। तो शान्तिदूत का कार्य ही है अशान्ति को शान्ति में बदलना। तो शान्तिदूत हो ना! पक्का! पक्का? पक्का? बहुत अच्छा लग रहा है, बापदादा इतने कुमारों को देख खुश होते हैं। पहले भी बापदाा ने प्लैन दिया था कि दिल्ली में ज्यादा से ज्यादा कुमार, जो गवर्मेन्ट समझती है कुमार अर्थात झगड़ा करने वाले, डरती है कुमारों से। ऐसे डरने वाली गवर्मेन्ट, हर ब्रह्माकुमार का शान्तिदूत के टाइटल से स्वागत करें, तब है कुमारों की कमाल। सारे विश्व में छा जावें कि ब्रह्माकुमार शान्तिदूत हैं। हो सकता है ना? दिल्ली में करना। करना है ना - दादियाँ करेंगे? इतने कुमार हैं, एक ग्रुप में इतने हैं तो सभी ग्रुप में कितने होंगे? विश्व में कितने होंगे? (लगभग 1 लाख) तो करो कमाल कुमार। गवर्मेन्ट में जो कुमारों के प्रति उल्टा भरा हुआ है वह सुल्टा कर दो। लेकिन मन में अशान्ति नहीं। साथियों में भी अशान्ति नहीं और अपने स्थान

सोचो मेरा कर्तव्य क्या है! उसका कर्तव्य देख अपना कर्तव्य नहीं भूलो। वह गाली दे रहा है, आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ। आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगायेंगे। सहनशीलता में इतनी शक्ति है, लेकिन थोडा समय सहन करना पड़ता है। तो सहनशीलता के देव वा देवियाँ हो ना? सदा यही स्मृति में रखो - मैं सहनशीलता का देवता हूँ, मैं सहनशीलता की देवी हूँ। तो देवता अर्थात देने वाला दाता, कोई गाली देता है, रिस्पेक्ट नहीं करना है तो किचड़ा है ना कि अच्छी चीज है? तो आप लेते क्यों हो? किचड़ा लिया जाता है क्या? कोई आपको किचडा देवे तो आप लेंगे? नहीं लेंगे ना। तो रिस्पेक्ट नहीं करता, इन्सल्ट करता, गाली देता, आपको डिस्टर्ब करता, तो यह क्या है? अच्छी चीजें हैं। फिर आप क्यों लेते हो? थोड़ा-थोड़ा तो ले लेते हो, पीछे सोचते हो नहीं लेना था। तो अभी लेना नहीं। लेना अर्थात मन में धारण करना, फील करना। तो **अपने अनादिकाल, आदिकाल, मध्यकाल, संगमकाल, सारे कल्प के प्युरिटी की रॉयल्टी, पर्सनालिटी याद करो। कोई क्या भी करे आपकी पर्सनालिटी को कोई छीन नहीं सकता।** यह रूहानी नशा है ना? और डबल फारेनर्स को तो डबल नशा है ना! सब बात का डबल नशा। प्युरिटी का भी डबल नशा, सहनशील देवी-देवता बनने का भी डबल नशा। है ना डबल? सिर्फ अमर रहना। अमरभव का वरदान कभी नहीं भूलना।

(25-10-2002)

कुमार-कुमारियाँ :- कुमार और कुमारियाँ, तो आधा हाल कुमार-कुमारियाँ हैं। शाबास कुमार-कुमारियों को। बस कुमार कुमारियाँ ज्वाला रूप बन - आत्माओं को पावन बना देने वाले। कुमार और कुमारियों को तरस पड़ना चाहिए, आज के कुमार और कुमारियों पर, कितने भटक रहे हैं। भटके हुए हमजिन्स को रास्ते पर लगाओ। अच्छा, जो भी कुमार और कुमारी आये हैं उनमें से इस सारे वर्ष में जिसने आत्माओं को सेवा में आप समान बनाया है वह बड़ा हाथ

फैल जाये कि यह कौन कहाँ से प्रगट हुए हैं! ऐसे महसूस हो कि एक-एक स्थान पर कोई अलौकिक आत्मा अवतरित होकर आई है! एक अवतार इतना कुछ कर सकता है तो यह कितने अवतार हैं! यहाँ से जब जाओ तो ऐसे ही समझकर जाना कि हम इस शरीर में अवतरित हुए हैं - ईश्वरीय सेवा के लिये। अगर यह स्मृति रखकर जायेंगे तो आपकी हर चलन में अलौकिकता देखने में आयेगी। जो भी आपके दैवी परिवार वाले वा लौकिक परिवार वाले हैं, वह महसूस करें कि यह कुछ अनोखे ही बनकर आये हैं! बदलकर आये हैं। जब आप की बदलने की महसूसता आयेगी तब आप दुनिया को बदल सकेंगे। अगर आप सभी के बदलने की भासना नहीं तो दुनिया को नहीं बदल सकेंगे। खुद बदल कर दुनिया को बदलना है। ऐसे ही समझकर चलना कि निमित्त मात्र इस शरीर का लोन लेकर ईश्वरीय कार्य के लिए, थोडे दिन के लिए अवतरित हुये हैं, कार्य समाप्त करके फिर चले जायेंगे। यह स्मृति लक्ष्य रखकर के, ऐसी स्थिति बनाकर फिर चलना।

यह बगीचा है। बापदादा चैतन्य बगीचे में आते हैं। तो कुछ वाणी से खुश्बू लेते हैं, कुछ नयनों से, कुछ मस्तक के मणि से। हरेक के मस्तक के मणि की चमक बापदादा देखते हैं। ऐसे ही अगर आप सभी भी मस्तक के मणि को ही दखते रहो तो फिर यह दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी। दृष्टि जो चंचल होती है उसका मूल कारण यह है। मस्तक के मणि को न देख, शरीरिक रूप को देखते हो। रूप को न देखो लेकिन मस्तक के मणि को देखो। जब रूप को देखते हो तो ऐसे ही समझो कि सांप को देख रहे हैं। सांप के मस्तक में मणि होती है ना। तो मणि को देखना है, न कि सांप को। अगर शरीर-भान में देखते हो तो मानों सांप को देखते हो। सांप को देखा और सांप ने काटा! सांप तो अपना कार्य करेगा। सांप में विष भी होता है। कोई-कोई विशेष सांप होते हैं जिनमें मणि होती है। आप गोपों को सांप को कैसे माना है क्या करेंगे? आप सांप को देखते हुए भी सांप को न देखो। मणि को ही देखो। मणि को देखने से सांप का तो विष होता है वह हल्का हो जायेगा। अगर शरीर रूपी सांप को देखा तो फिर उनके बन जायेंगे, उन समान बन

जायेंगे। लेकिन मणि को दखेंगे तो बापदादा के माला के मणि बन जायेंगे। या तो बनना है सांप के समान या तो बनना है माला की मणि। अगर मणि बनना है तो देखो भी मणि को। फिर जो यह कम्पलेन है वह बदलकर कम्पलीट हो जायेंगे, सिर्फ बुद्धि की परख से। कहाँ कम्पलेन, कहाँ कम्पलीट रात-दिन का फर्क है, लेकिन सिन्धी भाषा में लिखेंगे तो सिर्फ दो बिन्दियों का फर्क है। यहाँ भी ऐसे हैं। दो बिन्दी - एक स्वयं की, एक बापदादा की। यह दो बिन्दी ही याद रहें तो कम्पलेन की बजाय कम्पलीट हो जायें। इसलिए आज से यह प्रतिज्ञा अपने आप से करो। बापदादा के सामने तो बहुत प्रतिज्ञाएं की है, लेकिन आज अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि - अब से लेकर सिवाए मणि के और कुछ नहीं देखेंगे और खुद ही माला के मणि बनकर के सारी सृष्टि को चमकायेंगे। जब खुद मणि बनेंगे तब चमकेंगे। अगर मणि नहीं बनेंगे तो चमक नहीं सकेंगे। जग प्रतिज्ञा करेंगे तब ही प्रत्यक्षता होगी। अपने आपसे पूर्ण रूप से प्रतिज्ञा नहीं कर पाते हो, इसलिए प्रत्यक्षता भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाती है। प्रतयक्षता कम निकलने का कारण अपने आपसे प्रतिज्ञा की कमी है। अभी-अभी बोलते हो, फिर अभी-अभी भूलते हो। लेकिन अब प्रतिज्ञा के साथ-साथ यह भी निश्चय करो कि प्रत्यक्षता भी लायेंगे। पाण्डव सेना है 'ज्ञानी तू आत्मा' और शक्ति सेना है 'स्नेही तू आत्मा'। जो स्नेही हैं वह योगी हैं। अभी तो एक-एक पाण्डव के मस्तक में उमंग-उत्साह झलक रहा है। यह उमंग और उत्साह एकरस सदा रहे। मेहनत जो ली है उसका फल दिखाना है। अगर मेहनत ली हुई यहाँ चुक्तू नहीं करेंगे तो फिर सतयुग में वह मेहनत का फल देना पड़ेगा। इसलिए जो मेहनत ली है उसे भरकर देना।

हरेक सेवाकेन्द्र से यह समाचार आना चाहिए - यह कुमार तो अवतरित होकर के इस पृथ्वी पर पधारे हैं। ऐसा समाचार जब आये तब समझो कि फल निकल रहा है। अभी स्थिति की आवश्यकता है। जैसे बापदादा लोन लेकर आते हैं ना। अभी तो दोनों ही लोन लेते हैं। थोड़े समय के लिये आते हैं। किस लिए? मिलने के लिये। वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त

आपको निमित्त बनना पड़ेगा। यह प्रतिज्ञा सदा रिवाइज करते रहना। कमाल तो करनी ही है।

(03-02-2002)

कुमार ग्रुप उठो। कुमारों का ग्रुप भी अच्छा है। कुमारों ने दिल में प्रतिज्ञा का पट्टा बांध लिया है, इन्होंने (कुमारियों ने) तो बाहर से भी बाँध लिया है। प्रतिज्ञा का पट्टा बाँधा है कि सदा अर्थात निरंतर प्युरिटी की पर्सनाल्टी में रहने वाले कुमार हैं। ऐसे हैं? बोलो, जी हाँ। ना जी या हाँ जी? या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे थोड़ा-थोड़ा ढीला हो गया! ऐसे नहीं करना। जब तक ब्राह्मण जीवन में जीना है तब तक सम्पूर्ण पवित्र रहना ही है। ऐसा वायदा है? पक्का वायदा है तो हाथ हिलाओ। टी.वी. में आपके फोटो निकल रहे हैं। जो ढीला होगा ना उसको यह चित्र भेजेंगे। इसलिए ढीला नहीं होना, पक्का रहना। हाँ पक्के हैं, पाण्डव तो पक्के होते हैं। पक्के पाण्डव, बहुत अच्छा।

प्युरिटी की वृत्ति है - शुभ भावना, शुभ कामना। कोई कैसा भी हो लेकिन पवित्र वृत्ति अर्थात शुभ भावना, शुभ कामना और पवित्र दृष्टि अर्थात सदा हर एक को आत्मिक रूप में देखना वा फरिश्ता रूप में देखना। तो वृत्ति, दृष्टि और तीसरा है कृति अर्थात कर्म में, तो कर्म में भी सदा हर आत्मा को सुख देना और सुख लेना। यह है प्युरिटीकी निशानी। वृत्ति, दृष्टि और कृति तीनों में यह धारणा हो। कोई क्या भी करता है, दुःख भी देता है, इन्सल्ट भी करता है, लेकिन हमारा कर्तव्य क्या है? क्या दुःख देने वाले को फालो करना है या बापदादा को फालो करना है? फालो फादर है ना! तो ब्रह्मा बाप ने दुःख दिया वा सुख दिया? सुख दिया ना! तो आप मास्टर ब्रह्मा अर्थात ब्राह्मण आत्माओं को क्या करना है? कोई दुःख देवे तो आप क्या करेंगे? दुःख देंगे? नहीं देंगे? बहुत दुःख देवे तो? बहुत गाली देवे, बहुत इन्सल्ट करे, तो थोडा तो फील करेंगे या नहीं? कुमारियाँ फील करेंगी? थोडा। तो फालो फादर। यह

- कभी भी संस्कार के वश नहीं होंगे जो बाप के संस्कार वह मुझ ब्राह्मण आत्मा के संस्कार। जो द्वापर, कलियुग के संस्कार हैं वह मेरे संस्कार नहीं क्योंकि बाप के संस्कार नहीं। यह तमोगुणी संस्कार ब्राह्मणों के संस्कार हैं? नहीं है ना! तो आप कौन हो? ब्राह्मण हो ना!

बापदादा को यूथ ग्रुप पर नाज़ है। देखो, दादियों को भी यूथ पर नाज़ है। दादी को प्यार है ना यूथ से। एकस्ट्रा प्यार है। कुमार हैं सुकुमार। कुमार नहीं, सुकुमार हैं। एक-एक कुमार विश्व के कुमारों का परिवर्तन कर दिखलाने वाले। अच्छा, कुमारों को काम दें? हिम्मत हैं? करना पडेगा। कुमारियाँ करेंगी?

तो काम दे रहे हैं ध्यान से सुनना। तो जो अगली सीजन होगी, अगली सीजन में कुमारों का ऐसे ही स्पेशल प्रोग्राम रखेंगे लेकिन..... लेकिन भी है। ज्यादा काम नहीं देते हैं एक-एक कुमार 10-10 कुमारों का, छोटा-सा हाथ का कंगन तैयार करके लाना। हाथ में कंगन पड़ता है ना। ब्रह्मा बाप को सदैव हाथ में फूलों का कंगन डालते हैं। तो एक-एक कुमार, कच्चे-कच्चे नहीं लाना, पक्के-पक्के लाना। तो मधुबन में तो आयें फिर घर जायें तो बदल जाएं! नहीं। ऐसे पक्के बनाकर लाना जो बापदादा देख-देख कहे वाह कुमार वाह! ऐसे तैयार हैं? करेंगे, ऐसे? थोडा सोचो। ऐसे ही हाथ नहीं उठा लो। करना पडेगा। बनाना पडेगा। डबल फारेनर्स भी करेंगे? डबल फारेनर्स में कुमार हाथ उठाओ। तो आप भी 10 लायेंगे ना? फारेनर्स भी लायेंगे, इण्डिया वाले भी लायेंगे। फिर जो फर्स्टक्लास क्वालिटी लायेंगे उसको इनाम देंगे। इनाम बढ़िया देंगे, घटिया नहीं देंगे। प्यार है ना कुमारों से। अगर गवर्मेन्ट को ज्यादा में ज्यादा कुमार पॉजिटिव कर्म करने वाले मिल जाएं तो गवर्मेन्ट कितना खुश होगी। अगर आप 10-10 कुमार लायेंगे तो सारा हाल कुमारों से भरेंगे फिर गवर्मेन्ट को बुलायेंगे, देखो यह कुमार। लेकिन लाने पडेंगे, बनाने पडेंगे। अगर अपनी स्थिति, लक्ष्य और लक्षण को समान रखेंगे तो सेवा में सफलता होगी या नहीं होगी - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। हुई पड़ी है। सिर्फ

आये हैं - थोड़े समय के लिये। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा। दोनों ही हिसाब ठीक किया है? या लेने का किया है, देने का नहीं? 6 मास तक एकरस रहेंगे ना। कि 15 दिन के बाद लिखेंगे-चाहते तो हैं लेकिन क्या करें, यह हो गया...ऐसी कोई भी कम्पलेन नहीं आये। फिर तो दीदी का काम हल्का हो जायेगा। आप खुद भारी होंगे तो सारा कार्य भारी हो जायेगा। बापदादा की आशा कहें वा शुद्ध संकल्प कहें यही रहता है और रहेगा ही कि एक-एक नम्बरवन हो। लेकिन सारे कल्प के अन्दर जो अब की स्थिति बनायेंगे वह तो अब के हिसाब से नम्बरवन है ना, जो वास्तविक सम्पूर्ण स्टेज है। इसके लिये कह रहे हैं। सभी यही लक्ष्य रखें कि हम नम्बरवन जायेंगे। यह नहीं सोचना कि सभी कैसे नम्बरवन जोयेंगे? इसमें महादानी नहीं बनना है। दो बातें मुख्य याद रखना है कि एक तो मणी को देखना, देह रूपी सांप को न देखना। और दूसरी बात, अपने को अवतरित समझो। इस शरीर में अवतरित होकर कार्य करना है। और **एक स्लोगन सदा याद रखना कि जो बापदादा कहेंगे, जो करायेंगे, जैसे चलायेंगे, वैसे ही करेंगे, चलेंगे, बोलेंगे, देखेंगे। यह है पाण्डव सेना का मुख्य सलोगन। जो कहेंगे वह सोचेंगे। और कुछ सोचना नहीं है। इन आंखों से और कुछ देखना नहीं है।** आखें भी दे दी ना। पूरे परवाने हो ना। परवाने को शमा बिगर और कुछ देखने में आता है क्या? आपकी आंखे और क्यों देखती? जब और कुछ देखते हैं तो धोखा देती हैं। अपने को धोखा न दो। सम्पूर्ण अर्थात् पूरा परवाना है। यह है छाप। रिजल्ट तो अच्छी है लेकिन उसको अविनाशी रखना है। **जब जैसे चाहें वैसी स्थिति बना सकें। यह मन को ड्रिल करानी है। यह जरूर प्रैक्टिस करो - एक सेकेण्ड में आवाज में, एक सेकेण्ड में फिर आवाज से परे, एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आयें और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। इस ड्रिल की वहुत आवश्यकता है।** ऐसे नहीं कि शारीरिक भान से निकल ही न सकें। **एक सेकेण्ड में कार्य प्रति शारीरिक भान में आयें, फिर एक**

सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। जिसकी यह ड्रिल पक्की होगी वह सभी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं। जैसे शारीरिक ड्रिल सुबह को कराई जाती है, वैसे **यह अव्यक्त ड्रिल भी अमृतवेले विशेष रूप से करना है। करना तो सारा दिन है लेकिन विशेष प्रैक्टिस करने का समय अमृतवेले है। जब देखो बुद्धि बहुत बिजी है तो उसी समय यह प्रैक्टिस करो - परिस्थिति में होते हुए भी हम अपनी बुद्धि को न्यारा कर सकते हैं। लेकिन न्यारे तब हो सकेंगे जब जो भी कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे।** अगर उस कार्य में अटैचमेंट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटैच नहीं होंगे। इसलिए यह प्रैक्टिस करो। कैसी भी परिस्थिति हो। क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनकी भेंट में जो आजकल की परिस्थितियां है वह कुछ नहीं हैं। जो अन्तिम परिस्थिति आने वाली है, उन परिस्थितियों के बीच पेपर होना है। इसकी तैयारी पहले से करनी है। इसलिए **जब अपने को देखो कि वहुत विज़ी हूँ, बुद्धि बहुत स्थूल कार्य में विज़ी है, चारों ओर सरकमस्टान्सेज अपने तरफ खैंचने वालें है; तो ऐसे समय पर यह अभ्यास करो। तब मालूम पड़ेगा कहाँ तक हम ड्रिल कर सकते हैं। यह भी बात बहुत आवश्यक है। इसी ड्रिल में रहते रहेंगे तो सफलता को पायेंगे। एक-एक सबजेक्ट की नम्बर होती है। मुख्य तो यही है। इसमें अगर अच्छे हैं तो नम्बर आगे ले सकते हैं। अगर इस सबजेक्ट में नम्बर कम है तो फाइनल नम्बर आगे नहीं आ सकते।** इसलिए सुनाया था कि 'ज्ञानी तू आत्मा' के साथ में स्नेही भी बनना है। जो स्नेही होता है वह स्नेह पाता है। जिससे ज्यादा स्नेह होता है, तो कहते हैं यह तो सुध-बुध ही भूल जाते हैं। सुध-बुध का अर्थ ही है अपने स्वरुप की जो स्मृति रहती है वह भी भूल जाते हैं। बुद्धि की लगन भी उसके सिवाए कहाँ नहीं हो। ऐसे जो रहने वाले होते उनको कहा जाता है स्नेही।

इस ग्रुप का विशेष गुण यही है कि सभी बातों को सीखने और धारण

आज यूथ ग्रुप आया है। यूथ बहुत हैं। बापदादा यूथ ग्रुप को वरदान देते हैं कि सदा आबाद रहना। एक भी खज़ाना बरबाद नहीं करना, आबाद रहना, आबाद करना। लौकिक गुरू लोग आशीर्वाद देते हैं आयुश्वान भव और बापदादा कहते हैं शरीर की आयु तो जितनी है उतनी रहेगी इसीलिए शरीर की आयु के हिसाब से आयुश्वान भव का वरदान नहीं दते हैं लेकिन इस ब्राह्मण जीवन में सदा आयुश्वान भव। क्यों? ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। तो आयुश्वान तो होंगे ना! यूथ की एक विशेषता होती है। आप यूथ अपनी विशेषता को जानते हो? क्या विशेषता होती है, जानते हो? क्या विशेषता है आप में? (जो चाहे वह कर सकते हैं) अच्छा - कर सकते हो? अच्छी बात है, दुनिया के हिसाब से कहते हैं, यूथ जिद्दी बहुत होते हैं, जो सोचेंगे वह करके दिखयेंगे। वह लोग उल्टा कहते हैं लेकिन यहाँ ब्राह्मण यूथ जिद्दी नहीं है लेकिन अपनी प्रतिज्ञा पर पक्के रहने वाले हैं। हटने वाले नहीं है। ऐसे हो यूथ? हाथ उठाना तो बहुत सहज है। बापदादा खुश है हाथ उठाना, यह भी हिम्मत है ना। लेकिन **रोज़ अमृतवेले बाप से की हुई प्रतिज्ञा कि हम इस ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति से, सेवा से कभी भी संकल्प में भी हटेंगे नहीं। इस हिम्मत को, प्रतिज्ञा को रोज़ दोहराओ और बार-बार चेक करो कि हिम्मत जो रखी, संकल्प किया वह प्रैक्टिकल में हो रहा है?**

गवर्मेन्ट तो कहती है, बस दो चार लाख बन जाएं तो भी ठीक है। बापदादा कहते हैं - यह ब्राह्मण यूथ एक-एक लाख के समान हैं। इतने मजबूत हैं। हैं? देखो, ऐसे नहीं घर जाकर फिर लिख दो बाबा माया आ गई, संस्कार आ गया, समस्या आ गई। समस्याओं के समाधान स्वरूप बनो। समस्यायें तो आयेंगी लेकिन अपने से पूछो मैं कौन? समाधान स्वरूप हूँ या समस्या से हार खाने वाला हूँ? आप सबका टाइटल क्या है - विजयी रत्न या हार खाने वाले रत्न? विजयी रत्न हैं। ब्राह्मण जन्म होते ही बापदादा ने हर ब्राह्मण के मस्तक में विजय का तिलक अमर लगा दिया। तो अमरभव के वरदानी हो। अभी यह अपने से वायदा करो, ऐसे तो वायदा कहलायेंगे तो सब कर लेंगे लेकिन **अपने मन में अपने से वायदा करो**

किंगडम। तो ओ.के. माना बाप भी याद रहा और किंगडम भी याद रही। इसलिए ओ. के.... और ओ.के. लिखकर ऐसे नहीं रोज़ पोस्ट लिखो और पोस्ट का खर्चा बढ़ जाए। ओ.के. लिखकर अपने टीचर के पास जमा करो और टीचर फिर 15 दिन वा मास में एक साथ सबका समाचार लिखे। पोस्ट में इतना खर्चा नहीं करना, बचाना है ना। और यहाँ पोस्ट इतनी हो जायेगी जो यहाँ समय ही नहीं होगा। आप रोज़ लिखो और टीचर जमा करे और टीचर एक ही कागज में लिखे - ओ.के. या नो (No)। इंगलिश नहीं आती लेकिन ओ.के. लिखना तो आयेगा, नो लिखना भी आयेगा। अगर नहीं आये तो बस यही लिखो कि ठीक रहा या नहीं ठीक रहा। तो यूथ की रिजल्ट क्या आयेगी? ओ.के. की आयेगी? या कहेंगे वहाँ गये ना ऐसा हुआ, वैसा हुआ! ऐसा वैसा नहीं करना। यूथ अपनी कमाल दिखाओ। जो सब कहें कि नम्बरवन यूथ ग्रुप है। तो स्पेशल मिला? वैसे पार्टी में आते हो तो सामने थोड़ेही बैठने को मिलता है। कोई कहाँ, कोई कहाँ बैठते, अभी तो बिल्कुल सामने बैठे हो। तो इस मधुबन के स्नेह, शक्ति को भूल नहीं जाना। सदा कुछ भी हो, मधुबन की रिफ्रेशमेंट को याद करना। ऐसे है यूथ? देखेंगे। सारे ब्राह्मण परिवार की नज़र इस समय यूथ पर है। यूथ क्या कर रहा है, क्या आगे करता है! सब यही सोच रहे हैं।

(15-11-1999)

अभी फारेन का कुमार ग्रुप - बहुत अच्छी भट्टी की। बहुत अच्छा लगा। कुमार कमाल करेंगे। कुमार जो चाहे वह कर सकते हैं। कर रहे हैं और आगे भी करेंगे। करना है ना! होशियार है सब। बापदादा चेहरों से ही देख रहे हैं कि सभी हिम्मत वाले हैं। हिम्मत की मुबारक हो। बहुत अच्छा। बापदादा ने देख लिया ना। अभी तो कम्पलेन नही होगी ना हम को कोई ने देखा नही। एक एक को देख लिया। अच्छी मेहनत की है।

(20-02-2001)

करने और आगे के लिए भी अपने को उसमें चलाने के लिये चात्रक हैं। चात्रक बने हो लेकिन साथ में चरित्रवान भी बनना है। चात्रक हैं, यह इस ग्रुप की विशेषता है। लेकिन चात्रक का कार्य होता है उसके प्यासे रहना। यह चित्र चरित्र में देखें, तब फिर चात्रकों के साथ में पात्र भी कहेंगे। अभी चात्रक तो हैं। फिर रिजल्ट आने के बाद दो टाइटिल मिलेंगे, अभी चात्रक हैं, फिर विजय माला के नज़दीक आने के पात्र भी होंगे। जो सलोगन सुनाया और जो भट्ठी की छाप सुनाई उनको कायम रखेंगे तो दोनों ही गुण आ जायेंगे।

(16-10-1969)

कोई को आने से ही लॉटरी मिल जाती है। कोई को प्रयत्न करने से लॉटरी मिलती। ऐसे उच्च भाग्यशाली अपने को समझते हो? कुमारों के लिये भी सरल मार्ग है। क्योंकि उल्टी सीढ़ी जो चढ़े हुए हैं, उनको उतरनी पड़ती हैं। इसलिए कुमार-कुमारियों के लिए और ही सहज है। जो बन्धन मुक्त होते हैं वह जल्दी दौड़ सकते हैं। तो सभी बातों में निर्बन्धन रहना है। कैसी भी परिस्थिति में अपनी स्थिति ऊंची रखनी है। जो उच्च जीवन का लक्ष्य है उनसे दूर नहीं होना है।

(23-01-1970)

पुरुषार्थ का मुख्य आधार कैचिंग पावर

आज हरेक की दो बातें देख रहे हैं कि हरेक कितना नालेजफुल और कितना पावरफुल बने हैं। उसमें भी मुख्य कैचिंग पावर हरेक की कितनी पावरफुल हैं - यह देख रहे हैं। पुरुषार्थ का मुख्य आधार कैचिंग पावर पर है। जैसे आजकल साइन्स वाले आवाज को कैच करने का भी प्रयत्न करते हैं। लेकिन साइलेन्स की शक्ति से आप लोग क्या कैच करते हो? जैसे वह बहुत पहले के साउन्ड को कैच करते हैं, वैसे आप क्या कैच करते हो? अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच कर सकते हो? कैचिंग पावर इतनी आई है। वह तो दूसरों की साउन्ड को

कैच कर सकते हैं। आप अपने असली संस्कारों को सिर्फ कैच नहीं करते, लेकिन अपना प्रैक्टिकल स्वरूप बनाते हो। **सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं यही था और फिर वन रहा हूँ। जितना-जितना उन संस्कारों को कैच कर सकेंगे उतना स्वरूप वन सकेगें। अपनी स्मृति को पावरफुल बनाओ अर्थात् श्रेष्ठ और स्पष्ट बनाओ।** जैसे अपने वर्तमान स्वरूप का, वर्तमान संस्कारों का स्पष्ट अनुभव होता है ऐसे अपने आदि स्वरूपों और संस्कारों का भी इतना ही स्पष्ट अनुभव हो। समझा। इतनी कैचिंग पावर चाहिए। जैसे वर्तमान समय में अपनी चलन व कर्त्तव्य स्पष्ट और सहज स्मृति में रहती है। ऐसे ही अपनी असली चलन सहज और स्पष्ट स्मृति में रहे। **सदैव यही दृढ़ संकल्प रहे कि यह मैं ही तो था। 5000 वर्ष की बात इतनी स्पष्ट अनुभव में आये जैसे कल की बात। इसको कहते हैं कैचिंग पावर।** अपनी स्मृति को इतना श्रेष्ठ और स्पष्ट बनाकर जाना। भट्ठी में आये हो ना। सदैव अपना आदि स्वरूप और आदि संस्कार सामने दिखाई दे। अपनी स्मृति को पावरफुल बनाने से वृत्ति और दृष्टि स्वत: ही पावरफुल बन जायेंगी। फिर यह कुमार ग्रुप क्या बन जायेंगे? अनुकुमार अर्थात् अनोखे। हरेक के दो नयनों से दो स्वरूप का साक्षात्कार होगा। कौन से दो स्वरूप? सुनाया था ना कि निराकारी और दिव्यगुणधारी। फरिश्ता रूप और दैवी रूप। हरेक ऐसे अनुभव करेंगे वा हरेक से ऐसा अनुभव होगा जैसे कि चलता फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस हो। ऐसे अपने स्वरूप का साक्षात्कार होता है? जब 5000 वर्ष की बात को कैच कर सकते हो, अनुभव कर सकते हो तो इस अन्तिम स्वरूप का अनुभव नहीं होता है? अभी जो कुछ कमी रह गई है वह भरकर ऐसे अनुभवी मूर्त बनकर जायेंगे। तो देखना कभी कोई कमी न रह जाये। भट्ठी से ऐसा परिवर्तन कर के जाना, जैसे कभी-कभी सतयुगी आत्माऐं जब प्रवेश होती हैं तो उन्हों को इस पुरुषार्थी जीवन का बिल्कुल ही नालेज नहीं होता। ऐसे आप लोगों को कमज़ोरियों और कमियों की नालेज ही मर्ज हो जाये। इसके लिए विशेष इस ग्रुप को दो बातें याद रखनी है। दो बातें दो शब्दों में ही हैं। एक गेस्ट हाउस, दूसरा गेट आउट

चलना अर्थात् सहज बाप समान बनना। श्रीमत पर चलने वाले को कोई भी परिस्थिति नीचे नहीं ले आ सकती। तो श्रीमत पर चलना आता है?

अच्छा - तो कुमार अभी क्या करेंगे? निमन्त्रण मिला। स्पेशल खातिरी हुई। देखो, कितने लाडले हो गये हो। तो अभी आगे क्या करेंगे? रेसपान्ड देंगे या वहाँ गये तो वहाँ के, यहाँ आये तो यहाँ के? ऐसे तो नहीं है ना? यहाँ तो बहुत मजे में हो। माया के वार से बचे हुए हो, ऐसा कोई है जिसको यहाँ मधुबन में भी माया आई हो? ऐसा कोई है जिसको मधुबन में भी मेहनत करनी पड़ी हो? सेफ हो, अच्छा है। बापदादा भी खुश होते हैं। समय आयेगा जब यूथ ग्रुप पर गवर्मेन्ट का भी अटेन्शन जायेगा लेकिन तब जायेगा जब आप विघ्न-विनाशक बन जाओ। विघ्न-विनाशक किसका नाम है? आप लोगों का है ना! विघ्नों की हिम्मत नहीं हो जो कोई कुमार का सामना करे, तब कहेंगे विघ्न-विनाशक। विघ्न की हार भले हो, लेकिन वार नहीं करे। विघ्न-विनाशक बनने की हिम्मत है? या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे दादी बहुत अच्छा था लेकिन पता नहीं क्या हो गया! ऐसे तो नहीं लिखेंगे? यही खुशखबरी लिखो - ओ. के., वेरी गुड, विघ्न-विनाशक हूँ। बस एक अक्षर लिखो। ज्यादा लम्बा पत्र नहीं। ओ. के.। लम्बा पत्र हो तो लिखने में भी आपको शर्म आयेगा। शर्म आयेगा ना कि कैसे लिखें, क्या लिखें! कई बच्चे कहते हैं पोतामेल लिखने चाहते हैं लेकिन जब सोचते हैं कि पोतामेल लिखें तो उस दिन कोई न कोई ऐसी बात हो जाती है जो लिखने की हिम्मत ही नहीं होती है। बात हुई क्यों? विघ्न-विनाशक टाइटल नहीं है क्या? बाप कहते हैं लिखने से, बताने से आधा कट जाता है। फायदा है। लेकिन लम्बा पत्र नहीं लिखो, ओ. के. बस। अगर कभी कोई गलती हो जाती है तो दूसरे दिन विशेष अटेन्शन रख विघ्न-विनाशक बन फिर ओ. के. का लिखो। लम्बी कथा नहीं लिखना। यह हुआ, यह हुआ... इसने यह कहा, उसने यह कहा.... यह रामायण और उनकी कथायें हैं। ज्ञान मार्ग का एक ही अक्षर है, कौन सा अक्षर है? ओ. के.(O.K.)। जैसे शिवबाबा गोल-गोल होता है ना वैसे ओ (O) भी लिखते हैं। और के (K) अपनी

को सम्भव करके दिखाओ। कुमारों को बापदादा विश्व की स्टेज पर एक्जैम्पुल बनाकर खड़ा करने चाहते हैं। ऐसे कुमार हीरो पार्ट बजायेंगे? पक्का या हाथ उठाने तक? देखो हीरो पार्ट बजाने वाले बेदाग हीरा होना चाहिए। डबल हीरो। बेदाग हीरा भी और हीरो पार्टधारी भी। ऐसे हैं?

(31-12-1997)

कुमार क्या करेंगे? शक्तियां जमा हैं? शान्ति जमा है? यूज़ करना आता है? हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं, अभी प्रैक्टिकल में दिखाना। साक्षी होकर देखना भी है, सुनना भी है और सहयोग देना भी है। आखरीन रीयल जब पार्ट बजेगा, उसमें साक्षी और निर्भय होकर देखें भी और पार्ट भी बजावें। कौन-सा पार्ट? दाता के बच्चे, दाता बन जो आत्माओं को चाहिए वह देते रहें। तो मास्टर दाता हैं ना? स्टॉक जमा करो, जितना स्टॉक अपने पास होगा उतना ही दाता बन सकेंगे। अन्त तक अपने लिए ही जमा करते रहेंगे तो दाता नहीं बन सकेंगे। अनेक जन्म जो श्रेष्ठ पद पाना है, वह प्राप्त नहीं कर सकते हैं, इसीलिए एक बात तो अपने पास स्टॉक जमा करो। **शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भण्डार सदा भरपूर हो। दूसरा - जो विशेष शक्तियां हैं, वह शक्तियां जिस समय, जिसको जो चाहिए वह दे सको। अभी समय अनुसार सिर्फ अपने पुरुषार्थ में संकल्प और समय दो, साथ-साथ दाता बन विश्व को भी सहयोग दो। अपना पुरुषार्थ तो सुनाया - अमृतवेले ही यह सोचो कि मैं आज्ञाकारी बच्चा हूँ! हर कर्म के लिए आज्ञा मिली हुई है। उठने की, सोने की, खाने की, कर्मयोगी बनने की। हर कर्म की आज्ञा मिली हुई है। आज्ञाकारी बनना यही बाप समान बनना है।** बस, श्रीमत पर चलना, न मनमत, न परमत। एडीशन नहीं हो। कभी मनमत पर, कभी परमत पर चलेंगे तो मेहनत करनी पड़ेगी। सहज नहीं होगा क्योंकि मनमत, परमत उड़ने नहीं देगी। मनमत, परमत बोझ वाली है और बोझ उड़ने नहीं देगा। श्रीमत डबल लाइट बनाती है। श्रीमत पर

अर्थात् बाहर निकालना है और आगे के लिए अन्दर आने नहीं देना है। दूसरा इस पुरानी दुनिया को सदैव गेस्ट हाउस समझो। फिर कभी कमजोरी वा कमी का अनुभव नहीं करेंगे। सहज पुरुषार्थ है ना। इस ग्रुप को कमाल कर दिखानी है इसलिए **सदैव लक्ष्य रखना है कि अब फिर 21 जन्म के लिए रेस्ट करना है। लेकिन अभी एक सेकण्ड में भी मन्सा, वाचा, कर्मणा सर्विस से रेस्ट नहीं। तब ही बेस्ट बनेंगे।** समझा। क्योंकि यह है हार्ड वर्कर ग्रुप। हार्ड वर्कर ग्रुप में रेस्ट नहीं। कभी रेस्ट नहीं करता और वेस्ट नहीं करता। इसलिए इस हार्ड वर्कर्स ग्रुप वा रुहानी सेवाधारी संगठन को सेवा के सिवाए और कुछ सूझे ही नहीं। यह है नाम का काम। यह भी याद रखना - सेवा प्रति स्वयं को ही आफर करना है तब बाप दादा से आफरीन मिलेगी। हार्ड वर्कर्स वा रुहानी सेवाधारी ग्रुप को सदैव यह सलोगन याद रखना है। समाना और सामना करना हमारा निशाना है। यह है इस ग्रुप का सलोगन। सामना माया से करना है न कि दैवी परिवार से। समाना क्या है? अपने पुराने संस्कारों को समाना है। नालेजफुल के साथ-साथ पावरफुल भी बनना है तब ही सर्विसएबुल बनेंगे। अच्छा। तिलक समारोह देख राजतिलक समारोह याद आता है? अभी यह तिलक सम्पूर्ण स्थिति में रहने के लिए है। फिर मिलेगा राजतिलक। यह तिलक है प्रतिज्ञा और प्रत्यक्षता का तिलक। इतनी पावर है? रुहानी सेवाधारी ग्रुप के लिए यह खास शिक्षा दे रहे हैं। अपने को जितना अधिकारी समझते हो उतना ही सत्कारी बनो। पहले सत्कार देना फिर अधिकार लेना। सत्कार और अधिकार दोनों साथ-साथ हो। अगर सत्कार को छोड़ सिर्फ अधिकार लेंगे तो क्या हो जायेगा? जो कुछ किया वह बेकार हो जायेगा। इसलिए दोनों बातों को साथ-साथ रखना है।

(09.12.1970)

व्यक्त में रहते अव्यक्त स्थिति में रहने का अभ्यास अभी सहज हो गया है। जब जहाँ अपनी बुद्धि को लगाना चाहें तो लगा सकें - इसी अभ्यास को बढ़ाने

के लिए अपने घर में अथवा भट्ठी में आते हो। तो यहाँ के थोड़े समय का अनुभव सदाकाल बनाने का प्रयत्न करना है। जैसे यहाँ भट्ठी वा मधुबन में चलते-फिरते अपने को अव्यक्त फरिश्ता समझते हो, वैसे कर्मक्षेत्र वा सर्विस-भूमि पर भी यह अभ्यास अपने साथ ही रखना है। एक बार का किया हुआ अनुभव कहाँ भी याद कर सकते हैं। तो यहाँ का अनुभव वहाँ भी याद रखने से वा यहाँ की स्थिति में वहाँ भी स्थिति रहने से बुद्धि को आदत पड़ जायेगी। जैसे लौकिक जीवन में न चाहते हुए भी आदत अपनी तरफ खींच लेती है, वैसे ही अव्यक्त स्थिति में स्थित होने की आदत बन जाने के बाद यह आदत स्वतः ही अपनी तरफ खींचेगी। इतना पुरुषार्थ करते हुए कई ऐसी आत्मायें हैं जो अब भी यही कहती हैं कि मेरी आदत हैं। कमजोरी क्यों हैं, क्रोध क्यों किया, कोमल क्यों बने? कहेंगे - मेरी आदत हैं। ऐसे जवाब अभी भी देते हैं। तो ऐसे ही यह स्थिति वा इस अभ्यास की आदत बन जायें, तो फिर न चाहते हुए भी यह अव्यक्त स्थिति की आदत अपनी तरफ आकर्षित करेगी। यह आदत आपको अदालत में जाने से बचायेगी। समझा? जब बुरी-बुरी आदतें अपना सकते हो तो क्या यह आदत नहीं डाल सकते हो? दो-चार बारी भी कोई बात प्रैक्टिकल में लाई जाती है तो प्रैक्टिकल में लाने से प्रैक्टिस हो जाती है। यहाँ इस भट्ठी में अथवा मधुबन में इस अभ्यास को प्रैक्टिकल में लाते हो ना। जब यहाँ प्रैक्टिकल में लाते हो और प्रैक्टिस हो जाती है तो वह प्रैक्टिस की हुई चीज क्या बन जानी चाहिए? नेचुरल और नेचर बन जानी चाहिए। समझा? जैसे कहते हें ना - यह मेरी नेचर है। तो यह अभ्यास प्रैक्टिस से नेचुरल और नेचर बन जाना चाहिए। यह स्थिति जब नेचर बन जायेगी फिर क्या होगा? नेचुरल केलेमिटीज़ हो जायेगी। आपकी नेचर न बनने के कारण यह नेचुरल केलेमिटीज़ रुकी हुई हैं। क्योंकि अगर सामना करने वाले अपने स्व-स्थिति से उन परिस्थितियों को पार नहीं कर सकेंगे तो फिर वह परिस्थितियाँ आयेंगी कैसे। सामना करने वाले अभी तैयार नहीं है, इसलिए यह पर्दा खुलने में देरी पड़ रही है। अभी तक इन पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनिया से, पुरानी देह के सम्बन्धियों से

बहुत अच्छा मिलना है लेकिन पहले तैयार हो जाओ। पहले दादियों को बेफिक्र बनाओ। जहाँ कुमार-कुमारियाँ इकट्ठे रहते हैं ना तो डर लगता है, फॉरेन की बात अलग है, वहाँ तो फीमेल भी मेल है, मेल भी फीमेल हैं। वहाँ की बात अलग है। लेकिन भारत में अगर दो-तीन भाई सेन्टर चलायें तो पहले तो लोग डिस्कस करने के सिवाए और कुछ नहीं करेंगे। और जोश होता है ना तो डण्डा भी लग सकता है। इसलिए आप तैयार हो जाओ, आपको सेवा बहुत मिलनी है और जितना कुमारियों को सेवा का चांस है, ऐसे अगर आप पक्के योगी बन गये तो थोड़े समय में आपका खाता भी उतना ही जमा हो सकता है। लेकिन बापदादा को दिल से गैरेन्टी दिलाओ, कागज वाला बापदादा नहीं मानते। आज कागज पर पानी और स्याही से नहीं, खून से भी लिखकर देते हैं और एक मास के बाद कुमार से युगल बनकर आते हैं। तो ऐसी गैरेन्टी नहीं चाहिये। लेकिन डायमण्ड जुबली में बापदादा ने देखा कि कुमार बहुत अच्छा सबसे नम्बरवन पुरुषार्थ कर रहे हैं तो कुमार समय को भी समीप ला सकते हैं। समय समीप आ जायेगा और आपकी सेवा विशाल होती जायेगी। लेकिन बापदादा रोज़ वतन में चेक करते हैं ऐसे ही नहीं कोई यहाँ कहेगा तो मान लेंगे। प्रैक्टिकल बाप चेक करेगा। फिर देखो कुमार फर्स्ट नम्बर ले सकते हैं। समझा? सन्देश देने में तो कुमार वैसे ही होशियार हो और देखो जिस सेन्टर पर कुमार नहीं आते हैं तो वहाँ सेवा की वृद्धि नहीं होती है। ऐसे हैं ना टीचर्स? टीचर्स कहती हैं सेवा के लिए किसको भेंजे! तो कुमार अभी भी सेवा कर रहे हैं लेकिन सिर्फ ये पक्का निश्चय कर लो कि हम हैं ही योगी आत्मायें। सदा योगी हैं। शरीर के तरफ स्वप्न मात्र भी संकल्प नहीं जाये। तो कुमार कमाल करना, बापदादा आपका चेक करके ग्रुप बनायेगा।

(09-01-1996)

अभी कुमार क्या करेंगे? (कुमार 5 हजार आये हैं) बहुत अच्छा। **कुमार कोई नई कमाल करके दिखाओ, ऐसी कमाल दिखाओ जो असम्भव**

उनका विशेष सभी का मिल करके फंक्शन रखेंगे और उसमें गवर्नमेन्ट के डिपार्टमेन्ट को दिखायेंगे कि ये युवा क्या करते हैं और वो युवा क्या करते हैं। तो युवा तैयार हैं? नम्बर लेना है? हाँ या ना? कितना टाइम चाहिये? डायमण्ड जुबली के 6 मास चाहिए, 4 मास चाहिए, कितना टाइम चाहिए? महाराष्ट्र के युवा क्या करेंगे? जवाब दो। मुश्किल लगता है क्या? तो जो हाँ कहते हैं, करेंगे, वो हाथ उठाओ। अच्छा। यू.पी. वाले करेंगे? हाँ बोलो या ना बोलो। कितने टाइम में करेंगे? डायमण्ड जुबली के 6 मास चाहिए? 6 मास के बाद ऐसे नहीं कहना, तो कोई मानता नहीं, दुबारा मार्क्स दे दो। चाहे कोई ज्यादा एक्जैम्पुल तैयार करे, चाहे कम करे लेकिन ना शब्द नहीं आना चाहिए। तो इसमें पहला नम्बर कौन लेगा? टीचर्स समझती हैं हो जायेगा? होना ही है। गवर्नमेन्ट को प्रैक्टिकल मिसाल चाहिए। आप लोग कहते हो ना कि हम सोशल वर्क बहुत करते हैं। तो वो मिसाल चाहती है। तो ऐसा ग्रुप तैयार करना और टीचर्स का काम है कराना। अच्छा।

(13-12-1995)

कुमारों से - कुमारों को भी चांस मिलेगा। जब सेवा बहुत बढ़ेगी, इतनी सब आत्माओं को सन्देश देना है तो क्या थोड़ी सी आत्मायें कर सकेंगी! तो आप लोगों को चांस मिलेगा लेकिन आप लोग ऐसे पहले से तैयार हो जाओ। जो टीचर्स को सप्ताह कोर्स कराना पड़ता है और आप एक सेकण्ड में अपनी दृष्टि-वृत्ति द्वारा परिचय दे सको। ऐसी सेवा कुमारों को करनी है। अभी देखो बापदादा स्पष्ट सुनाता है कि कुमारों को सेन्टर पर क्यों नहीं रखते हैं? कारण क्या है? डर लगता है दादियों को। और कभी-कभी प्रैक्टिकल में नुकसान होते भी हैं। ऐसे ही डर नहीं लगता, होता भी है। अगर कुमार पक्के योगी बन जायें, ज़रा भी सिवाए आत्मा के और कोई बात में जायें नहीं तो कुमारों को बहुत सेवाकेन्द्र मिल सकते हैं। अभी नुकसान का डर है। क्योंकि रावण की चीज़ अन्दर रखी है ना, इसलिए डर लगता है। लेकिन जो कुमारियों ने इतने वर्ष में सेवा की, कुमार फास्ट सेवा करेंगे। चांस

वैराग्य नहीं हुआ है। कहाँ भी जाना होता है तो जिन चीजों को छोड़ना होता है उनसे पीठ करनी होती है। तो अभी पीठ करना नहीं आता है। एक तो पीठ नहीं करते हो, दूसरा जो साधन मिलता है उसकी पीठ नहीं करते हो। सीता और रावण का खिलौना देखा है ना। रावण के तरफ सीता क्या करती है? पीठ करती है ना। अगर पीठ कर दिया तो सहज ही उनके आकर्षण से बच जायेंगे। लेकिन पीठ नहीं करते हो। जैसे श्मशान में जब नजदीक पहुँचते हैं तो पैर इस तरफ और मुँह उस तरफ करते हैं ना। तो यह भी पीठ करना नहीं आता है। फिर मुँह उस तरफ कर लेते हैं, इसलिए आकर्षण में कहाँ फँस जाते हैं। तो दोनों ही प्रकार की पीठ करने नहीं आता है। माया बहुत आकर्षण करने के रूप रचती है। इसलिए न चाहते हुए भी पीठ करने के बजाय आकर्षण में आ जाते हैं। उसी आकर्षण में पुरुषार्थ को भूल, आगे बढ़ने को भूल रूक भी जाते हैं, तो क्या होगा? मंजिल पर पहुँचने में देरी हो जायेगी। कुमारों की भट्ठी है ना। तो कुमारों को यह खिलौना सामने रखना चाहिए। माया की तरफ मुँह कर लेते हैं। माया की तरफ मुँह करने से जो परीक्षायें माया की तरफ से आती हैं, उनका सामना नहीं कर सकते हैं। अगर उस तरफ मुँह न करो तो माया की परिस्थितियों को मुँह दे सको अर्थात् सामना कर सको। समझा?

कुमारों का सदा प्योर और सतोगुणी रहने का यादगार कौन-सा है, मालूम है? सनंत कुमार। उन्हों की विशेषता क्या दिखाते हैं? उन्हों को सदैव छोटा कुमार रूप ही दिखाते हैं। कहते हैं -उन्हों की सदैव 5 वर्ष की आयु रहती है। यह प्युरिटी का गायन है। जैसे 5 वर्ष का छोटा वच्चा बिल्कुल प्योर रहता है ना। सम्बन्धों के आकर्षण से दूर रहता है। भल कितना भी लौकिक परिवार हो लेकिन स्थिति ऐसी हो जैसे छोटा वच्चा प्योर होता है। वैसे ही प्योरिटी का यह यादगार है। कुमार अर्थात् पवित्र अवस्था। उसमें भी सिर्फ एक नहीं, संगठन दिखलाया है। दृष्टान्त में तो थोड़े ही दिखाये जाते हैं। तो यह आप लोगों का संगठन प्योरोटी का यादगार है।

ऐसी प्योरिटी होती है जिसमें अपवित्रता का संकल्प वा अनुभव ही नहीं हो। ऐसी स्थिति यादगार समान बनाकर जानी है। भट्ठी में इसलिए आये हो ना। बिल्कुल इस दुनिया की बातों से, सम्बन्ध से न्यारे बनेंगे तब दैवी परिवार के, बापदादा के और सारी दुनिया के प्यारे बनेंगे। वैसे भी कोई सम्बन्धियों से जब न्यारे हो जाते हैं, लौकिक रीति भी अलग हो जाते हैं तो न्यारे होने के बाद ज्यादा प्यारे होते हैं। और अगर उन्हों के साथ रहते हैं वा उन्हों के सम्बन्ध के लगाव में होते हैं तो इतने प्यारे नहीं होते हैं। वह हुआ लौकिक। लेकिन यहाँ न्यारा बनना है - ज्ञान सहित। सिर्फ बाहर से न्यारा नहीं बनना है। मन का लगाव न हो। जितना-जितना न्यारा बनेंगे उतना-उतना प्यारा अवश्य बनेंगे। अब अपनी देह से भी न्यारे हो जाते हो तो वह न्यारेपन की अवस्था अपने आप को भी प्यारी लगती है - ऐसा अनुभव कब किया है? जब अपनी न्यारेपन की अवस्था अपने को भी प्यारी लगती है। तो लगाव से न्यारी अवस्था प्यारी नहीं लगेगी? जिस दिन देह में लगाव होता है, न्यारापन नहीं होता है तो अपने आप को भी प्यारे नहीं लगते हो, परेशान होते हो। ऐसे ही बाहर के लगाव से अगर न्यारे नहीं होते हैं तो प्यारे बनने के बजाय परेशान होते हैं। यह अनुभव तो सभी को होगा। सिर्फ ऐसे अनुभव सदाकाल नहीं बना सकते हो। ऐसा कोई है जिसने इस न्यारे और प्यारेपन का अनुभव नहीं किया हो? अपने को योगी कहलाते हो। जब अपने को सहज राजयोगी कहलाते हो तो यह अनुभव नहीं किया हो, यह हो नहीं सकता। नहीं तो यह टाइटिल अपने को दे नहीं सकते हो। योगी अर्थात् यह योग्यता है तब योगी हैं। नहीं तो फिर अपने परिचय में यह शब्द नहीं कह सकते हो कि हम सहज राजयोग की पढ़ाई के स्टूडेन्ट हैं। स्टूडेण्ट तो हो ना। स्टूडेण्ड को पढ़ाई का अनुभव न हो, यह हो नहीं सकता। हाँ, यह जरूर है कि इस अनुभव को कहाँ तक सदाकाल बना सकते हो वा अल्पकाल का अनुभव करते हो। यह फर्क हो सकता है। लेकिन जो पुराने स्टुडेन्टस् हैं उन्हों का अनुभव अल्पकाल नहीं होना चाहिए। अगर अब तक अल्पकाल का ही अनुभव है तो फिर क्या होगा? संगमयुग का वर्सा और भविष्य का वर्सा-दोनों ही अल्प समय प्राप्त

दूसरा न कोई, थोड़ा-थोड़ा भी नहीं। क्या करूँ.. थोड़ा सा तो चाहिए...ऐसा नहीं। ये ऐसी माया है जो देखा है ना, गज और ग्राह की कहानी सुनी है ना, वो क्या करता है? पहले थोड़ा अन्दर करेगा, फिर पूरा अन्दर कर लेता है। पता नहीं पड़ेगा। तो डायमण्ड जुबली में यह डर तो निकाल लेना। ऐसा एक भी पत्र नहीं आना चाहिए। डायमण्ड जुबली अर्थात् कुछ कमी नहीं है। तो बापदादा देखेंगे कि हाथ तो सभी ने उठाया लेकिन राजा कितने बने वो भी लिस्ट आ जायेगी ना! अच्छा।

(25-11-1995)

युवाओं से:- सब तरफ वाले युवा हाथ उठाओ। डायमण्ड जुबली में युवा क्या करेंगे? युवा में डबल शक्ति है। शारीरिक शक्ति भी है तो आत्मिक शक्ति भी है। तो डबल शक्ति से डायमण्ड जुबली में क्या विशेषता दिखायेंगे? रैली निकालना, फंक्शन करना ये तो करते ही रहते हो। कितने बारी किया है, बहुत बार किया है। अभी क्या करेंगे? हर एक युवा जो आजकल के अज्ञानी युवा एसोसिएशन हैं या ग्रुप हैं, जो और भी देश में नुकसान करते हैं, गवर्नमेन्ट को भी तंग करते हैं, ऐसे कोई एसोसिएशन तैयार करना, उनमें से जो ऐसे नुकसान करने वाले हैं उन्हों को परिवर्तन करके दिखाओ। प्रैक्टिकल में हर एक युवा अपने-अपने सेवास्थान पर ऐसा परिवर्तन किया हुआ ग्रुप तैयार करो। जो भी ज़ोन आये हैं हरेक ज़ोन में कहाँ 100 हैं, कहाँ 50 सेवाकेन्द्र हैं, गीता पाठशालायें तो बहुत हैं लेकिन हर एक ज़ोन अपने एरिया में जहाँ-जहाँ सेवाकेन्द्र है, वहाँ से ऐसे परिवर्तन किया हुआ सेम्पुल तैयार करो। आप लोगों को मालूम है, जब डाकुओं का हुआ था तो एक डाकू परिवर्तित हुआ, एक एक्जैम्पुल निकला और देखा गया कि एक डाकू कहाँ भी अपना अनुभव सुनाता था तो सभी को बहुत रुचि होती थी। तो आप लोग फिर ऐसे एसोसिएशन्स जहाँ संगठन होता है, वहाँ से जितने तैयार कर सको उतने निकालो। एक्जैम्पुल तैयार करो। फिर सभी ज़ोन के जो निकलेंगे

और आपके साथी जो हैं वो रिपोर्ट करें कि नहीं, ये तो ऐसे ही कहता है। ऐसे नहीं। पवित्रता के लिए बिगड़ते हैं वो बात अलग है लेकिन दिव्यगुणों की धारणा में आपका प्रभाव घर वालों के ऊपर पड़ना चाहिए। समझा? तो जो समझते हैं हम डायमण्ड जुबली तक तैयार हो जायेंगे वो हाथ उठाओ। अभी थोड़े कम हो गये। अच्छा, टीचर्स रिपोर्ट देना इस डायमण्ड जुबली के बीच में, एण्ड में नहीं। गवर्नमेन्ट को यूथ दिखायें। अभी तो 8 मास हैं। तो आठ मास ठीक है।

(16-11-95)

कुमारों से:- कुमार दादा तो नहीं बनेंगे, दादा तो कोई नहीं कहेगा लेकिन राजा बन सकते हैं। डायमण्ड जुबली में कुमार कम से कम आठ मोतियों का एक-एक कंगन वा माला तैयार करो। अष्ट का गायन है ना। तो आपकी प्रजा बन जायेगी और प्रजा बनाने से आप राजा बन जायेंगे। कुमारियों को दादी-दीदियाँ बनने दो। आप और ही राजा बन जाओ। कुमार तो बहुत हैं, अगर एक-एक आठ भी लावे तो प्रजा बन जायेगी। और प्रजा तैयार हो गई तो आपको राजतिलक जरूर मिलेगा। क्योंकि बहुत करके अभी वारिस क्वालिटी कम निकलती है। अगर कुमारों ने एक भी वारिस क्वालिटी निकाल दी तो महाराजा बन जायेंगे। कुमार तैयार हैं? समझते हो वारिस किसको कहते हैं? साधारण तो आते ही रहते हैं ना लेकिन वारिस जो होगा उस एक को देख करके और अनेक भी आयेंगे। उसको कहते हैं वारिस क्वालिटी, छोटे-छोटे माइक। तो कुमार राजा बनेंगे ना! (हाँ जी) अच्छा, यहाँ मधुबन में हाँ जी है या पंजाब और बाम्बे या जहाँ भी जायेंगे वहाँ भी हाँ जी होंगे?

कुमारों को देख करके बापदादा खुश होते हैं। सिर्फ कुमार, कुमारियों से बाप को एक बात का डर भी लगता है। खुशी भी होती है तो डर भी लगता है। समझदार हो ना कुमार, बोलने की आवश्यकता नहीं। बस इसमें सदा एक बाप

होगा। समझा। जो पूरा समय वर्सा प्राप्त करने का है वह नहीं कर सकेंगे। अल्प समय करेंगे। तो इसी में ही सन्तुष्ट हो क्या?

आज कुमारों की भट्ठी का आरम्भ है ना। भट्ठी का आरम्भ अर्थात् पकने का आरम्भ। कोई स्वाहा होगा, कोई भट्ठी में पकेगा, कोई प्योरिटी का संकल्प दृढ़ करेगा। यहाँ तो करने लिए ही आये हो ना। अब देखना है कि जो कहा वह किया? यह जो ग्रुप है वह पूरा माया से इनोसेन्ट और ज्ञान से सेन्ट बनकर जाना। जैसे सतयुगी आत्मायें जब यहाँ आती हैं तो विकारों की बातों की नालेज से इनोसेन्ट होती हैं। देखा है ना। अपना याद आता है कि जब हम आत्मायें सतयुग में थीं तो क्या थीं। माया की नालेज से इनोसेन्ट थीं-याद आता है? अपने वह संस्कार स्मृति में आते हैं वा सुना हुआ है इसलिए समझते हो? जैसे अपने इस जन्म में बचपन की बातें स्पष्ट स्मृति में आती हैं, वैसे ही जो कल के आप के संस्कार थे वह कल के संस्कार आज के जीवन में संस्कारों के समान स्पष्ट स्मृति में आते हैं वा स्मृति में लाना पड़ता है। जो समझते हैं कि हमारे सतयुगी संस्कार ऐसे ही मुझे स्पष्ट स्मृति में आते हैं जैसे इस जीवन के बचपन के संस्कार स्पष्ट स्मृति में आते हैं, वह हाथ उठाओ। यह स्पष्ट स्मृति में आना चाहिए। साकार रूप में (ब्रह्मा बाबा में) स्पष्ट स्मृति में थे ना। यह स्मृति तब होगी जब अपने आत्मिक-स्वरूप की स्मृति स्पष्ट और सदा काल रहेगी। तो फिर यह स्मृति भी स्पष्ट और सदाकाल रहेगी। अभी आत्मिक-स्थिति की स्मृति कब-कब देह के पर्दे के अन्दर छिप जाती है। इसलिए यह स्मृति भी पर्दे के अन्दर दिखाई देती है, स्पष्ट नहीं दिखाई देती है। आत्मिक-स्मृति स्पष्ट और बहुत समय रहने से अपना भविष्य वर्सा अथवा अपने भविष्य के संस्कार स्वरूप में सामने आयेंगे। आपने चित्र में क्या दिखाया है? एक तरफ विकार भागते, दूसरी तरफ बुद्धि की स्मृति बाप और भविष्य प्राप्ति की तरफ। यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र दिखाया है ना। यह चित्र किसके लिए बनाया है? दूसरों के लिए या अपनी स्थिति के लिए? तो भविष्य संस्कारों को स्पष्ट स्मृति में लाने के लिए आत्मिक स्वरूप की स्मृति सदा काल और स्पष्ट रहे। जैसे यह देह स्पष्ट दिखाई देती

है वैसे अपनी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे अर्थात् अनुभव में आये। तो अब कुमारों को क्या करना है? **सेन्ट भी बनना है, इनोसेन्ट भी बनना है।** सहज पढ़ाई है ना। दो शब्द में आपका पूरा कोर्स हो जायेगा। यह छाप लगाकर जाना। कमज़ोरी, परेशानी आदि - इन बातों से बिल्कुल इनोसेन्ट, कमजोरी शब्द भी समाप्त होना है। इस ग्रुप का नाम कौन-सा है? सिम्पलिसिटी और प्योरिटी में रहने वाला ग्रुप। **जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं लेकिन सभी बातों की। निरंहकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पुल। निर्लोभी अर्थात् सिम्पुल। यह सिम्पलिसिटी प्युरिटी का साधन है।** अच्छा। सलोगन क्या याद रखेंगे? कुमार जो चाहे सो कर सकते हैं। **जो भी बातें कहो वह पहले करेंगे, दिखायेंगे, फिर कहेंगे । पहले कहेंगे नहीं। पहले करेंगे, दिखायेंगे, फिर कहेंगे। यह सलोगन याद रखना।**

(11-03-1971)

त्याग, तपस्या और सेवा की परिभाषा

आज भट्ठी का आरम्भ करने के लिए बुलाया है। इस भट्ठी में सर्व गुणों की धारणा मूर्त्त बनने के लिए वा सम्पूर्ण ज्ञानमूर्त्त बनने के लिए आये हो। इसके लिए मुख्य तीन बातें ध्यान में रखनी है। वह कौन-सी? जिन तीन बातों से सम्पूर्ण ज्ञानमूर्त्त और सर्व गुणमूर्त्त बनकर ही जाओ। सारी नालेज का सार उन तीन शब्दों में समाया हुआ है। वह कौन से शब्द हैं? एक त्याग, दूसरा तपस्या और तीसरा है सेवा। इन तीनों शब्दों की धारणामूर्त्त बनना अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञानमूर्त्त और सर्व गुणों की मूर्त्त बनना। त्याग किसको कहा जाता है? निरन्तर त्यागवृत्ति और तपस्यामूर्त्त बनकर हर सेकेण्ड हर संकल्प द्वारा हर आत्मा की सेवा करना है। यह सीखने के लिए भट्ठी में आये हो। वैसे तो त्याग और तपस्या दोनों को जानते हो फिर अभी क्या करने आये हो?(कर्मो में लाने के लिए) भल जानते हो लेकिन अभी जो

जहाँ कुमार नहीं होंगे वहाँ सेवा के प्लैन कम बनेंगे। तो ऐसे निर्विघ्न सेवाधारी कुमार। खिटखिट करने वाले नहीं बनना। निर्विघ्न सेवाधारी कुमार। कुमार ही सेवा की शोभा हैं इसीलिये बापदादा को कुमार प्यारे लगते हैं। अच्छा है। इस वर्ष तो सभी को निर्विघ्न होना ही है, आपके पास कोई विघ्नों के पत्र नहीं आयेंगे—ये हो गया, ये हो गया......। कुमारों को माया भी बहुत प्यार करती है। माया भी समझती है मेरा बनें, इसीलिये डबल अटेन्शन। माया के नहीं बनना।

(31-03-1995)

कुमार:- कुमार भी पवित्र देव हैं। ऐसे नहीं, ये तो पवित्र देवियाँ हो गई! कुमार भी पवित्र देव हैं। किसी भी तरफ, अपवित्र दृष्टि की बात तो छोड़ो लेकिन स्वप्न मात्र भी अपवित्र वृत्ति नहीं जा सकती। कुमार हाथ उठाओ। कुमार भी बहुत हैं। तो कुमार कौन हो? पवित्र देव। देव आत्मा हूँ। मैं फलाना हूँ, नहीं। देव आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ।

(06-04-1995)

कुमार:- कुमार हाथ उठाओ। कुमार तो बहुत हैं। तो कुमार क्या विशेषता दिखायेंगे? कुमार ऐसे अपने को तैयार करो - चाहे अपने-अपने स्थान पर हो लेकिन जहाँ भी हो वहाँ अपने को ऐसा तैयार करो जो आपका 400-500 का ग्रुप बना करके गवर्नमेन्ट के इन बड़े लोगों से मिलायें कि देखो कि ये इतने यूथ विश्व की सेवा के लिए या भारत की सेवा के लिए डिस्ट्रक्शन का काम न कर, कन्स्ट्रक्शन का काम कर रहे हैं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ। तो कितने टाइम में अपने को तैयार करेंगे? क्योंकि गवर्नमेन्ट यूथ को आगे रखना चाहती है लेकिन उनको ऐसे यूथ मिलते नहीं हैं और बाप के पास तो हैं ना! तो ऑलमाइटी गवर्नमेन्ट इस हलचल वाली गवर्नमेन्ट के आगे एक प्रैक्टिकल मिसाल दिखा सकती है। लेकिन कच्चे नहीं होने चाहिए। **ऐसा नहीं, आप कहो हम तो बहुत अच्छे चलते हैं**

सबसे ज्यादा खुशी किसको रहती है? सदा समान रहती है कि कभी कम, कभी ज्यादा रहती है? कुमारों को माया नहीं आती है? चाहे कुमार हैं, चाहे अधर कुमार हैं लेकिन अभी ब्रह्माकुमार हैं। अधर कुमार भी कुमार हैं, अधर कुमारी भी ब्रह्माकुमारी है। कुमारी जीवन या कुमार जीवन बहुत श्रेष्ठ जीवन है लेकिन ब्रह्माकुमार हैं तो। तो जो सदा खुश रहते हैं वो ब्रह्माकुमार हैं। दुनिया वाले तो सोचते रह जाते हैं और आप सदा सम्पन्न बन गये। वो सोचते रहते हैं पता नहीं क्या होगा, कब होगा और आप क्या कहते हो? जो होना था वो हो रहा है, जो पाना था वो पा लिया है, चैलेन्ज करते हो ना।

पाण्डवों को अपना नशा है, अपनी खुशी है। पाण्डव सदा बाप के साथी दिखाते हैं। पाण्डवों ने कभी साथ नहीं छोड़ा, अन्त तक साथ निभाया। वही पाण्डव हो ना। पाण्डव दिल से गाते हैं कि हमारा साथी सदा भगवान् है। सदा साथ रहने वाले हैं। सदा साथ निभाने वाले हैं। ऐसे पाण्डव हो ना? सदा साथ रहने वाली वरदानी आत्मायें हैं। जब वरदाता साथ है तो वरदान भी साथ है ना। वरदानों से सदा झोली भरी हुई है। वरदान भरते-भरते इतने वरदानी बनते हो जो अनेक जन्म अनेक आत्माओं को वरदानी स्वरूप में दिखाई देते हो। आपके जड़ चित्रों से वरदान लेने आते हैं ना। ऐसे वरदानी आत्मायें बन गये। कभी वरदानों से अलग हो ही नहीं सकते। सदा भरपूर हैं। अच्छा! (पार्टियों के साथ)

(18-11-93)

कुमारों से:- कुमार क्या करेंगे? कुमार सदा ही विश्व में कोई न कोई परिवर्तन के लिये एवररेडी रहते हैं। कोई भी क्रान्ति के निमित्त कुमार बनते हैं। तो ये है शान्ति की क्रान्ति। तो सभी कुमार सदा यह याद रखो कि हमारा हर कर्म परिवर्तन करने के निमित्त है। तो कुमार अर्थात् विश्व परिवर्तक। ऐसे है ना? सिर्फ तालियाँ तो नहीं बजा रहे हो। अच्छे-अच्छे कुमार हैं। देखो, बापदादा सदा कहते हैं कि सेवाकेन्द्र सेवा में आगे नम्बर पर जायें, उसके लिए कुमार भी जरूर चाहिये।

जानना है, उस प्रमाण चलना, दोनों को समान बनाने के लिए आये हो। अभी जानने और चलने में अन्तर है। उस अन्तर को समाप्त करने के लिए भट्ठी में आये हो। ऐसे तपस्वीमूर्त्त वा त्यागमूर्त्त बनना है जो आप के त्याग और तपस्या की शक्ति के आकर्षण दूर से प्रत्यक्ष दिखाई दें। जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती है वा अनुभव होती है। वैसे आप की तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही आकर्षण करे। हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे। तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे। सिर्फ सेवाधारी बनकर सेवा करने से जो सफ़लता चाहते हो, वह नहीं हो पाती है। लेकिन सेवाधारी बनने के साथ-साथ त्याग और तपस्यामूर्त्त भी हो तब सेवा का प्रत्यक्ष फल दिखाई देगा। तो सेवाधारी तो बहुत अच्छे हो लेकिन सेवा करते समय त्याग और तपस्या को भूल नहीं जाना है। तीनों का साथ होने से मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होती है। समय कम सफलता अधिक। तो इन तीनों को साथ जोड़ना है। यह अच्छी तरह से अभ्यास करके जाना है। जितना नालेजफुल उतना ही पावरफुल और सक्सेसफुल होना चाहिए। नालेजफुल की निशानी यह दिखाई देगी कि उनका एक एक शब्द पावरफुल होगा और हर कर्म सक्सेसफुल होगा। अगर यह दोनों रिज़ल्ट कम दिखाई देती हैं तो समझना चाहिए कि नालेजफुल बनना है। जबकि आजकल आत्माओं द्वारा जो अधुरी नालेज प्राप्त करते हैं उन्हों को भी अल्पकाल के लिए सफलता की प्राप्ति का अनुभव होता है। तो सम्पूर्ण श्रेष्ठ नालेज की प्राप्ति प्रत्यक्ष प्राप्त होने का अनुभव भी अभी करना है। ऐसे नहीं समझना कि इस नालेज की प्राप्ति भविष्य में होनी है। नहीं। वर्तमान समय में नालेज की प्राप्ति-अपने पुरुषार्थ की सफलता और सेवा में सफलता का अनुभव होता है। सफलता के आधार पर अपनी नालेज को जान सकते हो। तो भट्ठी में आये हो चेक करने और कराने के लिए कि कहाँ तक नालेजफुल बने हैं? **कोई भी पुराने संकल्प वा संस्कार दिखाई न दें। इतना त्याग सीखना है। मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे वा स्मृति में न आये। ऐसे**

निरन्तर तपस्वी बनना है। जिस भी संस्कार वा स्वभाव वाले चाहे रजोगुणी, चाहे तमोगुणी आत्मा हो। संस्कार वा स्वभाव के वश हो, आप के पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो। ऐसे सर्व आत्माओं का सेवाधारी अर्थात् कल्याणकारी बनना है। तो अब समझा, त्याग क्या सीखना है? तपस्या क्या सीखनी है और सेवा भी कहाँ तक करनी है? इनकी महीनता का अनुभव करना है। हर पुरुषार्थ में फलीभूत वह हो सकता है जिसमें ज्ञान और धारणा के फल लगे हुए हो। जैसे अभी सभी के सामने ब्रह्माकुमार प्रसिद्ध दिखाई देते हैं। दूर से ही जान जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार है। अब ब्रह्माकुमार के साथ-साथ तपस्वी कुमार दूर से ही दिखाई पड़ो, ऐसा बनकर जाना है। वह तब होगा जब मनन और मगन - दोनों का अनुभव करेंगे।

जैसे स्थूल नशे में रहने वाले के नैन-चैन, चलन दिखाई देते हैं कि यह नशे में है। ऐसे ही आपके चलन और चेहरे से ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई पड़े। चेहरा ही आपका परिचय दे। जैसे कोई के पास मिलने जाते हैं तो परिचय के लिए तो अपना कार्ड देते हैं ना। इसी रीति से आप का चेहरा परिचय कार्ड का कर्त्तव्य करे। समझा?

अभी गुप्त धारणा का रूप नहीं रखना है। कई ऐसे समझते हैं कि ज्ञान गुप्त है, बाप गुप्त है तो धारणा भी गुप्त ही है। ज्ञान गुप्त है, बाप गुप्त है लेकिन उन द्वारा जो धारणाओं की प्राप्ति होती है वह गुप्त नहीं हो सकती है। तो धारणाओं को वा प्राप्ति को प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ तब प्रत्यक्षता होगी। विशेष करके कुमारों में एक संस्कार होता है जो पुरुषार्थ में विघ्न रूप होता है। वह कौन-सा? कुमारों में यह संस्कार होता है जो कामनाओं को पूर्ण करने के लिए संस्कारों को रख देते हैं। जैसे जेब-खर्च रखा जाता है ना। जैसे राजाओं की राजाई तो छूट गयी लेकिन पिरवी पर्श को नहीं छोड़ते। इसी रीति संस्कारों को कितना भी खत्म करते हैं लेकिन जेब-खर्च माफिक कुछ-न-कुछ किनारे रखते ज़रूर हैं। यह है मुख्य

आप सभी कौन हो? निर्विघ्न हो ना। नये कुमार भी कमाल करके दिखायेंगे। आखिर तो विश्व को अपने आगे, बाप के आगे झुकाना तो है ना! तो यह कुमारों की कमाल विश्व को झुकायेगी। विश्व आपके गुण-गायन करेगा कि कमाल है कुमारों की! कुमारी मैजारिटी फ़िर भी सेवा में कम्पनी में रहती हैं। लेकिन कुमारों को थोड़ा-सा कम्पनी का संकल्प आता है तो पाण्डव भवन बना कर सफ़ल रहें, ऐसा कोई करके दिखाओ। लेकिन आज पाण्डव भवन बनाओ और पाण्डव एक ईस्ट में चला जाए, एक वेस्ट में चला जाए - ऐसा पाण्डव भवन नहीं बनाना।

बापदादा को कुमारों के ऊपर विशेष नाज़ है कि अकेले रहते भी पुरुषार्थ में चल रहे हैं। कुमार आपस में दो-तीन साथी बनकर क्यों नहीं चलते! साथी सिर्फ फ़ीमेल ही नहीं चाहिए, दो कुमार भी रह सकते हैं। लेकिन एक-दो के निर्विघ्न साथी होकर रहें। अभी वह जलवा नहीं दिखाया है। समय पर एक-दो के सहयोगी बनें तो क्या नहीं हो सकता है? और बातें आ जाती हैं, इसलिए बापदादा पाण्डव भवन बनाने के लिए मना कर देता है। लेकिन सैम्पल कोई करके दिखाये। ऐसा नहीं पाण्डव भवन बना कर फ़िर जो निमित्त दादी-दीदियां हैं, उनका टाइम लेते रहो। निर्विघ्न हों, एक-दूसरे से योग्य कुमार हों फ़िर देखो कितना अच्छा नाम होता है। सुना कुमारों ने? योग्य कुमार बनो, निर्विघ्न कुमार बनो। सेवा के क्षेत्र पर खुद समस्या नहीं बनो लेकिन समस्या को मिटाने वाले बनो, फ़िर देखो कुमारों की बहुत वैल्यू होगी। क्योंकि कुमारों के बिना भी सेवा नहीं हो सकती है। तो कुमार क्या करेंगे? सब बोलो - निर्विघ्न कुमार बनकर दिखायेंगे। (कुमारों ने बापदादा के सामने खड़े होकर वायदा किया) अभी सभी का फ़ोटो निकल गया है। ऐसे नहीं समझना कि हम उठे तो किसी ने देखा नहीं। फ़ोटो निकल गया। अच्छा है -

हिम्मते बच्चे मददे बाप और सारा परिवार आपके साथ है।

(27-11-1989)

स्थिति रहने वाले। तो एकरस स्थिति रहती है या दूसरे रसों में बुद्धि जाती है? सब रस एक बाप द्वारा अनुभव करने वाले - इसको कहते हैं एकरस अर्थात् अचल-अडोल। ऐसा एकरस स्थिति वाला बच्चा ही बाप को प्यारा लगता है। तो यही सदा याद रखना कि हम अचल-अडोल आत्मायें एकरस स्थिति में रहने वाली हैं।

(30-01-1988)

कुमार भी बहुत आये हैं। कुमार दौड़ बहुत लगाते हैं। सेवा में भी अच्छे उमंग से दौड़ लगाते रहते हैं। लेकिन **कुमारों की विशेषता और महानता यही है कि आदि से अब तक निर्विघ्न कुमार हो। अगर कुमार निर्विघ्न कुमार हैं, तो ऐसे कुमार बहुत महान गाये जाते हैं।** क्योंकि दुनिया वाले भी कुमारियों के बजाय कुमारों के लिए समझते हैं कि कुमार योग्य बन जाएँ - यह मुश्किल है। लेकिन कुमार ही विश्व को चैलेन्ज करें कि आप तो असम्भव कहते हो लेकिन हम निर्विघ्न कुमार हैं। ऐसे विश्व को सैम्पल दिखाने वाले कुमार महान कुमार हैं। बापदादा ऐसे कुमारों को सदा ही दिल से मुबारक देते हैं। समझा! अभी-अभी बहुत अच्छे हैं, अभी-अभी कोई विघ्न आया तो नीचे-ऊपर हो गये - ऐसे नहीं। **कुमार अर्थात् न तो समस्या बनना है और न समस्या में हार खानी है।** कुमार, कुमारियों से भी नम्बर आगे जा सकते हैं लेकिन निर्विघ्न कुमार हों। क्योंकि कुमारों को बहुत करके यही विघ्न आता है कि कोई साथी नहीं है, कोई साथी चाहिए, कम्पैनियन चाहिए। तो किसी-न-किसी रीति से अपनी कम्पनी बना लेते हैं। कोई-कोई कुमार तो कम्पैनियन भी बना लेते हैं और कोई कम्पनी में आते हैं - बातचीत करना, बैठना, फ़िर कम्पैनियन बनाने का भी संकल्प आता है। लेकिन ऐसे भी कुमार हैं जो बाप के सिवाए न कम्पनी बनाने वाले हैं, न कम्पैनियन बनाने वाले हैं। **सदा बाप की कम्पनी में रहने वाले कुमार सदा सुखी रहते हैं।** तो आप लोग कौन-से कुमार हो? थोड़ी-थोड़ी कम्पनी चाहिए? सारा परिवार कम्पनी है? फ़िर तो ठीक लेकिन दो-तीन या एक कोई कम्पनी चाहिए, वह रांग है। तो

संस्कार। यहाँ भट्ठी में जानते भी हैं और चलने की हिम्मत भी धारण करते हैं लेकिन फिर भी माया पिरवी पर्श की रीति से कहाँ-न-कहाँ किनारे में रह जाती है। समझा? तो इस भट्ठी में सभी त्याग करके जाना। यह नहीं सोचना कि सम्पूर्ण तो अभी अन्त में बनना है तो थोड़ा बहुत रहेगा ही। लेकिन नहीं। त्याग अर्थात् त्याग। जेब-खर्च माफिक अपने अन्दर थोड़ा बहुत भी संस्कार रहने नहीं देना है। समझा। जरा भी संस्कार अगर रहा होगा तो वह थोड़ा संस्कार भी धोखा दिला देता है। इसलिए बिल्कुल जो पुरानी जायदाद है, वह भस्म कर के जाना। छिपाकर नहीं रखना। समझा? अच्छा।

यह कुमार ग्रुप है। अभी बनना है तपस्वी कुमार ग्रुप। इस ग्रुप की यह विशेषता सभी को दिखाई दे कि यह तपस्वी कुमार, तपस्वी-भूमि से आये हैं। समझा? हरेक लाइट के ताजधारी दिखाई दें। ताजधारी तो भविष्य में बनेंगे। लेकिन इस भट्ठी से लाइट के ताजधारी बनकर जाना है। सर्विस की ज़िम्मेवारी का ताज वह इस ताज के साथ स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। इसलिए मुख्य ध्यान इस लाईट के ताज धारण करने का रखना है। समझा? जैसे तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं, वैसे अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो, तब सिंहासन मिलेगा। ऐसा प्रयत्न करो जो देखते ही सब के मुख से एक ही आवाज़ निकले कि यह कुमार तो तपस्वी कुमार बनकर आये हैं। हर कर्मेन्द्रिय से देह अभिमान का त्याग और आत्मअभिमानी की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे। क्योंकि ब्रह्मा की स्थापना का कार्य तो चल ही रहा है। ईश्वरीय पालना का कर्त्तव्य भी चल ही रहा है। अब लाइट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मो और हर आत्मा के तमोगुण और प्रकृत्ति के तमोगुणी संस्कारों को भस्म करने का कर्त्तव्य चलना है। अब समझा कि कौन-से कर्त्तव्य का अभी समय है? तपस्या द्वारा तमोगुण को भस्म करने का। जैसे अपने चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एक रस स्थिति के आसन पर स्थित हो तपस्वी रूप अपना प्रत्यक्ष दिखाओ। समझा क्या सीखना और क्या और कैसे बनना है।

इसके लिए यह कुमार ग्रुप मुख्य सलोगन क्या सामने रखेंगे जिससे सफलता हो जाये? सच्चाई और सफाई से सृष्टि से विकारों का सफाया करेंगे। जब सृष्टि से करेंगे तो स्वयं से तो पहले से ही हो जायेगा तब तो सृष्टि से करेंगे ना। तो यह सलोगन याद रखने से तपस्वीमूर्त्त बनने से सफलतामूर्त्त बनेंगे। समझा?

(19.04.1971)

बेहद के पेपर में पास होने का साधन

आज भट्ठी की समाप्ति है वा भट्ठी के प्रैक्टिकल पेपर का आरम्भ है? अभी आप कहाँ जा रहे हो? पेपर हाल में जा रहे हो या अपने-अपने स्थानों पर? जब पेपर हाल समझेंगे तब प्रैक्टिकल में पास होकर दिखायेंगे। ऐसे नहीं समझना कि अपने घर जा रहे हैं। नहीं। बड़े से बड़ा कोर्स पास करके बड़े से बड़ा इम्तहान देने के लिए पेपर हाल में जा रहे हैं। सेन्टर्स पर जब तक पढ़ाई करते हो तो वह हो गई स्कूल की पढ़ाई। लेकिन जब मधुबन वरदान भूमि में डायरेक्ट बापदादा वा निमित्त बने हुए सभी बड़े महारथियों द्वारा ट्रेनिंग लेते हो वा पढ़ाई करते हो तो मानो कालेज वा युनिवर्सिटी का स्टूडेण्ट हूँ। स्कूल के पेपर और युनिवर्सिटी के पेपर में फर्क होता है। पढ़ाई में भी फर्क होता है, तो इस भट्ठी में ट्रेनिंग लेना अर्थात् युनिवर्सिटी का स्टूडेण्ट बनना है। तो अभी युनिवर्सिटी की पढ़ाई का पेपर देने के लिए जा रहे हैं। युनिवर्सिटी के पेपर के बाद ही स्टेट्स की प्राप्ति होती है। ऐसे ही भट्ठी में आने के बाद जो प्रैक्टिकल पेपर में पास हो निकलते हैं उन्हों को वर्तमान और भविष्य स्टेट्स और स्टेज प्राप्त होती है। तो यह कॉमन बात नहीं समझना। भल पहले सेन्टर्स पर पढ़ाई करते रहे हो और पेपर भी देते रहे हो लेकिन यह युनिवर्सिटी का पेपर है। बापदादा द्वारा तिलक वा छाप लगाने के बाद अगर कोई प्रैक्टिकल पेपर में फेल हो जाते हैं तो क्या होगा? जन्म-जन्मान्तर के लिए फेल का दाग रह जायेगा। इसलिए अगर कोई भी फेल होने का संस्कार वा अपनी चलन महसूस होती हो तो आज के दिन में वह रहा हुआ दाग वा कमज़ोरी की चलन वा

होता है तो स्वत: ही अटेन्शन जाता है ना - रोशनी आ रही है! ऐसे आपके तरफ अटेन्शन जाए। समझा?

(14-01-1988)

कुमारों से:- (1) कुमारों की विशेषता क्या है? कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है क्योंकि पवित्र जीवन है। और जहाँ पवित्रता है, वहाँ महानता है। कुमार अर्थात् शक्तिशाली, जो संकल्प करें वह कर सकते हैं। कुमार अर्थात् सदा बन्धनमुक्त बनने और बनाने वाले। ऐसी विशेषतायें हैं ना? जो संकल्प करो वही कर्म में ला सकते हो। स्वयं भी पवित्र रह औरों को भी पवित्र रहने का महत्व बता सकते हो। ऐसी सेवा के निमित्त बन सकते हो। जो दुनिया वाले असम्भव समझते हो वह ब्रह्माकुमार चैलेन्ज करते हैं - तो हमारे जैसा पावन कोई हो नहीं सकता, क्यों? क्योंकि बनाने वाला सर्वशक्तिमान है। दुनिया वाले कितना भी प्रयत्न करते हैं लेकिन आप जैसे पावन बन नहीं सकते। आप सहज ही पावन बन गये। सहज लगता है ना? या दुनिया वाले जैसे कहते हैं - यह अननैचुरल है, ऐसे लगता है? कुमारों की परिभाषा ही है - चैलेन्ज करने वाले, परिवर्तन कर दिखाने वाले, असम्भव को सम्भव करने वाले । दुनिया वाले अपने साथियों को संग के दोष में ले जाते हैं और बाप के संग में ले आते हो। उन्हें अपना संग नहीं लगाते, बाप के संग का रंग लगाते हो, बाप समान बनाते हो। ऐसे हो ना?

(2) कुमार अर्थात् सदा अचल-अडोल, कैसी भी परिस्थिति आ जाए लेकिन डगमग होने वाले नहीं। क्योंकि आपका साथी स्वयं बाप है। जहाँ बाप है, वहाँ सदा ही अचल-अडोल होंगे। जहाँ सर्वशक्तिमान होगा वहाँ सर्व शक्तियाँ होंगी। सर्वशक्तियों के आगे माया कुछ कर नहीं सकती। इसलिए कुमार जीवन अर्थात् सदा एकरस स्थिति वाले, हलचल में आने वाले नहीं। जो हलचल में आता है, वह अविनाशी राज्य-भाग्य भी नहीं पा सकता, थोड़ा-सा सुख मिल जायेगा लेकिन सदा का नहीं। इसलिए कुमार जीवन अर्थात सदा अचल, एकरस स्थिति में

हो। तो नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है। छोड़ने में ही लेना है। एक देते हो और पदम् लेते हो! तो बेहद का वैराग राज्य भाग्य दिलाने वाला है। एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य। ऐसे राजऋषि हो? राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है। ऐसी राजऋषि आत्माओं को विश्व की आत्मायें दिल से प्यार करती है। चैतन्य से भी ज्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं। क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है। तो ऐसे राजऋषि आत्मायें हैं - इस नशे में सदा रहो।

(27-12-1987)

कुमारों से:- कमाल करने वाले कुमार हो ना? क्या कमाल दिखाएंगे? सदा बाप को प्रत्यक्ष करने का उमंग तो रहता ही है लेकिन उसकी विधि क्या है? आजकल तो यूथ के तरफ सबकी नजर है। रूहानी यूथ अपने मन्सा शक्ति से, बोल से, चलन से ऐसे शान्ति की शक्ति अनुभव करायें जो वह समझें कि यह शान्ति की शक्ति से क्रांति करने वाले हैं। जैसे जिस्मानी यूथ की चलन और चेहरे से जोश दिखाई देता है ना। देखकर ही पता चलता है कि यह यूथ हैं। ऐसे आपके चेहरे और चलन से शान्ति की अनुभूति हो-इसको कहते हैं कमाल करना। हर एक की वृत्ति से वायब्रेशन आए। जैसे उन्हों के चलन से, चेहरे से वायब्रेशन आता है कि यह हिंसक वृत्ति वाले हैं, ऐसे आपके वायब्रेशन से शान्ति की किरणें अनुभव हों। ऐसी कमाल करके दिखाओ। कोई भी क्रांति का कार्य करता है तो सबका अटेन्शन जाता है ना। ऐसे आप लोगों के ऊपर सबका अटेन्शन जाए-ऐसी विशाल सेवा करो। क्योंकि ज्ञान सुनाने से अच्छा तो लगता है लेकिन परिवर्तन अनुभव को देखकर अनुभवी बनते हैं। ऐसी कोई न्यारी बात करके दिखाओ। वाणी से तो माताएं भी सेवाएं करती हैं, निमित्त बहनें भी सेवा करती हैं लेकिन आप नवीनता करके दिखाओ जो गवर्मेन्ट का भी अटेन्शन जाए। जैसे सूर्य उदय

संस्कार मिटा कर जाना। जिससे कि पेपर हाल में जायें, पेपर में फेल न होने पायें। समझा। वह पेपर तो दे दिया। वह तो सहज है लेकिन फाइनल नम्बर वा मार्क्स प्रैक्टिकल पेपर के बाद ही मिलते हैं। तो यह स्मृति और दृष्टि-दोनों को परिवर्तन में लाकर जाना है। **स्मृति में क्या रहे कि हर सेकेण्ड मेरा पेपर हो रहा है। दृष्टि में क्या रहे कि पढ़ाने वाला बाप और पढ़ने वाला मैं स्टूडेण्ट आत्मा हूँ।** यह स्मृति, वृत्ति और दृष्टि बदलकर जाने से फेल नहीं होंगे लेकिन फुल पास होंगे। तो भट्ठी कोई साधारण बात नहीं समझना। यह भट्ठी की छाप और तिलक सदा कायम रखना है। जैसे युनिवर्सिटी का सर्टिफिकेट सर्विस दिलाता है, पद की प्राप्ति कराता है। ऐसे ही यह भट्ठी का तिलक वा छाप सदा अपने पास प्रैक्टिकल में कायम रखना - यह बड़े से बड़ा सर्टिफिकेट है। जिसको सर्टिफिकेट नहीं होता है वह कभी भी कोई स्टेट्स नहीं पा सकते। इस रीति से यह भी एक सर्टिफिकेट है। भविष्य वा वर्तमान पद की प्राप्ति वा सफलता का सर्टिफिकेट है। सर्टिफिकेट को सदैव सम्भाला जाता है। अलबेलेपन से खो जाता है। कभी भी माया के अधीन यानि वश होकर पुरुषार्थ में अलबेलापन नहीं लाना। नहीं तो आप समझेंगे हमको सर्टिफिकेट है लेकिन माया वा रावण सर्टिफिकेट चुरा लेते है। जैसे आजकल के डाकू वा पाकेट काटने वाले ऐसा युक्ति से काम करते हैं जो बाहर से कुछ भी पता नहीं पड़ता है। अन्दर खाली हो जाता है। इसी प्रकार अगर पुरुषार्थ में अलबेलापन लाया तो रावण अन्दर ही अन्दर सर्टिफिकेट चुरा लेगा और आप स्टेट्स पा नहीं सकेंगे। इसलिए अटेन्शन! समझा?

यह ग्रुप सर्विसएबुल तो है, अभी क्या बनना है? जैसे सर्विसएबुल हो वैसे ही अभी सर्विस में एक तो त्रिकालदर्शीपन का सेन्स भरना है और दूसरा रुहानियत का इसेन्स भरना है। तब तीनों बातें मिल जायेंगी - सर्विस, सेन्स और इसेन्स। इसेन्स सूक्ष्म होता है ना। तो यह रुहानियत का इसेन्स और त्रिकालदर्शीपन का सेन्स भरने से सर्विसएबुल के साथ सक्सेसफुल हो जायेंगे। तो सेन्स और इसेन्स कहाँ तक हरेक ने अपने अन्दर भरा है - वह चेक करना है। अभी समय है। जैसे पेपर

हाल में जाने से पहले दो घंटे आगे भी तैयारी करके जाते हैं। आप को भी पेपर हाल में जाने के पहले अपने को तैयार करने के लिए अभी समय है। जैसे सुनाया था कि ब्रह्माकुमार के साथ में तपस्वी कुमार भी दिखाई दे। वह अपने नयनों में, चेहरे में रुहानियत धारण की है, जो जाते ही अलौकिक न्यारे और सब के प्यारे नज़र आओ? न सिर्फ भट्ठी वालों को लेकिन जो भी मधुबन में आते हैं, उन सभी को यह धारणायें विशेष रूप से करनी हैं। भट्ठी सक्सेस रही? इन्हों की पढ़ाई की रफ्तार से आप सन्तुष्ट हो? आप भट्ठी की पढ़ाई से अपने पुरुषार्थ में सन्तुष्ट हुए? कुछ रहा तो नहीं है ना? (अभी न रहा है) फिर कब रहेगा क्या?

यह अपनी सेफ्टी का साधन ढूँढ़ते हैं। समझते हैं कि कुछ भी हो जायेगा तो यह कह सकेंगे ना। लेकिन इससे भी फिर कमज़ोरी आ जाती है। इसलिए फिर यह भी कभी नहीं सोचना। कभी भी फेल नहीं होंगे-ऐसा सोचो। अभी भी हैं और जन्म-जन्मान्तर की गैरन्टी - कभी भी फेल नहीं होंगे। इसको कहा जाता है फुल पास। **कुमारों की विशेषता है कि जो चाहें वह कर सकते हैं। यह विल - पावर जरूर है। लेकिन हर संकल्प और हर सेकेण्ड विल करने की विल पावर चाहिए।** बच्चे को सभी विल किया जाता है ना। जो कुछ होता है वह विल करते हैं। तो आप लोग भी वारिस बनाते हो और बनते भी हो। तो जैसे और विल पावर है वैसे सभी कुछ विल करने की विल पावर चाहिए। यह यहाँ से भरकर जाना। जब सभी कुछ विल कर दिया तो क्या बन जायेंगे? नष्टोमोहा। जब मोह नष्ट हो जाता है तो बन्धनमुक्त बन जाते हैं और बन्धनमुक्त ही योगयुक्त व जीवनमुक्त बन सकता है। समझा? संगमयुग का आप के पास अभी खज़ाना कौन-सा है? ज्ञान खज़ाना तो बाप ने दिया लेकिन अपना-अपना खज़ाना कौन-सा है? यह समय और संकल्प। जैसे बाप ने पूरा ही अपने को विल किया, वैसे आप लोगों की जो स्मृति है उसको भी पूरा विल करना है। जैसे स्थूल खज़ाने से जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं। वैसे ही इस समय का यह खज़ाना समय और संकल्प - इससे भी आप जो प्राप्त करना चाहो वह इन्हीं द्वारा प्राप्त कर सकते हो। **सारी प्राप्ति का**

कुमारों से :- (1) सहजयोगी कुमार हो ना? निरन्तर योगी कुमार, कर्मयोगी कुमार। क्योंकि कुमार जितना अपने को आगे बढ़ाने चाहें उतना बढ़ा सकते हैं। क्यों? निर्बन्धन है, बोझ नहीं हैं और जिम्मेवारी नहीं है इसलिए हल्के हैं। हल्के होने के कारण जितना ऊंचा जाना चाहे जा सकते हैं। निरन्तर योगी, सहज योगी - यह है ऊंची स्थिति, यह है ऊंचा जाना। ऐसे ऊंच स्थिति वाले को कहते हैं - विजयी कुमार । विजयी हो या कभी हार, कभी जीत - यह खेल तो नहीं खेलते हो? अगर कभी हार कभी जीत के संस्कार होंगे तो एकरस स्थिति का अनुभव नहीं होगा। एक की लग्न में मग्न रहने का अनुभव नहीं करेंगे।

(2) सदा कर कर्म में कमाल करने वाले कुमार हो ना? कोई भी कर्म साधारण नहीं हो, कमाल का हो। जैसे बाप की महिमा करते हो, बाप की कमाल गाते हो। ऐसे कुमार अर्थात् हर कर्म में कमाल दिखाने वाले। कभी कैसे, कभी कैसे वाले नहीं। ऐसे नहीं - जहाँ कोई खींचे वहाँ खिंच जाओ। लुढ़कने वाले लोटे नहीं। कभी कहाँ लुढ़क जाओ, कभी कहाँ। ऐसे नहीं। कमाल करने वाले बनो। अविनाशी हैं, अविनाशी बनाने वाले हैं - ऐसे चैलेन्ज करने वाले बनो। ऐसी कमाल करके दिखाओ जो हरेक कुमार चलता-फिरता फरिश्ता हो, दूर से ही फरिश्तेपन की झलक अनुभव हो। वाणी से सेवा के प्रोग्राम तो बहुत बना लिये, वह तो करेंगे ही लेकिन आजकल प्रत्यक्ष प्रूफ चाहते हैं। प्रत्यक्ष प्रमाण, सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण इतने हो जाएं तो सहज सेवा हो जायेगी। फरिश्तेपन की सेवा करो तो मेहनत कम सफलता ज्यादा होगी। सिर्फ वाणी से सेवा नहीं करो लेकिन मन वाणी और कर्म तीनों से साथ-साथ सेवा हो - इसको कहते हैं कमाल ।

(06-12-1987)

सदा अपने को राजऋषि समझते हो? एक तरफ है राज्य, दूसरे तरफ है वैराग - दोनों का बैलेन्स हो। बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्ति स्वरूप बना देता है क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते

करने वाली विशेष आत्मायें - इसको कहा जाता है - सच्चे सेवाधारी। याद और सेवा यही सदा आगे बढ़ाने का साधन है। याद शक्तिशाली बनाती है और सेवा खजानों से सम्पन्न बनाती है। याद और सेवा से आगे बढ़ते रहो और बढ़ाते चलो।

(25-12-1985)

कुमारों से :- कुमार जीवन भी लकी जीवन है। क्योंकि उल्टी सीढ़ी चढ़ने से बच गये। कभी संकल्प तो नहीं आता है - उल्टी सीढ़ी चढ़ने का! चढ़ने वाले भी उतर रहे हैं। सभी प्रवृत्ति वाले भी अपने को कुमार-कुमारी कहलाते हैं ना। तो सीढ़ी उतरे ना! तो सदा अपने इस श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रखो। कुमार जीवन अर्थात् बन्धनों से बचने की जीवन। नहीं तो देखो कितने बन्धनों में होते हैं। तो बन्धनों में खिंचने से बच गये। मन से भी स्वतन्त्र, सम्बन्ध से भी स्वतन्त्र। **कुमार जीवन है ही - स्वतन्त्र । कभी स्वप्न में भी ख्याल तो नहीं आता - थोड़ा कोई सहयोगी मिल जाए! कोई साथी मिल जाए! बीमारी में मदद हो जाए, ऐसे कभी सोचते हो! बिल्कुल ख्याल नहीं आता? कुमार जीवन - अर्थात् सदा उड़ते पंछी, बंधन में फँसे हुए नहीं। कभी भी कोई संकल्प न आवे। सदा निर्बन्धन हो तीव्रगति से आगे बढ़ते चलो।**

(15-01-1986)

चैरिटी बिगन्स एट होम का काम ज़्यादा किया है। हमजिन्स को जगाया है। कुमार-कुमारियों का अच्छा कल्याण हो रहा है। इस जीवन में अपने जीवन का श्रेष्ठ फैसला करना होता है। अपनी जीवन बना ली तो सदा के लिए श्रेष्ठ बन गये। उल्टी सीढ़ी चढ़ने से बच गये। बापदादा खुश होते हैं कि एक दो से अनेक दीपक जग दीपमाला बना रहे हैं। उमंग-उत्साह अच्छा है। सेवा में बिजी रहने से उन्नति अच्छी कर रहे हैं।

(01-03-1986)

आधार संगमयुग का समय और श्रेष्ठ स्मृति अर्थात् याद है। यही खज़ाना है। इसको ही विल करना है। पूरा ही विल कर के जा रहे हो या कुछ जेब-खर्च रखा है? आइवेल के लिए थोड़ा बहुत कोने में छिपाकर तो नहीं रखा है, जेब बिल्कुल खाली है?

(कुमारों ने एक गीत बाबा को सुनाया) आजकल तो मधुबन का हर कोना खाली नहीं है लेकिन हर स्थान पर सितारों की रिमझिम नज़र आती है तो खाली क्यों कहते हो? जब सूर्य व्यक्त से अव्यक्त होता है तब सितारे स्पष्ट दिखाई देते हैं। तो बाप व्यक्त से अव्यक्त हुए हैं विश्व को सितारों की रिमझिम दिखाने के लिए। तो खाली क्यों कहेंगे? स्थूल सूर्य को कहते हैं अस्त हो गया लेकिन यह ज्ञान-सूर्य व्यक्त से अव्यक्त रूप है लेकिन सितारों के साथ है। साकार रूप से सदा साथी नहीं बन सकते। साकार में होते हुए भी सदा साथ में रहने के लिए अव्यक्त स्थिति और अव्यक्त साथी समझते थे। तो अब भी सदा साथ अव्यक्त रूप में ही हो सकता है। क्योंकि अव्यक्त रूप व्यक्त शरीर के बन्धन से मुक्त है तो आप सभी को भी सदा साथ देने के लिए इस शरीर की स्मृति से दूर करने के लिए, यह अव्यक्त पार्ट चल रहा है। बापदादा तो हर समय सर्व बच्चों के साथ है ही। पहले-पहले एक गीत बनाया था कि क्यों हो अधीर माता... । (यह गीत बहनों ने सुनाया) अभी भी हर एक का सदा साथी हूँ। लेकिन जो चाहे अनुभव करे। अभी अनुभव करने के लिए जैसे बाप अव्यक्त है वैसे अव्यक्त बनकर के ही अनुभव कर सकते हो। यह अलौकिक अनुभव करने के लिए सदा व्यक्त भाव से परे, अव्यक्त देश की स्मृति से उपराम अर्थात् साक्षी बनने से ही हर समय साथ का अनुभव कर पायेंगे। समझा?

(29.04.71)

दिलवाला मन्दिर है तपस्वी कुमार और तपस्वी कुमारियों का यादगार। और सदैव नशे में स्थित रहने का यादगार कौन-सा है?

अचलघर। सदैव उस नशे में रहने से अचल, अड़ोल बन जायेंगे। फिर माया संकल्प रूप में भी हिला नहीं सकती। ऐसे अचल बन जायेंगे। यादगार है ना कि रावण सम्प्रदाय ने पांव हिलाने की कोशिश की लेकिन जरा भी हिला न सके। ऐसा नशा रहता है कि यह हमारा यादगार है या समझते हो कि यह बड़े-बड़े महारथियों का यादगार है? **यह मेरा यादगार हैं - ऐसा निश्चय बुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त हो जाती है।** यह कभी भी नहीं सोचो कि यह कोई और महारथियों का है, हम तो पुरुषार्थी हैं। अगर निश्चय में, स्वरूप की स्मृति में ही कमज़ोरी होगी तो कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी। तो सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना बनाया....। बना हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर बना बनाया जो कहावत है उसको पूरा करना है। **जब निश्चय हो जाता है कि मैं यह हूँ वा यह मुझे करना ही है, मैं कर सकता हूँ तब वह नशा चढ़ता है।** निश्चय नहीं तो नशा भी नहीं चढ़ता और निश्चय है तो नशे की स्थिति के सागर में लहराते रहेंगे। ऐसे स्थिति का अनुभवी मूर्त्त जब बन जायेंगे तो आपकी मूर्त्त से सिखलाने वाले की सूरत दिखाई देगी। तो ऐसे अनुभवीमूर्त्त हो जो बाप और शिक्षक की सूरत आपकी मूर्त्त से प्रत्यक्ष हो। ऐसे बने हो वा बन रहे हो? सफलता के सितारे हो वा उम्मीदवार सितारे हो। सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार है। क्योंकि जब सर्वशक्तिवान कहते हो; तो असफलता का कारण है शक्तिहीनता। शक्ति की कमी के कारण माया से हार खाते हैं। **जब सर्वशक्तिवान बाप की स्मृति में रहते हैं तो सर्वशक्तिवान के बच्चे होने के कारण सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार हो गया। हर सेकेण्ड में सफलता समाई हुई होनी चाहिए। असफलता के दिन समाप्त।**

अर्थात् रूहानी प्रभाव। दूसरा नहीं। ऐसे कुमार हो? पेपर आवे तो हिलने वाले तो नहीं! पेपर में पास होने वाले हो ना! सदा हिम्मतवान हो ना! जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की मदद है ही। हिम्मते बच्चे मददे बाप। हर कार्य में स्वयं को आगे रख औरों को भी शक्तिशाली बनाते चलो।

(2) कुमार हैं ही उड़ती कला वाले। जो सदा निर्बन्धन हैं वही उड़ती कला वाले हैं। तो निर्बन्धन कुमार हो। मन का भी बन्धन नहीं। तो सदा बन्धनों को समाप्त कर निर्बन्धन बन उड़ती कला वाले कुमार हो? कुमार अपनी शरीर की शक्ति और बुद्धि की शक्ति दोनों को सफल कर रहे हो? लौकिक जीवन में अपने शरीर की शक्ति को और बुद्धि की शक्ति विनाशकारी कार्यों में लगाते रहे। और अब श्रेष्ठ कार्य में लगाने वाले। हलचल मचाने वाले नहीं। लेकिन शान्ति स्थापन करने वाले। ऐसे श्रेष्ठ कुमार हो? कभी लौकिक जीवन के संस्कार इमर्ज तो नहीं होते हैं? **अलौकिक जीवन वाले, नये जन्म वाले। तो नये जन्म में पुरानी बातें नहीं रहतीं। आप सभी नये जन्म वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। कभी भी अपने को साधारण न समझ शक्तिशाली समझो। संकल्प में भी हलचल में न आना।** ऐसे तो क्वेश्चन नहीं करते हो कि व्यर्थ संकल्प आते हैं क्या करें? भाग्यवान कुमार हो। 21 जन्म भाग्य का खाते रहेंगे। स्थूल-सूक्ष्म दोनों कमाई से छूट जायेंगे।

(3) कुमार अर्थात् कमज़ोरी को सदा के लिए तलाक देने वाले। आधाकल्प के लिए कमज़ोरी को तलाक दे दिया ना। या अभी नहीं दिया है? जो सदा समर्थ आत्मायें हैं उनके आगे कमज़ोरी आ नहीं सकती। सदा समर्थ रहना अर्थात् कमज़ोरी को समाप्त करना। ऐसी समर्थ आत्मायें बाप को भी प्रिय हैं। परिवार को भी प्रिय हैं। कुमार अर्थात् अपने हर कर्म द्वारा अनेकों की श्रेष्ठ कर्मों की रेखा खींचने वाले। स्वयं के कर्म औरों के कर्म की रेखा बनाने के निमित्त बन जायें। ऐसे सेवाधारी हो। तो हर कर्म में यह चैक करो कि हर कर्म ऐसा स्पष्ट है जो औरों को भी कर्म की रेखा स्पष्ट दिखाई दे। ऐसे श्रेष्ठ कर्मों के श्रेष्ठ खाते को सदा जमा

कला द्वारा आगे बढ़ते जाते। इसलिए कुमार और कुमारी जीवन बापदादा को सदा प्यारी लगती है। गृहस्थी जीवन है बन्धन वाली और कुमार जीवन है बन्धन मुक्त। तो निर्बन्धन आत्मा बन औरों को भी निर्बन्धन बनाओ। कुमार अर्थात् सदा सेवा और याद का बैलेन्स रखने वाले। बैलेन्स है तो सदा उड़ती कला है। जो बैलेन्स रखना जानते हैं वह कभी भी किसी परिस्थिति में नीचे-ऊपर नहीं हो सकते।

(27-11-85)

कुमार सदा अपने को मायाजीत कुमार समझते हो? माया से हार खाने वाले नहीं लेकिन सदा माया को हार खिलाने वाले। ऐसे शक्तिशाली बहादुर हो ना! जो बहादुर होता है उससे माया भी स्वयं घबराती है। बहादुर के आगे माया कभी हिम्मत नहीं रख सकती। जब किसी भी प्रकार की कमज़ोरी देखती है तब माया आती है। बहादुर अर्थात् सदा मायाजीत। माया आ नहीं सकती, ऐसे चैलेन्ज करने वाले हो ना! सभी स्वयं को सेवा के निमित्त अर्थात् सदा विश्व-कल्याण्कारी समझ आगे बढ़ने वाले हो! विश्व-कल्याणकारी बेहद में रहते हैं, हद में नहीं आते। हद में आना अर्थात् सच्चे सेवाधारी नहीं। **बेहद में रहना अर्थात् जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप को फ़ालो करने वाले श्रेष्ठ कुमार हैं, सदा इसी स्मृति में रहो। जैसे बाप सम्पन्न है, बेहद का है ऐसे बाप समान सम्पन्न सर्व खज़ानों से भरपूर आत्मा हूँ - इस स्मृति से व्यर्थ समाप्त हो जायेगा। समर्थ बन जायेंगे।**

(16-12-1985)

कुमारों से :- (1) कुमार अर्थात् तीव्रगति से आगे बढ़ने वाले। रुकना-चलना, रुकना-चलना ऐसे नहीं। कैसी भी परिस्थितियाँ हों लेकिन स्वयं सदा शक्तिशाली आत्मा समझ आगे बढ़ते चलो। परिस्थिति वा वायुमण्डल के प्रभाव में आने वाले नहीं, लेकिन अपना श्रेष्ठ प्रभाव दूसरों पर डालने वाले। श्रेष्ठ प्रभाव

अब सफलता हमारा नारा है - यह स्मृति में रखो।

(24-05-1971)

कुमारों के साथ :- कुमारों का चित्र सदा बाप के साथ रहने का दिखाया है, तुम्हीं से खेलूं, तुम्हीं से खाऊं - यह चित्र देखा है सखे रूप से। सखा अर्थात् साथ। तो कुमारों को सखा रूप से साखी रूप दिखाया है, ग्वालबाल के रूप में दिखाया है ना। तो **अपने को सदा बाप के साथी समझकर तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं... सभी कुमार युगल मूर्त्त ही चलते हो। युगल हो या अकेले हो? कभी अकेले का संकल्प नहीं करना। साथी को सदा साथ रखो तो सदा खुश रहेंगे और दिन-रात खुशी में नाचते अपना और दूसरों का भविष्य बनायेंगे। अकेला कब न समझना - अकेला समझा और माया आई। कुमारों की यही कम्पलेन है कि हम अकेले हैं। यह साथ तो दुःख-सुख का साथी है। वह साथ तो माथा खराब कर देता।** तो युगल हो ना! प्रवृत्ति वाले नहीं हो, सुख की प्रवृत्ति मिल जाए और क्या चाहिए। हमारे जैसा साथी किसी को मिल नहीं सकता। साथी को साथ रखना - साथ रखेंगे तो मन सदा मनोरंजन में रहेगा।

(01-12-1978)

कुमारों के साथ :- (1) कुमार और ब्रह्माकुमार। प्रवृत्ति के जीवन में भी कुमार और ब्राह्मण जीवन में भी ब्रह्माकुमार। सिर्फ कुमार नहीं लेकिन ब्रह्माकुमार। अगर सिर्फ कुमार रहेंगे तो माया आयेगी। ब्रह्माकुमार रहेंगे तो माया भाग जायेगी। तो **जैसे ब्रह्मा आदि देव है ब्रह्माकुमार भी आदि रतन होंगे। आदि देव के बच्चे मास्टर आदि देव। आदि रतन समझेंगे तो अपने जीवन के मूल्य को जानेंगे। आप सब प्रभु के रतन, ईश्वर के रतन हो, तो आपकी कितनी वैल्यू हो गई। सदा अपने को आदि देव के बच्चे मास्टर आदि देव, आदि**

रतन समझो तो जो भी कार्य करेंगे वह समर्थ होगा व्यर्थ नहीं। कुमार जितना सर्विस में रहेंगे उतना मायाजीत रहेंगे। अपने को फ्री नहीं रखना।

अपने को अकेला न समझो, साथी को साथ रखो

(2) कुमार सब रीति से निर्बन्धन हैं। लौकिक ज़िम्मेवारी से भी निर्बन्धन और माया के बन्धनों से भी निर्बन्धन। कोई भी बन्धन के अधीन नहीं। बन्धन मुक्त की निशानी है - सदा योगयुक्त। योगयुक्त बन्धन-मुक्त जरूर होंगे। मन का भी बन्धन नहीं। लौकिक ज़िम्मेवारी तो खेल है। बन्धन की रीति से नहीं लेकिन डायरेक्शन प्रमाण खेल की रीति से हंसकर खेलो तो छोटी-छोटी बातो में थकेंगे नहीं। अगर बन्धन समजते हो तो तंग होते हो। क्या, क्यों का प्रश्न उठता है। लेकिन **डायरेक्शन प्रमाण खेल खेल रहे हैं ऐसा समझने से अथक रहेंगे। ज़िम्मेवार बाप है, आप निमित्त हैं। कुमार तो डबल निर्बन्धन हैं कोई पूँछ नहीं है। सदा लकी रहना, घबराना नहीं, अपने हाथ से भोजन बनाना बहुत अच्छा है। अपने लिए और बाप के लिए प्यार से बनाओ। पहले बाप को खिलाओ। अपने को अकेला समझते हो तो थक जाते हो। सदा यह समझो कि हम दो हैं, दूसरे के लिए बनाना है तो विधिपूर्वक प्यार से बनाओ तो बहुत अच्छा लगेगा। कुमारों का आपस में ग्रुप होना चाहिए, कभी कोई बीमार पड़े तो एक की डयुटी हो। एक-दूसरे की मदद कर सेवा करो। कभी भी पूँछ लगाने का संकल्प नहीं करना, नहीं तो बहुत परेशान हो जायेंगे। बाहर से तो पता नहीं चलता लेकिन अगर लगा दिया तो मुश्किल हो जायेगी। अभी तो स्वतन्त्र हो फिर ज़िम्मेवारी बढ़ जायेगी। सभी ने बाप को कम्पेनियन बनाया है ना?** तो एक कम्पेनियन छोड़कर दूसरा बनाया जाता है क्या? ये तो लौकिक में भी अच्छा नहीं माना जाता। तो कुमार कभी अपने को अकेला नहीं समझो यदि अकेला समझा, तो उदास हो जायेंगे।

अशरीरी बन जाते हो। तो मन की शक्ति विशेष है। व्यर्थ संकल्प मन की शक्ति को कमज़ोर कर देते हैं। इसलिए इस बन्धन से मुक्त। कुमार अर्थात् सदा तीव्र पुरुषार्थी। क्योंकि जो निर्बन्धन होगा उसकी गति स्वत: तीव्र होगी। बोझ वाला धीमी गति से चलेगा। हल्का सदा तीव्रगति से चलेगा। अभी समय के प्रमाण पुरुषार्थ का समय गया। अब तीव्र पुरुषार्थी बन मंज़िल पर पहुँचना है।

(2) कुमारों ने पुराने व्यर्थ के खाते को समाप्त कर लिया है? नया खाता समर्थ खाता है। पुराना खाता व्यर्थ है। तो पुराना खाता खत्म हुआ। वैसे भी देखो व्यवहार में कभी पुराना खाता रखा नहीं जाता है। पुराने को समाप्त कर आगे खाते को बढ़ाते रहते हैं। तो यहाँ भी पुराने खाते को समाप्त कर सदा नये ते नया हर कदम में समर्थ हो। हर संकल्प समर्थ हो। जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप समर्थ है तो बच्चे भी फ़ालो फ़ादर कर समर्थ बन जाते हैं।

(18-11-1985)

कुमारों से :- कुमार क्या कमाल करते हो? धमाल करने वाले तो नहीं हो ना! कमाल करने के लिए शक्तिशाली बनो और बनाओ। शक्तिशाली बनने के लिए सदा अपना मास्टर सर्वशक्ति-वान का टाइटिल स्मृति में रखो। जहाँ शक्ति होगी वहाँ माया से मुक्ति होगी। जितना स्व के ऊपर अटेन्शन होगा उतना ही सेवा में भी अटेन्शन जायेगा। अगर स्व के प्रति अटेन्शन नहीं तो सेवा में शक्ति नहीं भरती। इसलिए सदा अपने को सफ़लता स्वरूप बनाने के लिए शक्तिशाली अभ्यास के साधन बनाने चाहिए। कोई ऐसे विशेष प्रोग्राम बनाओ। जिससे सदा प्रोग्रेस होती रहे। पहले स्व उन्नति के प्रोग्राम बनाओ तब सेवा सहज और सफ़ल होगी। कुमार जीवन भाग्यवान जीवन है क्योंकि कई बन्धनों से बच गये। नहीं तो गृहस्थी जीवन में कितने बन्धन हैं। तो ऐसे भाग्यवान बनने वाली आत्मायें कभी अपने भाग्य को भूल तो नहीं जातीं। सदा अपने को श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा समझ औरों के भी भाग्य की रेखा खींचने वाले हो। जो निर्बन्धन होते हैं वह सब ही उड़ती

जो हैं कल उससे आगे, परसों उससे आगे। इसको कहा जाता है - तीव्रगति वाले । तो सदा अपने को शक्तिशाली कुमार समझो। ब्रह्माकुमार बन गये सिर्फ़ इस खुशी में रहे, शक्तिशाली नहीं बने तो विजयी नहीं बन सकते। ब्रह्माकुमार बनना बहुत अच्छा लेकिन शक्तिशाली ब्रह्माकुमार सदा समीप होते हैं। अब के समीप वाले राज्य में भी समीप होंगे। अभी की स्थिति में समीपता नहीं तो राज्य में भी समीपता नहीं। अभी की प्राप्ति सदा की प्रालब्ध बना देती है। इसलिए सदा शक्तिशाली। ऐसे शक्तिशाली ही विश्व-कल्याणकारी बन सकते हैं। कुमारों में शक्ति तो है ही। चाहे शारीरिक शक्ति चाहे आत्मा की। लेकिन विश्व-कल्याण के प्रति शक्ति है या श्रेष्ठ विश्व को विनाशकारी बनाने के कार्य में लगने की शक्ति है? तो कल्याणकारी कुमार हो ना! अकल्याण करने वाले नहीं। **संकल्प में भी सदा सर्व के प्रति कल्याण की भावना हो। स्वप्न में भी कल्याण की भावना हो, इसको कहा जाता है - श्रेष्ठ शक्तिशाली।** कुमार शक्ति द्वारा जो सोचें वह कर सकते हैं। जो वही संकल्प और कर्म, दोनों साथ-साथ हों। ऐसे नहीं संकल्प आज किया कर्म पीछे। संकल्प और कर्म एक हो और साथ-साथ हो। ऐसी शक्ति हो। ऐसी शक्ति वाले ही अनेक आत्माओं का कल्याण कर सकते हैं। तो सदा सेवा में सफ़ल बनने वाले हो या कभी खिट-खिट करने वाले हो? मन में, कर्म में, आपस में सबमें ठीक। किसी में भी खिट-खिट न हो। सदा अपने को विश्व-कल्याणकारी कुमार समझो तो जो भी कर्म करेंगे उसमें कल्याण की भावना समाई होगी।

(30-01-1985)

कुमारों से :- (1) कुमार अर्थात् निर्बन्धन। सबसे बड़ा बन्धन मन के व्यर्थ संकल्पों का है। इसमें भी निर्बन्धन। कभी-कभी यह बन्धन बांध तो नहीं लेता है? क्योंकि संकल्प शक्ति हर कदम में कमाई का आधार है। याद की यात्रा किस आधार से करते हो? संकल्प शक्ति के आधार से बाबा के पास पहुँचते हो ना!

कुमार ज्वाला रूप बनकर ज्वाला जगाओ तो जल्दी विनाश हो जायेगा। ऐसी योग की अग्नि तेज़ करो जो विनाश की ज्वाला तेज़ हो जाएं।

कभी भी किसी बात में क्यों और क्या करने वाले तो नहीं हो ना? किसी भी बात में क्यों क्या वह करते हैं जो मास्टर त्रिकालदर्शी नहीं। जो तीनों कालों को जानते हैं वह 'क्यों', 'क्या', नहीं करेंगे। क्यों-क्या करने वाले छोटे बच्चे होते हैं, आप सब तो वानप्रस्थ तक पहुँच गये हो ना। वानप्रस्थ स्थिति में रहने से माया से परे रहेंगे। जितनी लाइन क्लीयर होगी उतना पुरूषार्थ की स्पीड तेज होगी। सबकी लाइन क्लीयर है? कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। रूहानी यूथ ग्रुप हो ना। आजकल के यूथ गवर्नमेनट को भी बदलना चाहते हैं तो बदल देते। वह करते हैं डिस्ट्रक्शन, नुकसान और आप करेंगे कनस्ट्रक्शन। आपको विनाश नहीं करना है। आप स्थापना करेंगे तो विनाश आपे ही हो जायेगा।

विघ्नों को अपने लिए पाठ समझो

कुमारियों को कहते हैं 100 ब्राह्मणों से उत्तम एक कन्या। और कुमार कितनों से श्रेष्ठ हैं। 7 शितलाओं के साथ एक कुमार दिखाते हैं तो आप 700 ब्राह्मणों से उत्तम हुए। कुमार हार्डवर्कर हैं, जो करना चाहें वह कर सकते हैं। हरेक कुमार को अपना ग्रुप तैयार करना चाहिए। आपस में रीस नहीं लेकिन रेस करो। माया कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप अंगद के मुआफिक ज़रा भी नहीं हिलो, नाखून से भी हिला न सके। अगर जरा भी कमज़ोरी के संस्कार होंगे तो माया अपना बना लेगी। इसलिए **मरजीवा बनो, पुराने संस्कारों से मरजीवा। कोई भी विघ्न आपके लिए पाठ है, आप उनके अनुभवी बनते-बनते पास विद् आनर हो जायेंगे। कुछ भी होता है तो उससे पाठ ले लेना चाहिए। क्यों-क्या में नहीं जाना चाहिए।**

कुमार तो हैं ही सदा सेवाधारी। आलराउन्ड सेवा - मन्सा-वाचा-कर्मणा, सब में सेवाधारी। अगर इतने सब आलराउन्ड सेवाधारी हैं तो बहुत हैन्डस हो गये।

आप सब बहुत कमाल कर सकते हो।

(30-11-1979)

सेकेण्ड में सोचा और किया - यही हाई जम्प है

कुमारों से :- सभी अविनाशी कुमार हैं। कुमार- कुमारियों को एक्स्ट्रा मार्क्स किस बात की मिलती है और क्यों मिलती है। कुमार कुमारियाँ अपने इस जीवन में सब-कुछ देखते हुए जानते हुए, फिर भी दृढ़ संकल्प कर दृढ़ त्यागी बनते हैं। उस त्याग का भाग्य मिलता है। प्रवृत्ति वाले अल्पकाल का सुख भोगकर फिर त्याग करते हैं और कुमार कुमारी विनाशी अल्पकाल के सुख का पहले ही दृढ़ संकल्प से त्याग कर देते हैं। इसलिए उन्हें चान्स मिलता है हाई जम्प लगाने का। कुमार और कुमारी जीवन लौकिक और अलौकिक दोनों जीवन में निर्बन्धन है। निर्बन्धन होने के कारण जितना आगे बढ़ाना चाहें, बढ़ा सकते हैं। तो सभी हाई जम्प वाले हो ना? सेकेण्ड में सोचा और किया, यही हाई जम्प है। सोचना और करना साथ-साथ हो। कुमार और कुमारियों को देख बाप-दादा विशेष खुश होते हैं क्योंकि गिरने से बच गये। दु:ख की सीढ़ी चढ़ी ही नहीं। तो बचे हुए को देख खुशी होती है।

(28-12-1979)

पाण्डवों से :- सभी पाण्डव शक्ति स्वरूप हो ना? शक्ति और पाण्डव कम्बाईन्ड हो? सर्वशक्तिवान के आगे शक्ति बन जाते और पार्ट बजाने मे पाण्डव। सर्वशक्तिवान को शक्ति बन कर याद नहीं करेंगे तो मजा नहीं आयेगा। आत्मा सीता है और वह राम है। तो इस पार्ट में भी बहुत मजा है। यही पार्ट सबसे वन्डरफुल है संगम का, जो पाण्डव शक्तियां बन जाती और शक्तियां भाई बन जाती। इससे सिद्ध होता है कि देहभान भूल गये। आत्मा में दोनों ही संस्कार हैं, कभी मेल का कभी फिमेल का पार्ट तो बजाया है ना। संगम पर मजा है आशिक

नालेज़फुल पावरफुल सदा विजयी हैं। नालेज जीवन में धारण करना अर्थात नालेज़ को शस्त्र बना देना। तो शस्त्रधारी शक्तिशाली होंगे ना। आज मिलिट्री वाले शक्तिशाली किस आधार से होते हैं? शस्त्र हैं, बन्दूक हैं तो निर्भय हो जाते हैं। तो नालेज़फुल जो होगा वह पावरफुल ज़रूर होगा। तो माया की भी पूरी नालेज़ है। क्या होगा कैसे होगा पता नहीं पड़ा, माया कैसे आ गई, यह नालेज़फुल नहीं हुए। नालेज़फुल आत्मा पहले से ही जानती है। जैसे समझदार जो होते हैं वह बीमारी को पहले से ही जान लेते हैं। बुखार आने वाला होता तो पहले से ही समझेंगे कि कुछ हो रहा है, पहले से ही दवा लेकर अपने को ठीक कर देंगे और स्वस्थ हो जायेंगे। बेसमझ को बुखार आ भी जायेगा तो चलता-फ़िरता रहेगा और बुखार बढ़ता जायेगा। ऐसे ही माया आती है लेकिन आने के पहले ही समझ लेना और उसे दूर से ही भगा देना। तो ऐसे समझदार शक्तिशाली कुमार हो ना! सदा विजयी हो ना! या आपको भी माया आती और भगाने में टाइम लगाते हो। शक्ति को देखकर दूर से ही दुश्मन भाग जाता है। अगर आ जावे फिर उसे भगाओ तो टाइम भी वेस्ट और कमज़ोरी की आदत पड़ जाती है। कोई बार-बार बीमार हो तो कमज़ोर हो जाता है ना! या बार-बार पढ़ाई में फेल हो तो कहेंगे यह पढ़ने में कमज़ोर है। ऐसे माया बार-बार आये और वार करती रहे तो हार खाने की आदती हो जायेंगे। और बार-बार हार खाने से कमज़ोर हो जायेंगे। इसलिए शक्तिशाली बनो। ऐसी शक्तिशाली आत्मा सदा प्राप्ति का अनुभव करती है, युद्ध में अपना समय नहीं गँवाती। विजय की खुशी मनाती है। तो कभी किसी बात में कमज़ोरी न हो। कुमार बुद्धि सालिम है। अधरकुमार बनने से बुद्धि बंट जाती है। कुमारों को एक ही काम है, अपनी ही जीवन है। उन्हों को तो कितनी ज़िम्मेवारियाँ हो जाती हैं। आप ज़िम्मेवारियों से स्वतन्त्र हो। जो स्वतन्त्र होगा वह आगे बढ़ेगा। बोझ वाला धीरे-धीरे चलेगा। स्वतन्त्र हल्का होगा वह तेज़ चलेगा। तो तेज़ रफ़्तार वाले हो। एकरस हो? सदा तीव्र अर्थात् एकरस। ऐसे भी नहीं 6 मास बीत जाएँ। **जैसे हैं वैसे ही चल रहे हैं इसको भी तीव्रगति नहीं कहेंगे। तीव्रगति वाले आज**

जीवन में अपनी तकदीर बनाना यह सबसे बड़ा भाग्य है। कितने बन्धनों में बंधने से बच गये। सदा अपने को ऐसे डबल लाइट समझते हुए उड़ती कला में चलते रहो तो आगे नम्बर ले लेंगे। अच्छा-ओम शान्ति।

(03-12-1984)

कुमारों से - कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन है। तो ब्रह्माकुमार अर्थात् रूहानी शक्तिशाली। जिस्मानी शक्तिशाली नहीं, रूहानी शक्तिशाली। कुमार जीवन में जो चाहे वह कर सकते हो। तो आप सब कुमारों ने अपने इस कुमार जीवन में अपना वर्तमान और भविष्य बना लिया, क्या बनाया? रूहानी बनाया। ईश्वरीय जीवन वाले ब्रह्माकुमार बने तो कितने श्रेष्ठ जीवन वाले हो गये। ऐसी श्रेष्ठ जीवन बन गई जो सदा के लिए दुःख से और धोखे से, भटकने से किनारा हो गया। नहीं तो जिस्मानी शक्ति वाले कुमार भटकते रहते हैं। लड़ना, झगड़ना दुख देना, धोखा देना....यही करते हैं ना। तो कितनी बातों से बच गये। जैसे स्वयं बचे हो वैसे औरों को भी बचाने का उमंग आता है। सदा हमजिन्स को बचाने वाले। जो शक्तियाँ मिली हैं वह औरों को भी दो। अखुट शक्तियाँ मिली है ना। तो सबको शक्तिशाली बनाओ। **निमित्त समझकर सेवा करो। मैं सेवाधारी हूँ, नहीं। बाबा कराता है, मैं निमित्त हूँ। मैं पन वाले नहीं। जिसमें मैं-पन नहीं है वह सच्चे सेवाधारी हैं।**

(16-01-1985)

कुमारों के प्रति विशेष :- कुमार, ब्रह्माकुमार तो बन ही गये। लेकिन ब्रह्माकुमार बनने के बाद फिर क्या बनना है? शक्तिशाली कुमार। जब तक शक्तिशाली नहीं बने तो विजयी नहीं बन सकते। शक्तिशाली कुमार सदा नालेज़फुल और पावरफुल आत्मा होंगे। नालेज़फुल अर्थात् रचता को भी जानने वाले, रचना को भी जानने वाले और माया के भिन्न-भिन्न रूपों को भी जानने वाले। ऐसे

बन माशुक को याद करना। शक्ति बनकर सर्वशक्तिवान को याद करना। सीता बनकर राम को याद करना।

(08-10-81)

कुमारों से:- अपने को सदा राजऋषि समझते हो? अधिकारी और ऋषि अर्थात् तपस्वी। स्व का राज्य प्राप्त होने से स्वत: ही तपस्वी बन जाते हैं। क्योंकि जब स्व का राज्य होता है तो स्वयं को आत्मा समझने से, बाप का बनने से, यही तपस्या हो जाती है। आत्मा बाप की बनी अर्थात् तपस्वी बनी। तो राज्य भी और ऋषि भी। तो सभी स्वराज्य अधिकारी बने हो? कोई भी कर्मेन्द्रिय अपने तरफ आकर्षित न करे, सदा बाप की तरफ आकर्षित रहें। किसी भी व्यक्ति व वस्तु की तरफ आकर्षण न जाये। ऐसे राज्य अधिकारी तपस्वी कुमार हो? बिल्कुल विजयी। क्योंकि वायुमण्डल तो कलियुगी है ना और साथ भी हंस और बगुलों का है। ऐसे वातावरण में रहते हुए स्वराज्यधारी होंगे तब सेफ रहेंगे। जरा भी दुनिया के वायब्रेशन की आकर्षण न हो। कोई कम्पलेन नहीं, सदा कम्पलीट। कुमारों की कम्पलेन्ट आती है? कुमार यदि विजयी बन जाएं तो सबसे महान हैं। क्योंकि गवर्मेन्ट भी यूथ को आगे बढ़ाती है। उसमें भी कुमार ज्यादा होते हैं। कुमार जो चाहें वह कर सकते हैं क्योंकि शक्ति बहुत होती है। लेकिन शक्ति को व्यर्थ तो नहीं गंवाते हो। **संकल्प और स्वप्न में बाप के सिवाए और कोई नहीं तब कहेंगे नम्बरवन कुमार। कुमार निर्विघ्न हो गये तो सबको निर्विघ्न बना सकते हैं। कुमारों का टाइटल ही है विघ्न विनाशक । किसी भी प्रकार का विघ्न, मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, किसी भी विघ्न के वशीभूत न हों। इसलिए बच्चों का ही टाइटल है - विघ्न-विनाशक ।** गणेश बच्चा है ना। तो आपके यादगार में विघ्न-विनाशक नाम प्रसिद्ध है। प्रैक्टिकल बने हो तब यादगार बना है। **विघ्न-विनाशक बनने से स्वत: ही मंसा द्वारा भी सेवा होती रहेगी। वायुमण्डल भी निर्विघ्न बनता जायेगा। जैसे तत्वों से**

मौसम बदलती है वैसे विघ्न विनाशक बच्चों से वायुमण्डल बदल जायेगा। तो चारों ओर विघ्नविनाशक की लहर फैल जाए। सदा यही स्मृति में रखो कि - हमें विजयी वायुमण्डल बनाना है। जैसे सूर्य स्वयं शक्तिशाली है तो चारों ओर अपनी शक्ति से प्रकाश फैलता है, ऐसे ही शक्तिवान बनो। कुमारों को कोई न कोई काम जरुर चाहिए, कुमार अगर फ्री हुए ता खिटखिट हो जायेगी। कुमार बिजी रहे तो स्व का भी कल्याण, विश्व का भी कल्याण। तो विघ्नविनाशक बन वायुमण्डल बनाने में बिजी रहो। अपनी विशेषता को इस कार्य में लगाओ। **एक-एक कुमार अनेकों को संजीवनी बूटी देने वाले महावीर अर्थात् मूर्छित को महावीर सुरजीत करने वाले हो। तो सदा अपना यह आक्युपेशन याद रखो।** जैसे लौकिक आक्युपेशन नहीं भूलता ऐसे यह अलौकिक आक्युपेशन भी सदा याद रहे। संगमयुग पर बाप द्वारा जो भी टाइटल मिले हैं उनकी स्मृति में रहो। टाइटल याद आने से स्वत: ही ज्ञान और ज्ञानदाता दोनों की याद आ जायेंगी।

(29-10-1981)

कुमारों को सदा यह स्मृति रहे कि हम कुमार नहीं लेकिन ब्रह्माकुमार हैं, रूहानी सेवाधारी हैं। सेवाधारी अर्थात् स्वयं सम्पन्न स्वरुप होकर औरों को देने वाले। तो सदा अपने को सर्व खजानों से सम्पन्न अनुभव करते हो? सेवाधारी समझ कर सेवा करेंगे तो सफलतामूर्त होंगे। **सेवा की विशेषता ही है सदा नम्रचित। निमित्त और नम्रचित यह दोनों विशेषताएं सेवा में सफलता स्वरुप बनाती हैं।** कुमार सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले होते हैं। लेकिन आगे बढ़ते हुए निमित्त और नम्रचित की विशेषता नहीं होगी तो सेवा करेंगे, मेहनत करेंगे सफलता कम दिखाई देगी। तो कुमार सेवा में तो होशियार हो ना? सभी प्लैनिंग बुद्धि हो। जैसे सेवा की भाग दौड़ में होशियार हो वैसे इन दो विशेषताओं में भी होशियार बनो। **विशेषताओं सहित विशेष सेवाधारी बनो।**

भी कोई अपने तरफ आकर्षित करे लेकिन महावीर आत्मायें एक बाप के सिवाए कहाँ भी आकर्षित नहीं हो सकती। ऐसे बहादुर हो। कई रूप से माया अपना बनाने का प्रयत्न तो करेगी लेकिन निश्चय बुद्धि विजयी। घबराने वाले नहीं। अच्छा है।

वाह मेरी श्रेष्ठ तकदीर - वस यही सदा स्मृति रखना। हमारे जैसा कोई हो नहीं सकता-यह नशा रखो। जहाँ ईश्वरीय नशा होगा वहाँ माया से परे रहेंगे। सेवा में तो सदा बिजी रहते हो ना! यह भी जरूरी है। जितना सेवा में बिजी रहेंगे उतना सहजयोगी रहेंगे लेकिन याद सहित सेवा हो तो सेफ्टी है। याद नहीं तो सेफ्टी नहीं।

(2) कुमार सदा निर्विघ्न हो ना? माया आकर्षित तो नहीं करती? कुमारों को माया अपना बनाने की कोशिश बहुत करती है। माया को कुमार बहुत परन्द आते हैं। वह समझती है मेरे बन जाएँ। लेकिन आप सब तो बहादुर हो ना! माया के मुरीद नहीं, माया को चेलेन्ज करने वाले। आधा कल्प माया के मुरीद रहे, मिला क्या? सब कुछ गँवा दिया। इसलिए अभी प्रभू के बन गये। प्रभू का बनना अर्थात् स्वर्ग के अधिकार को पाना। तो सभी कुमार विजयी कुमार हैं। देखना, कच्चे नहीं होना। माया को कुमारों से एकस्ट्रा प्यार है इसलिए चारों ओर से कोशिश करती है मेरे बन जाएँ। लेकिन आप सबने संकल्प कर लिया। जब बाप के हो गये तो निस्फुरने हो गये। सदा निर्विघ्न भव, उड़ती कला भव ।

(3) कुमार-सदा समर्थ। जहाँ समर्थी है वहाँ प्राप्ति है। सदा सर्व प्राप्ति स्वरूप। नालेजफुल होने के कारण माया के भिन्न-भिन्न रूपों को जानने वाले। इसलिए अपने भाग्य को आगे बढ़ाते रहो। **सदा एक ही बात पक्की करो कि कुमार जीवन अर्थात् मुक्त जीवन। जो जीवनमुक्त है वह संगमयुग की प्राप्ति युक्त होगा। सदा आगे बढ़ते रहो और बढ़ाते रहो। कुमारों को तो सदा खुशी में नाचना चाहिए-वाह कुमार जीवन, वाह भाग्य, वाह ड्रामा! वाह बावा....यही गीत गाते रहो।** खुशी में रहो तो कमजोरी आ नहीं सकती। सेवा और याद दोनों से शक्ति भरते रहो। कुमार जीवन हल्की जीवन है। इस

वरदानी स्वरुप से शुभ भावना और शुभ कामना से बाप का बनाना है। इसी विधि द्वारा सदा सिद्धि को प्राप्त करना है। जहाँ श्रेष्ठ विधि है वहाँ सिद्धि जरुर है। कुमार अर्थात् सदा अचल। हलचल में आने वाले नहीं। अचल आत्मायें औरों को भी अचल बनाती हैं।

(5) सभी विजयी कुमार हो ना? जहाँ बाप साथ है वहाँ सदा विजय है। सदा बाप के साथ के आधार से कोई भी कार्य करेंगे तो मेहनत कम और प्राप्ति ज्यादा अनुभव होगी। बाप से थोड़ा सा भी किनारा किया तो मेहनत ज्यादा प्राप्ति कम। तो मेहनत से छूटने का साधन है - बाप का हर सेकण्ड हर संकल्प में साथ हो। इस साथ से सफलता हुई पड़ी है। ऐसे बाप के साथी हो ना? जो बाप की आज्ञा है उस आज्ञा के प्रमाण कदम हों। बाप के कदम के पीछे कदम हो। यहाँ कदम रखें या न रखें, राइट है या रांग है, यह सोचने की भी जरुरत नहीं। नया कोई रास्ता हो तो सोचना भी पड़े। लेकिन जब कदम पर कदम रखना है तो सोचने की बात नहीं। सदा बाप के कदम पर कदम रख चलते चलो। तो मंजिल समीप ही है। बाप कितना सहज करके देते हैं - श्रीमत ही कदम है। श्रीमत के कदम पर कदम रखो। तो मेहनत से सदा छूटें रहेंगे। सर्व सफलता अधिकार के रुप में होगी। छोटे कुमार भी बहुत सेवा कर सकते हैं। कभी भी मस्ती नहीं करना, आप की चलन, बोल चाल ऐसा हो जो सब पूछें कि यह किस स्कूल में पढ़ने वाले हैं। तो सेवा हो जायेगी ना। अच्छा -

(11-05-1984)

कुमारों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

(1)कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है, कुमार जीवन में बाप के बन गये ऐसी अपनी श्रेष्ठ तकदीर देख सदा हर्षित रहो और औरों को भी हर्षित रहने की विधि सुनाते रहो। सबसे निर्बन्धन कुमार और कुमारियाँ हैं। कुमार जो चाहें वह अपना भाग्य बना सकते हैं। हिम्मत वाले कुमार हो ना! कमजोर कुमार तो नहीं। कितना

नहीं तो टैम्प्रेरी टाइम की सफलता तो होगी लेकिन चलते-चलते थोड़े टाइम के बाद कनफ्युजड हो जायेंगे। यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह दीवार आ जायेगी।

तो सदा यह दो बातें स्मृति में रखना। इससे सर्विस में फास्ट और फर्स्ट हो जायेंगे। **कुमारों को सेवा तो करनी है लेकिन मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहकर करनी है फिर देखो सफलता हुई पड़ी है।**

कुमारों को सब प्रकार के चांस हैं, सेवा करने में भी चांस, पुरुषार्थ में आगे जाने का भी चांस और साथ-साथ अपने परिवार को आगे बढ़ाने का चांस है। **कुमार जीवन लक्की जीवन है। कुमार अर्थात् सदा स्वतन्त्र। किसी भी प्रकार के बंधन के वश नहीं। ऐसे स्वतन्त्र अनुभव करते हो ना? स्वयं के व्यर्थ संकल्प भी एक बंधन है, यह बंधन भी उड़ती कला से नीचे ले आते हैं। तो निर्बन्धन कुमार। व्यर्थ संकल्प भी समाप्त। निर्बन्धन आत्मा ही तीव्रगति में जा सकती है। बापदादा को कुमारों के ऊपर नाज़ है कि कुमार अपने जीवन को कितना श्रेष्ठ बना रहे हैं। सदा इसी स्मृति में रहो कि हमारे जैसा भाग्यवान कोई नहीं।** कुमारों का अपना भाग्य, कुमारियों का अपना। कुमारियाँ स्वतन्त्र होकर सेवा नहीं कर सकती। कुमार तो कहां भी अकेले जाकर सेवा कर सकते हैं। कुमारों को क्या बंधन है। कुमारियाँ तो फिर भी आजकल की दुनियां के हिसाब से बंधन में हैं, कुमार तो आलराउन्ड सेवा कर सकते हैं।

कुमार हैं डबल लाइट। किसी भी प्रकार का बोझ नहीं। न संकल्पों का बोझ, न संबंध सम्पर्क का बोझ। कुमार हैं ही निर्बन्धन, क्योंकि नालेजफुल हो गये। नालेजफुल व्यर्थ की तरफ कभी भी जा नहीं सकते। व्यर्थ संकल्प भी नालेजफुल के आगे आ नहीं सकता। संकल्प में भी शक्तिवान, कर्म में भी शक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तो सदा ऐसे अनुभव करते हो कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं? क्योंकि कुमारों के पीछे माया चक्र बहुत लगाती है। माया को भी कुमार कुमारियाँ

अच्छे लगते हैं। जैसे बाप को बहुत प्रिय हो, ऐसे माया को भी प्रिय हो। इसलिए माया से सावधान रहना। सदा अपने को कम्बाइन्ड सम-झना, अकेला नहीं, युगल साथ है। सदा कम्बाइन्ड समझेंगे तो माया आ नहीं सकती।

(18-11-1981)

कुमारों से :- कुमार ग्रुप अर्थात् डबल स्वतन्त्र। एक लौकिक जिम्मेवारी से स्वतन्त्र और दूसरा आत्मा सर्व बन्धनों से स्वतन्त्र। माया के बन्धन और लौकिक बन्धन से भी स्वतन्त्र। ऐसे स्वतन्त्र हो? डबल स्वतन्त्र आत्मायें डबल सेवा भी कर सकती हैं। क्योंकि कुमारों को स्वतन्त्र होने के कारण समय बहुत है। तो समय के खजाने से अनेकों को सम्पत्तिवान बना सकते हो। सबसे बड़े से बड़ा खजाना संगमयुग का समय है। तो कुमार ग्रुप अर्थात समय के खजाने सम्पन्न और समय होन के कारण औरों की सेवा में भी सम्पन्न् बन सकते हो। सेवा की सबजेक्ट में भी 100 परसेन्ट ले सकते हो। **सदा बन्धनमुक्त अर्थात् सदा योगयुक्त। संसार ही बाप हो गया ना। कुमारों का संसार क्या हैं? बापदादा। औरों का संसार तो हद भी है लेकिन आप लोगों का एक ही बेहद का संसार है। तो सहजयोगी भी हो क्योंकि संसार में ही बुद्धि जायेगी ना। संसार ही बाप है तो बुद्धि बाप में ही जायेगी। तो कुमारों को सहजयोगी बनने की लिफ्ट है।**

तो अब अशान्त आत्माओं को शान्ति देना, भटकी हुई आत्माओं को ठिकाना देना, यह बड़े से बड़ा पुण्य करते रहो। जैसे प्यासी आत्मा को पानी पिलाना पुण्य है वैसे यह सेवा करना अर्थात् पुण्य आत्मा बनना। तो किसी भी अशान्त आत्मा को देख तरस आता है ना। रहमदिल बाप के बच्चे हो तो सदा पुण्य का काम करते रहो।

(31-12-1981)

ही है - व्यर्थ को समाप्त करने वाले। व्यर्थ का खाता समाप्त और समर्थ का खाता सदा जमा करने वाले। कभी व्यर्थ तो नहीं चलता? व्यर्थ संकल्प या व्यर्थ बोल या व्यर्थ समय। **अगर सेकण्ड भी गया तो कितना गया! संगम पर सेकण्ड कितना बड़ा है। सेकण्ड नहीं लेकिन एक सेकण्ड एक जन्म के बराबर है। एक सेकण्ड नहीं गया, एक जन्म गया। ऐसे महत्व को जानने वाले समर्थ आत्मायें हो ना। सदा यह स्मृति रहे कि हम समर्थ बाप के बच्चे हैं, समर्थ आत्मायें हैं। समर्थ कार्य के निमित्त हैं। तो सदा ही उड़ती कला का अनुभव करते रहेंगे।** कमज़ोर उड़ नहीं सकते। समर्थ सदा उड़ते रहेंगे। तो कौन सी कला वाले हो? उड़ती कला या चढ़ती कला? चढ़ने में सांस फूल जाता है। थकते भी हैं, साँस भी फूलता है। और उड़ती कला वाले सेकण्ड में मंजिल पर सफलता स्वरुप बने। चढ़ती कला है तो जरुर थकेंगे, साँस भी फूलेगा - क्या करें, केसे करें, यह साँस फूलता है। उड़ती कला में सबसे पार हो जाते। टचिंग आती है कि यह करें, यह हुआ ही पड़ा है। तो सेकण्ड में सफलता की मंजिल को पाने वाले - इसको कहा जाता है समर्थ आत्मा। **बाप को खुशी होती है कि सभी उड़ती कला वाले बच्चे हैं, मेहनत क्यों करें। बाप तो कहेंगे - बच्चे मेहनत से बचे रहें। जब बाप रास्ता दिखा रहा है - डबल लाइट बना रहा है तो फिर नीचे क्यों आ जाते हो? क्या होगा, कैसे होगा, यह बोझ है। सदा कल्याण होगा, सदा श्रेष्ठ होगा, सदा सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है, इस स्मृति से चलो।**

(4) कुमारों को पेपरे देने के लिए युद्ध करनी पड़ती है। पवित्र बनना है, यह संकल्प किया तो माया युद्ध करना शुरु कर देती है। **कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है। महान आत्मायें हैं। अभी कुमारों को कमाल करके दिखानी है। सबसे बड़े ते बड़ी कमाल है - बाप के समान बन बाप के साथी बनाना। जैसे आप स्वयं बाप के साथी बने हो ऐसे औरों को भी साथी बनाना है।** माया के साथियों को बाप के साथी बनाना है - ऐसे सेवाधारी। अपने

ना! जब भक्तों को भी भक्ति का फल देने वाले हैं तो जो जीवन का साथी बनने वाले हैं उनको साथ नहीं देंगे? कुमार कम्बाइण्ड तो बने लेकिन इस कम्बाइन्ड में वेफिकर बादशाह वन गये। कोई झंझट नहीं, वेफिकर हैं। आज वच्चा वीमार हुआ, आज वच्चा स्कूल नहीं गया... या कोई बोझ नहीं। सदा निर्बन्धन। एक के बन्धन में बंधने से अनेक बन्धनों से छूट गये। खाओ पियो मौज करो और क्या काम! अपने हाथ से बनाया और खाया। जो चाहो वह खाओ। स्वतन्त्र हो। कितने श्रेष्ठ वन गये। दुनिया के हिसाब से भी अच्छे हो। समझते हो ना कि दुनिया के झंझटों से वच गये। आत्मा की बात छोड़ो, शरीर के कर्म बन्धन के हिसाब से भी वच गये। ऐसे सेफ हो। कभी दिल तो नहीं होती कि कोई ज्ञानी साथी बना दें? कोई कुमारी का कल्याण कर दें? ऐसी दिल होती है? यह कल्याण नहीं है - अकल्याण है। क्यों? एक बन्धन बंधा और अनेक बन्धन शुरु हुए। यह एक बन्धन अनेक बन्धन पैदा करता। इसलिए मदद नहीं मिलेगी। बोझ होगा। देखने में मदद है लेकिन है अनेक बातों का बोझ। जितना बोझ कहो उतना बोझ है। तो अनेक बोझ से बच गये। कभी स्वप्न में भी नहीं सोचना। नहीं तो ऐसा बोझ अनुभव करेंगे जो उठना ही मुश्किल। स्वतन्त्र रहकर बन्धन में बंधे तो पदमगुणा बोझ होगा। वह अनजान से बिचारे बंध गये, आप जानबूझकर बंधेंगे तो और पश्चाताब का बोझ होगा। कोई कच्चा तो नहीं है? कच्चे की गति नहीं होती। न यहाँ का रहता न वहाँ का रहता। आपकी तो सद्गति हो गई है ना। सद्गति माना श्रेष्ठ गति। थोड़ा संकल्प आता हैं? फोटो निकल रहा है। अगर कुछ नीचे ऊपर किया तो फोटो आयेगा। जितने पक्के बनेंगे उतना वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ है।

(3) सभी समर्थ कुमार हो ना! समर्थ हो? सदा समर्थ आत्मायें जो भी संकल्प करेंगी, जो भी बोल बोलेंगी, कर्म करेंगी वह समर्थ होगा। समर्थ का अर्थ

रोब को त्याग, रूहाब को धारण करने वाले सच्चे सेवाधारी बनो:- सभी कुमार सदा रूहानियत में रहते हो? रोब में तो नहीं आते? यूथ को रोब जल्दी आ जाता है। यह समझते हैं हम सब कुछ जानते हैं, सब कर सकते हैं। जवानी का जोश रहता है। लेकिन **रूहानी यूथ अर्थात् सदा रूहाब में रहने वाले। सदा नम्रचित्त। क्योंकि जितना नम्रचित्त होंगे उतना निर्माण करेंगे। जहाँ निर्मान होंगे वहाँ रोब नहीं होगा, रूहानियत होगी। जैसे बाप कितना नम्रचित्त बनकर आते हैं, ऐसे फ़ालो फ़ादर। अगर ज़रा भी सेवा में रोब आता तो वह सेवा समाप्त हो जाती है।**

(03-04-1982)

कुमारों के साथ :- (1) कुमार जीवन में बाप का बनना - कितने भाग्य की निशानी है! ऐसे अनुभव करते हो कि हम कितने बन्धनों में जाने से बच गये? कुमार जीवन अर्थात् अनेक बन्धनों से मुक्त जीवन। किसी भी प्रकार का बन्धन नहीं। देह के भान का भी बन्धन न हो। इस देह के भान से सब बन्धन आ जाते हैं। तो **सदा अपने को आत्मा भाई-भाई हैं - ऐसे ही समझकर चलते रहो। इसी स्मृति से कुमार जीवन सदा निर्विघ्न आगे बढ़ सकती है।** संकल्प वा स्वप्न में भी कोई कमज़ोरी न हो इसको कहा जाता है - विघ्न विनाशक। **बस चलते फिरते यह नैचरल स्मृति रहे कि हम आत्मा हैं। देखो तो भी आत्मा को, सुनो तो भी आत्मा होकर। यह पाठ कभी भी न भूले।** कुमार सेवा में तो बहुत आगे चले जाते हैं लेकिन सेवा करते अगर स्व की सेवा भूले तो फिर विघ्न आ जाता है। कुमार अर्थात् हार्ड वर्कर तो हो ही लेकिन निर्विघ्न बनना है। स्व की सेवा और विश्व की सेवा दोनों का बैलेन्स हो। सेवा में इतने बिजी न हो जाओ जो स्व की सेवा में अलबेले हो जाओ। क्योंकि कुमार जितना अपने को आगे बढ़ाने चाहें बढ़ा सकते हैं। कुमारों में शारीरिक शक्ति भी है और साथ-साथ दृढ़ संकल्प की भी शक्ति है इसलिए जो चाहे कर सकते हैं,

इन दोनों शक्तियों द्वारा आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन बैलेंस की कला चढ़ती कला में ले जाएगी। स्व सेवा और विश्व की सेवा, दोनों का बैलेंस हो तो निर्विघ्न वृद्धि होती रहेगी।

(2) कुमार सदा अपने को बाप के साथ समझते हो? बाप और मैं सदा साथ-साथ हैं, ऐसे सदा के साथी बने हो? वैसे भी जीवन में सदा कोई न कोई साथी बनाते हैं। तो आपके जीवन का साथी कौन? (बाप) ऐसा सच्चा साथी कभी भी मिल नहीं सकता। कितना भी प्यारा साथी हो लेकिन देहधारी साथी सदा का साथ नहीं निभा सकते और यह रूहानी सच्चा साथी सदा साथ निभाने वाला है। तो **कुमार अकेले हो या कम्बाइन्ड हो? (कम्बाइन्ड) फिर और किसको साथी बनाने का संकल्प तो नहीं आता है? कभी कोई मुश्किलात आये, बीमारी आये, खाना बनाने की मुश्किल हो तो साथी बनाने का संकल्प आयेगा या नहीं? कभी भी ऐसा संकल्प आये तो इसे 'व्यर्थ संकल्प' समझ सदा के लिए सेकण्ड में समाप्त कर लेना। क्योंकि जिसे आज साथी समझकर साथी बनायेंगे कल उसका क्या भरोसा! इसलिए विनाशी साथी बनाने से फायदा ही क्या! तो सदा कम्बाइन्ड समझने से और संकल्प समाप्त हो जायेंगे क्योंकि सर्वशक्तिवान साथी है।** जैसे सूर्य के आगे अंधकार ठहर नहीं सकता वैसे सर्वशक्तिवान के आगे माया ठहर नहीं सकती। तो सब मायाजीत हो जायेंगे।

(08-04-1982)

कुमारों प्रति :- कुमार जीवन में एनर्जी बहुत होती है। कुमार जो चाहे वह कर सकते हैं। इसलिए बापदादा कुमारों को देख विशेष खुश होते हैं कि अपनी एनर्जी डिस्ट्रक्शन के बजाए कनस्ट्रक्शन के कार्य में लगायें। एक-एक कुमार विश्व को नया बनाने में अपनी एनर्जी को लगा रहे हैं। कितना श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं। एक कुमार 10 का कार्य कर सकते हैं। इसलिए **कुमारों पर बापदादा**

कहाँ लगाना है यह समझ मिल गई। इसी समझ द्वारा सदा श्रेष्ठ कार्य करो। ऐसे श्रेष्ठ कार्य में सदा रहने वाले,श्रेष्ठ प्राप्ति के अधिकारी बन जाते हैं। ऐसे अधिकारी हो? अनुभव करते हो कि श्रेष्ठ प्राप्ति हो रही है? या होनी है? हर कदम में पदमों की कमाई जमा हो रही है या अनुभव है ना? जिसकी एक कदम में पदमों की कमाई जमा हो वह कितने श्रेष्ठ हुए! जिसकी इतनी जमा सम्पत्ति हो उसको कितनी खुशी होगी! आजकल के लखपति, करोड़पति को भी विनाशी खुशी रहती है आपकी अविनाशी प्रापर्टी है। **श्रेष्ठ कुमार की परिभाषा समझते हो? सदा हर शक्ति श्रेष्ठ कार्य में लगाने वाले।** व्यर्थ खाता सदा के लिए समाप्त हुआ श्रेष्ठ खाता जमा हुआ? या दोनों चलता है? एक खत्म हुआ। अभी दोनों चलाने का समय नहीं है। अभी वह सदा के लिए खत्म। दोनों होंगे तो जितना जमा होना चाहिए उतना नहीं होगा। गँवाया नही, जमा हुआ तो कितना जमा होगा! तो व्यर्थ खाता समाप्त हुआ, समर्थ खाता जमा हुआ।

(2) कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन है। कुमार जीवन में जो चाहे वह कर सकते हो। चाहे अपने को श्रेष्ठ बनायें, चाहे अपने को नीचे गिरायें। यह कुमार जीवन ही ऊंचा या नीचा होने वाली है। ऐसी जीवन में आप बाप के बन गये। विनाशी जीवन के साथी हैं कर्मबन्धन में बंधने के बजाए सच्चा जीवन का साथी ले लिया। कितने भाग्यवान हो! अभी आये तो अकेले आये या कम्बाइन्ड होकर आये? (कम्बाइन्ड) टिकेट तो नहीं खर्च की ना? तो यह भी बचत हो गई। वैसे अगर शरीर के साथी को लाते तो टिकेट खर्च करते, उनका सामान भी उठाना पड़ता और कमाकर रोज खिलाना भी पड़ता। यह साथी तो खाता भी नहीं सिर्फ वासना लेते हैं। रोटी कम् नहीं हो जाती और ही शक्ति भर जाती है। तो बिना खर्चा, बिना मेहनत के और साथी भी अविनाशी, सहयोग भी पूरा मिलता है। मेहनत नहीं लेते और सहयोग देते हैं। कोई मुश्किल कार्य आये, याद किया और सहयोग मिला। ऐसे अनुभवी हो

कुमारों से:- कुमार जीवन में बच जाना यह सबसे बड़ा भाग्य है। कितने झंझटों से बच गये! कुमार अर्थात बन्धमुक्त आत्मायें। कुमार जीवन बन्धनमुक्त जीवन है। लेकिन कुमार जीवन में भी फ्री रहना माना बोझ उठाना। **कुमारों के प्रति बापदादा का डायरेक्शन है - लौकिक में रहते अलौकिक सेवा करनी है। लौकिक सेवा सम्पर्क बनाने का साधन है। इसमें बिजी रहो तो अलौकिक सेवा कर सकेंगे। लौकिक में रहते अलौकिक सेवा करो। तो बुद्धि भारी नहीं रहेगी। सबको अपना अनुभव सुनाकर सेवा करो।** लौकिक सेवा, सेवा का साधन समझकर करो तो लौकिक साधन बहुत सेवा का चांस दिलायेगा। लक्ष्य ईश्वरीय सेवा का है लेकिन यह साधन है। ऐसे समझकर करो। कुमार अर्थात् हिम्मत वाले। जो चाहो वह कर सकते हैं। इसलिए बापदादा सदा साधनों द्वारा सिद्ध को प्राप्त करने की राय देते हैं। **कुमार अर्थात् निरन्तर योगी। क्योंकि कुमारों का संसार ही एक बाप है। जब बाप ही संसार है तो संसार के सिवाए बुद्धि और कहाँ जायेगी। जब एक ही हो गया तो एक की ही याद रहेगी ना! और एक को याद करना बहुत सहज है। अनेकों से तो छूट गये। एक में ही सब समाये हुए हैं!** सदा हर कर्म से सेवा करनी है, दृष्टि से, मुख से-सेवा ही सेवा। जिससे प्यार होता है उसे प्रत्यक्ष करने का उमंग होता है। हर कदम में बाप और सेवा सदा साथ रहे। अच्छा -

(10-04-1984)

कुमारों के अलग-अलग ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

(1) सभी श्रेष्ठ कुमार हो ना? साधारण कुमार नहीं, श्रेष्ठ कुमार! तन की शक्ति, मन की शक्ति सब श्रेष्ठ कार्य में लगाने वाले। कोई भी शक्ति विनाशी कार्य में लगाने वाले नहीं। विकारी कार्य है विनाशकारी कार्य और श्रेष्ठ कार्य है - ईश्वरीय कार्य। तो सर्व शक्तियों को ईश्वरीय कार्य में लगाने वाले श्रेष्ठ कुमार। कहाँ व्यर्थ के खाते में तो कोई शक्ति नहीं लगाते हो? अभी अपनी शक्तियों को

को नाज़ है। कुमार जीवन में अपनी जीवन सफल कर ली। ऐसी विशेष आत्मायें हो ना! बहुत अच्छा, समय पर जीवन का फैसला किया। फैसला करने में कोई गलती तो नहीं की है ना! पक्का है ना! कोई गलत कहकर खींचे तो? चाहे दुनिया की अक्षौणी आत्मायें एक तरफ हो जाएं, आप अकेले हो, फिर क्या होगा? बोलो, मैं अकेला नही हूँ, बाप मेरे साथ है। बापदादा खुश होते हैं - स्वयं की भी जीवन बनाई और अनेको की जीवन बनाने के निमित्त बने हो।

(21-02-1983)

वृक्षपति दिवस की मुबारक। वृक्षपति दिवस पर सदाकाल के लिए बृहस्पति की दशा कायम रहे यही सदा स्मृति स्वरूप रहना। अब तो सभी ने वायदा पक्का किया है ना! कुमार ग्रुप तैयार हो गया तो आवाज बुलन्द फैल जायेगा। गवर्मेन्ट तक पहुँच जायेगा। लेकिन अविनाशी रहेंगे तो! गड़बड़ नहीं करना। उमंग उत्साह, हिम्मत अच्छी है, जहाँ हिम्मत है वहाँ मदद तो है ही।

(21-04-1983)

रूहानी पर्सनेलिटी

कुमारों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा के उच्चारे हुए मधुर महावाक्य

आज बापदादा विश्व की सर्व आत्माओं प्रति प्रत्यक्ष जीवन का प्रमाण देने वाले बच्चों से मिलने आये हैं। कुमार सो ब्रह्माकुमार, तपस्वी कुमार, राजऋषि कुमार, सर्व त्याग से भाग्य प्राप्त करने वाले कुमार ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं का आज विशेष संगठन है। कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन गाई जाती है। लेकिन ब्रह्माकुमार डबल शक्तिशाली कुमार है। एक तो शारीरिक शक्ति दूसरी आत्मिक शक्ति। साधारण कुमार शारीरिक शक्ति वा विनाशी आक्यूपेशन की शक्ति वाले हैं। ब्रह्माकुमार अविनाशी ऊँचे ते ऊँचे मास्टर सर्वशक्तिवान के आक्यूपेशन के शक्तिशाली

हैं। **आत्मा पवित्रता की शक्ति से जो चाहे वह कर सकती है।** ब्रह्माकुमारों का संगठन विश्व परिवर्तक संगठन है। सभी अपने को ऐसे शक्तिशाली समझते हो? **अपने को पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया हुआ अधिकारी आत्मा समझते हो? ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है - पवित्र कुमार । ब्रह्मा बाप ने दिव्य जन्म देते पवित्र भव, योगी भव यही वरदान दिया। ब्रह्मा बाप ने जन्मते ही बड़ी माँ के रूप में पवित्रता के प्यार से पालना की। माँ के रूप से सदा पवित्र बनो, योगी बनो, श्रेष्ठ बनो बाप समान बनो, विशेष आत्मा बनो, सर्वगुण मूर्त्त बनो, ज्ञान मूर्त्त बनो, सुख शान्ति स्वरूप बनो, हर रोज़ यह लोरी दी। बाप के याद की गोदी में पालन किया। सदा खुशियों के झूले में झुलाया। ऐसे मात पिता के श्रेष्ठ बच्चे - ब्रह्माकुमार वा कुमारी हैं। ऐसा स्मृति का समर्थ नशा रहता है!** ब्रह्माकुमार के विशेष जीवन के महत्व को सदा याद रखते हो? सिर्फ नामधारी ब्रह्माकुमार तो नहीं? अपने आपको श्रेष्ठ जीवनधारी ब्रह्माकुमार समझते हो? सदा यह याद रहता है कि विश्व की विशाल स्टेज पर पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी हैं। वा सिर्फ घर में वा सेवाकेन्द्र पर वा दफ्तर में पार्ट बजाने वाले हैं! हर कर्म करते विश्व की आत्मायें हमें देख रही हैं यह स्मृति में रहता है? विश्व की आत्मायें जिस नज़र से आप सबको देखती हैं यही विशेष पार्टधारी अर्थात् हीरो पार्टधारी हैं, उसी प्रमाण हर कर्म करते रहते हो? वा यह याद रहता कि साधारण रूप से आपस में बोल रहे हैं, चल रहे हैं!

ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है सदा प्युरिटी की पर्सनेलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को प्युरिटी की तरफ आकर्षित करेगी। और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी की रायल्टी देने से छुड़ायेगी। रायल्टी के दोनों ही अर्थ होते हैं। इसी रायल्टी के अनुसार भविष्य रायल फैमली में आ सकेंगे। तो चेक करो ऐसी रॉयल्टी और पर्सनेलिटी जीवन में अपनाई है? यूथ ग्रुप पर्सनेलिटी को ज़्यादा

तो नहीं समझते हो। ऐसे तो नहीं कोई सुनने वाला नहीं, कोई बोलने वाला नहीं... बीमार पड़ेंगे तो क्या करेंगे? दूसरा साथी याद तो नहीं आयेगा! दूसरा साथी लायेंगे तो उसका सुनना भी पड़ेगा, खिलाना भी पड़ेगा। सम्भालना भी पड़ेगा। ऐसा बोझ उठाने की ज़रूरत ही क्या है। सदा हल्के रहो। सदा युगल रूप हो, दूसरी युगल क्या करेंगे? कभी संकल्प आता है बीमार पड़ते हो तब आता है? जिस सम्बन्ध की याद आये उसी सम्बन्ध से बाप को याद करो, तो बीमारी में सोये सोये भी ऐसा अच्छा खाना बना लेंगे जैसे दूसरा बना गया। तो सदा साथ रहना, अकेला हूँ नहीं, कम्बाइण्ड हूँ। आप और बाप दोनों कम्बाइण्ड हो, अलग कोई कर नहीं सकता, यह चैलेन्ज करो। चैलेन्ज करने वाले हो न कि घबराने वाले।

(23-05-1983)

कुमारों से :- कुमार अर्थात् सर्व शक्तियों को, सर्व खजानों को जमा कर औरों को भी शक्तिवान बनाने की सेवा करने वाले। सदा इसी सेवा में बिजी रहते हो ना। बिजी रहेंगे तो उन्नति होती रहेगी। अगर थोड़ा भी फ्री होंगे तो व्यर्थ चलेगा। **समर्थ रहने के लिए बिजी रहो। अपना टाइम-टेबल बनाओ। जैसे शरीर का टाइम-टेबल बनाते हैं ऐसे बुद्धि का भी टाइम-टेबल बनाओ। बुद्धि से बिजी रहने का प्लैन बनओ। तो बिजी रहने से सदा उन्नति को पाते रहेंगे। आजकल के समय प्रमाण कुमार जीवन में श्रेष्ठ बनना बहुत बड़ा भाग्य है। हम श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हैं, यही सदा सोचो।** याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहे। बैलेन्स रखने वालों को सदा ब्लैसिंग मिलती रहेगी।

(08-04-1984)

रहे हैं। अभी समय है, समय के प्रमाण सदा के महादानी बनो। वाचा नहीं तो मंसा, मंसा नहीं तो कर्मणा। कर्म द्वारा किसी आत्मा को परिवर्तन करना यह है कर्मणा। सम्पर्क द्वारा भी किसी आत्मा को परिवर्तन कर सकते हो। ऐसे सेवाधारी बनो। रोज रिजल्ट निकालो। मंसा, वाचा, कर्मणा क्या सेवा की, कितनों की सेवा की। किस उमंग उत्साह से सेवा की? यह रोज़ की रिजल्ट स्वयं ही निकालो। स्वयं और सेवा दोनों की रफ़्तार में आगे बढ़ो। अब कोई नवीनता करो। सेन्टर खोला, गीता पाठशाला खोली, मेला किया यह तो पुरानी बातें हो गई, नया कुछ निकालो। लक्ष्य रखो, अपने में और सेवा में कोई न कोई नवीनता ज़रूर लानी है। नहीं तो कभी थक जायेंगे, कभी बोर हो जायेंगे। नवीनता होगी तो सदा उमंग उत्साह में रहेंगे। अच्छा।

(11-05-1983)

अगर यज्ञ सेवा सच्ची दिल से करते हैं तो एक सेकण्ड का भी बहुत फल है। आप लोग तो कितने दिन सेवा में रहे हो। तो फलों के भण्डार इकट्ठे हो गये। इतने फल जमा हो गये जो 21 पीढ़ी तक वह फल खाते ही रहेंगे। सेवाधारी वहाँ जाकर माया के वश नहीं हो जाना। सदा सेवा में बिजी रहना। मंसा से शुद्ध संकल्प की सेवा और सम्पर्क सम्बन्ध वा वाणी द्वारा परिचय देने की सेवा। सदा ही सेवा में बिजी रहना। सेवा का पार्ट अविनाशी है। चाहे यहाँ रहो चाहे कहीं भी जाओ, सेवाधारी के साथ सदा ही सेवा है। सदा के सेवाधारी हो। सेवा में बिजी रहेंगे तो माया नहीं आयेगी। जब खाली स्थान होता है तो दूसरे आते हैं। मच्छर भी आयेंगे, खटमल भी आयेंगे। इसलिए सदा बिजी रहो तो माया आयेगी ही नहीं। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। माया नमस्कार करके चली जायेगी। ऐसे बहादुर बनकर जा रहे हो! ऐसे तो नहीं वहाँ जाकर कहेंगे, आज क्रोध आ गया, आज लोभ, मोह आ गया...माया पेपर लेगी, वह भी सुन रही है कि यह वायदा कर रहे हैं। **जहाँ बाप है वहाँ माया क्या करेगी। सदा बाप साथ है या अलग है। कुमार अकेले**

बनाती है ना! तो अपनी रूहानी पर्सनैलिटी अविनाशी पर्सनैलिटी अपनाई है? जो भी देखे हरेक ब्रह्माकुमार और कुमारी से यह पर्सनैलिटी अनुभव करे। शरीर की पर्सनैलिटी वह तो आत्माओं को देहभान में लाती है और प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है। तो विशेष कुमार ग्रुप को अब क्या सेवा करनी है? **एक तो अपने जीवन परिवर्तन द्वारा आत्माओं की सेवा, अपने जीवन के द्वारा आत्माओं को जीयदान देना। स्व-परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करना। अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृत्ति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनैलिटी, रूहानी रायल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनैलिटी की ओर आकर्षित हों। सदा बाप का परिचय देने वाले वा बाप का साक्षात्कार कराने वाले रूहानी दर्पण बन जाओ। जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे। किसने बनाया? बनाने वाला सदा दिखाई दे। जब भी कोई वन्डरफुल वस्तु को देखते हैं वा वन्डरफुल परिवर्तन देखते हैं तो सबके मन से, मुख से यही आवाज़ निकलता है कि किसने बनाई वा यह परिवर्तन कैसे हुआ। किस द्वारा हुआ।** यह तो जानते हो ना। इतना बड़ा परिवर्तन जो कौड़ी से हीरा बन जाए तो सबके मन में बनाने वाला स्वत: ही याद आयेगा। कुमार ग्रुप भाग-दौड़ बहुत करता है। सेवा में भी बहुत भाग दौड़ करते हो ना। लेकिन सेवा के क्षेत्र में भाग दौड़ करते 'बैलेन्स' रखते हो? स्व सेवा और सर्व की सेवा दोनों का बैलेन्स सदा रहता है। बैलेन्स नहीं होगा तो सेवा की भाग दौड़ में माया भी बुद्धि की भाग दौड़ करा देती है।

बैलेन्स से कमाल होती है। बैलेन्स रखने वाले का परिणाम सेवा में भी कमाल होगी। नहीं तो बाहरमुखता के कारण कमाल के बजाए अपने वा दूसरों के भाव स्वभाव की धमाल में आ जाते हो। तो **सदा सर्व की सेवा के साथ-साथ पहले स्व सेवा आवश्यक है। यह बैलेन्स सदा स्व में और सेवा में उन्नति को प्राप्त कराता रहेगा।** कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। कुमार जीवन

के परिवर्तन का प्रभाव जितना दुनिया पर पड़ेगा उतना बड़ों का नहीं। कुमार ग्रुप गवर्मेन्ट को भी अपने परिवर्तन द्वारा प्रभु परिचय दे सकते हो। गवर्मेन्ट को भी जगा सकते हो। लेकिन वह परिक्षा लेंगे। ऐसे ही नहीं मानेंगे। तो ऐसे कुमार तैयार है! गुप्त सी.आई.डी. आपके पेपर लेंगे कि कहाँ तक विकारों पर विजयी बनें हैं। आप सबके नाम गवर्मेन्ट में भेजे? 500 कुमार भी कोई कम थोड़े ही हैं। सबने लेजर में अपना नाम और एड्रेस भरा है ना। तो आपकी लिस्ट भेजें? सभी सोच रहे हैं पता नहीं कौन से सी.आई.डी. आयेंगे! जान बूझ कर क्रोध दिलायेंगे। पेपर तो प्रैक्टिकल लेंगे ना। प्रैक्टिकल पेपर देने लिए तैयार हो? बापदादा के पास सबका हाँ और ना फिल्म की रीति से भर जाता है। यह लक्ष्य रखो कि ऐसा रूहानी आत्मिक शक्तिशाली यूथ ग्रुप बनावें जो विश्व को चैलेन्ज करे कि हम रूहानी यूथ ग्रुप विश्व शान्ति की स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी हैं। और इसी सहयोग द्वारा विश्व परिवर्तन करके दिखायेंगे। समझा क्या करना है। ऐसा पक्का ग्रुप हो। ऐसे नहीं आज चैलेन्ज करे और कल स्वयं ही चेन्ज हो जाएं। तो ऐसा संगठन तैयार करो। मैजारिटी नये-नये कुमार हैं। लेकिन लास्ट सो फास्ट जाकर दिखाओ। बैलेन्स की कमाल से विश्व को कमाल दिखाओ।

(24-4-1983)

दृष्टि तथा वृत्ति परिवर्तन के लिए युक्तियाँ
कुमारों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

आज बापदादा सर्व पुरुषार्थियों का संगठन देख रहे हैं। इसी पुरुषार्थी शब्द में सारा ज्ञान समाया हुआ है। पुरुषार्थी अर्थात् पुरुष अर्थात् रथी। किसका रथी है? किसका पुरुष है? इस प्रकृति का मालिक अर्थात् रथ का रथी। एक ही शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ तो क्या होगा! सर्व कमजोरियों से सहज पार हो जायेंगे। पुरुष प्रकृति के अधिकारी हैं न कि अधीन है। रथी रथ को चलाने वाला है न कि रथ के अधीन हो चलने वाला। अधिकारी सदा सर्वशक्तिवान बाप की

नहीं। शरीर और बुद्धि दोनों से बिजी रहो। बिजीमेन बनो, बिजनेसमेन नही। जैसे कर्म की दिनचर्या सेट करते हो ऐसे बुद्धि की भी दिनचर्या सेट करो। अभी यह सोचना है, यह करना है, दिनचर्या सेट होगी तो उसी प्रमाण बिजी हो जायेंगे। बिजी रहने वाले को किसी भी रूप से माया वार नहीं कर सकती। बुद्धि को बिजी करने के साधन सदा अपनाओ - जैसे शरीर को बिजी करने के साधन हैं, ऐसे बुद्धि से सदा याद में, नशे में बिजी रहो। ऐसी दिनचर्या बनाने आती है? **सदाकाल के लिए नियम बना दो। जैसे और नियम बने हैं, यह भी एक नियम बनाओ, बस करना ही है, इसी दृढ़ निश्चय से जो कमाल करने चाहो वह कर सकते हो। कुमार हैं - बापदादा के कर्त्तव्य के सितारे।** सेवा के निमित्त तो कुमार बनते हैं ना। भागदौड़ भी कुमार करते हैं। जो भी सेवायें होती हैं उसमें कुमारों का विशेष पार्ट होता है - तो विशेष पार्ट लेने वाली विशेष आत्मायें हैं, यह नशा रखो, इसी खुशी में रहो। तो देखेंगे कुमार ग्रुप क्या करके दिखाते हैं। कुछ करके दिखाना, सिर्फ कहकर नहीं। सेवा के उमंग उत्साह वाले हैं, निश्चय बुद्धि है। अचल हैं, हिलने वाले नहीं हैं। ऐसे ही अचल आत्मायें औरों को भी अचल बनाकर दिखाओ।

महादानी बनकर दान करते चलो। जब स्वयं का भण्डारा भरपूर है तो बहुतों को दान देना चाहिए। सेवा को सदा आगे बढ़ाते चलो। ऐसे नहीं आज चांस मिला तो कर लिया, या जब चांस मिलेगा तब कर लेंगे। नहीं। जिसके पास खजाना होता है वह कहीं से भी गरीबों को ढूँढकर भी ढिंढोरा पिटवाकर भी दान जरूर करता है। क्योंकि उसे मालूम है दान करने का पुण्य मिलता है। वह दान तो विनाशी है और स्वार्थ का भी हो सकता है। आप सब तो अविनाशी खज़ानों के महादानी हो। तो सेवा को बढ़ाओ। रेस करो, महादानी बनो। निश्चय से करो, ऐसे नहीं सोचो धरनी ऐसी है। अब समय बदल गया, समय के साथ धरनी भी बदल रही है। पहले के धरनी की जो रिजल्ट थी वह अभी नहीं। समय वायुमण्डल को बदल रहा है। आत्माओं की इच्छा भी बदल रही है, सब आवश्यकता अनुभव कर

बच्चों के, इसको कहा जाता है फ़ालो फ़ादर। जो बाप ने किया है वही रिपीट करना है, कापी करना है। इस कापी करने से फुल मार्क्स मिल जायेंगी। वहाँ कापी करने से मार्क्स कट जाती और यहाँ फुल मार्क्स मिल जाती। तो जो भी संकल्प करो, पहले चेक करो कि बाप समान है? अगर नहीं है तो चेन्ज कर दो। अगर है तो प्रैक्टिकल में लाओ। कितना सहजमार्ग है! जो बाप ने किया वह आप करो। ऐसे सदा बाप को फालो करने वाले ही सदा मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति में स्थित रहते हैं। बाप का वर्सा ही है सर्वशक्तियाँ और सर्वगुण। तो बाप के वारिस अर्थात् सर्वशक्तियों के, सर्वगुणों के अधिकारी। अधिकारी से अधिकार जा कैसे सकते? अगर अलबेले बने तो माया चोरी कर लेगी। माया को भी सबसे अच्छे ग्राहक ब्राह्मण आत्मायें लगती हैं। इसलिए वह भी अपना चांस लेती है। आधा कल्प उसके साथी रहे, तो अपने साथियों को ऐसे कैसे छोड़ेगी। माया का काम है आना, आपका काम है जीत प्राप्त करना, घबराना नहीं। शिकारी के आगे शिकार आता है तो घबरायेंगे क्या? माया आती है तो जीत प्राप्त करो, घबराओ नहीं। अच्छा!

(09-05-1983)

कुमारों में सदा बापदादा की उम्मीदें हैं। कुमार विश्व को बदल सकते हैं। अगर सभी कुमार एक दृढ़ संकल्प वाले बन आगे बढ़ते चलें तो बहुत कमाल कर सकते हैं। कमाल करने वाले कुमार हो ना। देखना, बापदादा के पास आटोमेटिक फोटो निकल जाता है! दृढ़ संकल्प वाले कुमार हो ना। कुमारों में शारीरिक शक्ति भी बहुत है इसलिए डबल कार्य कर सकते हो। स्थापना के कार्य में बहुत अच्छे सहयोगी बन सकते हो। **कुमारों की बुद्धि में एक ही बात सदा रहती है ना कि - मेरा बाबा और मेरी सेवा और कोई बात नहीं। जिनकी बुद्धि में सदा बाबा और सेवा है वह सहज ही मायाजीत बन जाते हैं। सिर्फ कुमारों को एक बात अटेन्शन में रखनी है - सदा अपने को बिजी रखो, खाली**

सर्वशक्तियों के अधिकारी अर्थात् वर्से के अधिकारी वा हकदार है। सर्वशक्तियाँ बाप की प्रापर्टी हैं और प्रापर्टी का अधिकारी हरेक बच्चा है। यह सर्व शक्तियों का राज्य भाग्य बापदादा सभी को जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में देते हैं। जन्मते ही यह स्वराज्य सर्व शक्तियों का, अधिकारी स्वरूप के स्मृति का तिलक, और बाप के स्नेह में समाये हुए स्वरूप के रूप में दिलतख्त, सभी को जन्म लेते ही दिया है। जन्मते ही विश्व कल्याण के सेवा का ताज हर बच्चे को दिया है। तो जन्म के अधिकार का तख्त, तिलक, ताज और राज्य सबको प्राप्त है ना? ऐसे चारों ही प्राप्तियों की प्राप्ति स्वरूप आत्मायें कमजोर हो सकती हैं? क्या यह चार प्राप्तियाँ सम्भाल नहीं सकते हैं? कभी तिलक मिट जाता, कभी तख्त छूट जाता, कभी ताज के बदले बोझ उठा लेते। व्यर्थ कखपन की टोकरी उठा लेते। नाम स्वराज्य है लेकिन स्वयं ही राजा के बदले अधीन प्रजा बन जाते। ऐसा खेल क्यों करते हो? अगर ऐसा ही खेल करते रहेंगे तो सदा के राज्य भाग्य के अधिकार के संस्कार अविनाशी कब बनेंगे! अगर इसी खेल में चलते रहे तो प्राप्ति क्या होगी! जो अपने आदि संस्कार अविनाशी नहीं बना सकते वह आदिकाल के राज्य अधिकारी कैसे बनेंगे। अगर बहुतकाल के योद्धेपन के ही संस्कार रहे अर्थात् युद्ध करते-करते समय बिताया, आज जीत कल हार। अभी-अभी जीत, अभी-अभी हार। सदा के विजयीपन के संस्कार नहीं तो इसको क्षत्रिय कहा जायेगा या ब्राह्मण? ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। क्षत्रिय तो फिर क्षत्रिय ही जाकर बनेगा। देवता की निशानी और क्षत्रिय की निशानी में देखो अन्तर है? यादगार चित्रों में उनको कमान दिखाया है, उनको मुरली दिखाई है। मुरली वाले अर्थात् मास्टर मुरलीधर बन विकारों रूपी सांप को विषैले बनने के बजाए विष समाप्त कर, शैया बना दी। कहाँ विष वाला सांप और कहाँ शैया! इतना परिवर्तन किससे किया? मुरली से। ऐसे परिवर्तन करने वाले को ही विजयी ब्राह्मण कहा जाता है। तो अपने से पूछो - मैं कौन?

सभी ने अपनी-अपनी कमज़ोरियों को सच्चाई से स्पष्ट किया है। उस

सच्चाई की मार्क्स तो मिल जायेंगी लेकिन बापदादा देख रहे थे कि अभी तक जबकि अपने संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति नहीं आई है, विश्व परिवर्तक कब बनेंगे! अभी दृष्टा हो, दृष्टि द्वारा देखने वाले दृष्टा, दृष्टि क्यों विचलित करते? दिव्य नेत्र से देखते हो वा इस चमड़ी के नेत्रों से देखते हो? दिव्य नेत्र से सदा स्वत: ही दिव्य स्वरूप ही दिखाई देगा। चमड़े की आँखें चमड़े को देखती। चमड़ी को देखना, चमड़ी का सोचना यह किसका काम है! फ़रिश्तों का? ब्राह्मणों का? स्वराज्य अधिकारियों का? तो ब्राह्मण हो या कौन हो? नाम बोलें क्या?

सदैव हरेक नारी शरीरधारी आत्मा को शक्ति रूप, जगत माता का रूप, देवी का रूप देखना यह है - दिव्य नेत्र से देखना। कुमारी है, माता है, बहन है, सेवाधारी निमित्त शिक्षक है, लेकिन है कौन? शक्ति रूप! बहन-भाई के सम्बन्ध में भी कभी-कभी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो जाती है। इसलिए सदा शक्ति रूप हैं। शिव शक्ति हैं। शक्ति के आगे अगर कोई आसुरी वृत्ति से आते तो उनका क्या हाल होता है, वह तो जानते हो ना। हमारी टीचर नहीं - शिव शक्ति है। ईश्वरीय बहन है इससे भी ऊपर शिव शक्ति रूप देखो। मातायें वा बहनें भी सदा अपने शिव शक्ति स्वरूप में स्थित रहें। मेरा विशेष भाई, विशेष स्टूडेन्ट नहीं। वह शिव शक्ति है और आप महावीर हो। लंका को जलाने वाले, पहले स्वयं के अन्दर रावण वंश को जलाना है। महावीर की विशेषता क्या दिखाते हैं? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? - एक राम दूसरा न कोई । चित्र देखा है ना। तो हर भाई महावीर है, हर बहन शक्ति है। महावीर भी राम का है, शक्ति भी शिव की है। **किसी भी देहधारी को देख सदा मस्तक के तरफ आत्मा को देखो। बात आत्मा से करनी है वा शरीर से? कार्य व्यवहार में आत्मा कार्य करता है वा शरीर? सदा हर सेकण्ड शरीर में आत्मा को देखो। नज़र ही मस्तक मणी पर जानी चाहिए। तो क्या होगा? आत्मा आत्मा को देखते स्वत: ही आत्म-अभिमानी बन जायेंगे। है तो यह पहला**

इतने होते हैं? अच्छा फ़र्स्ट डिवीजन में आने वाले हो? फर्स्ट आने वाले की विशेषता क्या होती है, वह जानते हो? फर्स्ट में आने वाले सदा बाप समान होंगे। समानता ही समीपता लाती है। समीप अर्थात् समान बनने वाले ही फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। तो बाप समान कब तक बनेंगे? जब विजय माला के नम्बर आउट हो जायेंगे फिर क्या करेंगे? कोई डेट फिक्स है? डेट फिक्स कौन-सी करनी है? डेट नहीं लेकिन अब की घड़ी। क्या इसमें मुश्किल है? कुमारों को कौन सी मुश्किल है? दो रोटी खाना है और बाप की सेवा में लगना है, यही काम है ना। दो रोटी के लिए निमित्त मात्र कोई कार्य करते हो ना। करते हो, लगाव से तो नहीं करते हो ना! निमित्त कहने से नहीं होता, कुमार कहने से नहीं करते, स्वतन्त्र हैं। तो **सदा लक्ष्य रहे बाप समान बनना है। जैसे बाप लाइट है वैसे डबल लाइट। औरों को देखते हो तो कमज़ोर होते हो, सी फ़ादर, फ़ालो फ़ादर करना है। यही सदा याद रखो। स्वयं को सदा बाप की छत्रछाया के अन्दर रखो। छत्रछाया में रहने वाले सदा मायाजीत बन ही जाते हैं। अगर छत्रछाया के अन्दर नहीं रहते, कभी अन्दर कभी बाहर तो हार होती है। छत्रछाया के अन्दर रहने वाले को मेहनत नहीं करनी पड़ती। स्वत: ही सर्व शक्तियों की किरणें उसे माया जीत बनाती हैं। एक बाप सर्व सम्बन्ध से मेरा है, यही स्मृति समर्थ आत्मा बना देती है। कुमार अब ऐसा जीवन का नक्शा तैयार करके दिखाओ जो सब कहें - निर्विघ्न आत्मायें हैं तो यहाँ हैं । सब विघ्न विनाशक बनो।** हलचल में आने वाले नहीं, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले। शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले बनो। सदा विजय का झण्डा लहराता रहे। ऐसा विशेष नक्शा तैयार करो। जहाँ युनिटी है वहाँ सहज सफलता है। लेकिन गिराने में युनिटी नहीं करना, चढ़ाने में। सदा उड़ती कला में जाना है और सबको ले जाना है - यही लक्ष्य रहे। **कुमार अर्थात् सदा आज्ञाकारी वफ़ादार। हर कदम में फ़ालो फ़ादर करने वाले। जो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्त्तव्य वह बच्चों का, जो बाप के संस्कार वह**

धोखा न दे। साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे। महान आत्मायें भी नहीं, निमित्त आत्मायें भी नहीं लेकिन बाबा ही याद आये। कोई भी बात आती है तो पहले बाप याद आता या निमित्त आत्मायें याद आती? सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं, ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो! किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए हर बात में बाबा-बाबा याद रहे। कुमार डबल लाइट हैं, संस्कार स्वभाव का भी बोझ नहीं। व्यर्थ संकल्प का भी बोझ नहीं। इसको कहा जाता है - हल्का । जितने हल्के होंगे उतना सहज उड़ती कला का अनुभव करेंगे। अगर ज़रा भी मेहनत करनी पड़ती है तो ज़रूर कोई बोझ है। तो बाबा-बाबा का आधार ले उड़ते रहो। यही अविनाशी आधार है।

रूहानी यूथ ग्रुप शान्तिकारी, कल्याणकारी ग्रुप है। सदा विश्व में शान्ति स्थापना के कार्य में निमित्त हैं, वह अशान्ति फैलाने वाले और आप शान्ति फैलाने वाले। ऐसे अपने को समझते हो? यूथ ग्रुप में राजनीतिक लोगों की भी उम्मीदें हैं और बापदादा की भी उम्मीदें हैं। उम्मीदें पूरी करने वाले हो ना! बच्चे सदा बाप की उम्मीदें पूरी करने वाले होंगे। तो सफलता के सितारे बन गवर्मेन्ट तक यह आवाज बुलन्द करना कि हम विजयी रत्न हैं! अभी देखेंगे कि कौनसे ग्रुप और कहाँ यह पहले झण्डा लहराते हैं। कभी भी अपनी शक्तियों को मिसयूज नहीं करना। सदा यह याद रखो कि हमारे ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। एक कमज़ोर तो एक के पीछे एक का सम्बन्ध है। हम ज़िम्मेवार हैं, यह स्मृति सदा रहे। जो कर्म आप करेंगे आपको देख सब करेंगे इसलिए साधारण कर्म नहीं, सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाले, सदा अचल रहने वाले।

सभी कुमार फर्स्ट नम्बर में आने वाले हो ना। फर्स्ट नम्बर एक होता है या

पाठ ना! पहला पाठ ही पक्का नहीं करेंगे, अल्फ को पक्का नहीं करेंगे तो बे बादशाही कैसे मिलेगी? **सिर्फ एक बात की सदा सावधानी रखो। जो भी करना है, श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ बनना है। तो हर बात में दृढ़ संकल्प वाले बनो। कुछ भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ परिवर्तन करना ही है। इसमें पुरुषार्थी शब्द को अलबेले रूप में यूज़ नहीं करो।** पुरुषार्थी हैं, चल रहे हैं, कर रहे हैं, करना तो है, यह अलबेलेपन की भाषा है। उसी घड़ी पुरुषार्थी शब्द को अलबेले रूप में यूज़ नहीं करो। उसी घड़ी पुरुषार्थी शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। पुरुष हूँ, प्रकृति धोखा दे नहीं सकती। **यह सब प्रकार की कमजोरियाँ अलबेलेपन की निशानियाँ हैं।** महावीर तो पहाड़ को भी सेकेण्ड में हथेली पर रख उड़ने वाला है। अर्थात् पहाड़ को भी पानी के समान हल्का बनाने वाला है। छोटी-छोटी परिस्थितियाँ क्या बात हैं! फिर तो ऐसे महावीर को कहेंगे चीटी से घबराने वाले। क्या करें, हो जाता है। यह महावीर के बोल हैं? समझदार यह नहीं कहेंगे कि क्या करें, चोर आ जाता है। समझदार बार-बार धोखा नहीं खाते। अलबेले बार-बार धोखा खाते हैं। सेफ्टी के साधन होते हुए अगर कार्य में नहीं लगाते तो उसको क्या कहेंगे? जानता हूँ कि नहीं होना चाहिए लेकिन हो रहा है, इसको कौन सी समझदारी कहेंगे!

दृढ़ संकल्प वाले बनो। परिवर्तन करना ही है, कल भी नहीं, आज। आज भी नहीं अभी। इसको कहा जाता है महावीर । राम के आज्ञाकारी। आज तो मिलने का दिन था फिर भी बच्चों ने मेहनत की है तो मेहनत का फल रेसपान्ड देना पड़ा। लेकिन इन कमजोरियों को साथ ले जाना है? दी हुई चीज़ फिर वापिस तो नहीं लेनी है ना! जबरदस्ती आ जावे तो भी आने नहीं देना। दुश्मन को आने दिया जाता है क्या? अटेन्शन, चेकिंग यह डबल लॉक, याद और सेवा यह दूसरा डबल लाक सबके पास है ना। तो सदा यह डबल लाक लगा रहे। दोनों तरफ लाक लगाना। समझा! एक तरफ नहीं लगाना। खातिरी तो स्थूल सूक्ष्म बहुत हुई है। डबल खातिरी हुई है ना। जैसे दीदी दादी वा निमित्त बनी

हुई आत्माओं ने दिल से खातिरी की है तो उसके रिटर्न में सब दीदी दादी को खातिरी देकर जाना कि हम अभी से सदा के विजयी रहेंगे। सिर्फ मुख से नहीं बोलना, मन से बोलना। फिर एक मास के बाद इन फोटो वालों को देखेंगे कि क्या कर रहे हैं। किससे भी छिपाओ लेकिन बाप से तो छिपा नहीं सकेंगे। अच्छा –

सदा दृढ़ सकंल्प द्वारा सोचा और किया, दोनों को समान बनाने वाले, सदा दिव्य नेत्र द्वारा आत्मिक रूप को देखने वाले, जहाँ देखें वहाँ आत्मा ही आत्मा देखें, ऐसे अर्थ स्वरूप पुरुषार्थी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

(27-4-1983)

कुमारों के साथ अलग-अलग ग्रुप से

गॉडली यूथ ग्रुप - लौकिक रीति से वह यूथ ग्रुप अपनी-अपनी बुद्धि अनुसार कार्य कर रहे हैं लेकिन उन्हों का कार्य नुकसान करना है। आप लोगों का काम है स्थापना के कार्य में सदा सहयोगी बनना। कभी कोई भी कारण वा विघ्न आये तो उसका निवारण सहज कर सकते हो? कुमार ग्रुप में बापदादा की सदा उम्मीदें रहती हैं। इतने यूथ हिम्मत और उमंग रख सदा के विजयी बन जाएं तो विश्व में विजय का झण्डा उठाकर सारे विश्व में घूमें। सदा उड़ती कला में जा रहे हो, कोई रुकती कला वाला तो नहीं है। यूथ ग्रुप अर्थात् सदा शक्तिशाली सेवा करने वाले। यूथ जो चाहे वह कर सकते हैं। वह विनाशकारी और आप स्थापना के कार्य वाले। वे अशान्ति मचाने वाले और आप शान्त स्वरूप हो। शान्ति फैलाने वाले हो। कुमारों के लिए तो बहुत तैयारी कर रहे हैं। ऐसे पक्के कुमार हों जो कभी हलचल में न आवें। ऐसे नहीं, यहाँ नाम बाला हो और फिर वहाँ पुरानी दुनिया में चले जाएं। कई कुमार पहले बहुत उमंग उत्साह से सेवा में चलते फिर थोड़ा भी टक्कर हुआ तो पुरानी दुनिया में चले जाते। छोड़ी हुई चीज़ फिर से जाकर लें तो अच्छा लगता है! आप सबने भी पुरानी दुनिया छोड़ दी है ना! अगर कोई रस्सी बंधी होगी तो हिलते रहेंगे। तो सदा अपने को गॉडली यूथ ग्रुप समझो। इतने सब

कुमार रिफ्रेश होकर खज़ानों से भरपूर होकर जायेंगे तो देखने वाले कहेंगे यह देवात्मा बनकर आ गये। ऐसा कोई कमाल का प्लैन बनाओ। यूथ को देखकर गवर्मेन्ट भी घबराती है। गवर्मेन्ट को भी रास्ता दिखाने के निमित्त आप लोग बनेंगे। कुमारों को सदा सेवा के शक्तिशाली प्लैन बनाने चाहिए। परन्तु याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहे। अच्छा -

सदा निर्विघ्न रहने की गुडमार्निंग जब होगी तो निर्विघ्न होंगे ना! जब सतयुग गुडमार्निंग होगा तो निर्विघ्न होंगे। अभी निर्विघ्न बनने की गुडमार्निंग। शुभ दिन कहते हैं ना। शुभ प्रात: कहते हैं तो शुभ प्रातः अर्थात् जिसमें अशुभ कुछ नहीं। आप सबकी सदा ही शुभ प्रात: है। शुभ दिन है और शुभ रात्रि है। तो सदा निर्विघ्न अर्थात् शुभ। इसलिए निर्विघ्न भव की गुडमार्निंग। अच्छा –

विदाई के समय :- सतगुरु की कृपा आपका वर्सा बन गया। इसलिए कृपा करो, यह संकल्प करने कि भी आवश्यकता नहीं। हो ही वृक्षपति के बच्चे। तो बृहस्पति की दशा, गुरु की कृपा सब स्वत: ही प्राप्त है। मांगने की आवश्यकता ही नहीं। मांगने से छूट गए, संकल्प करने से भी छुड़ा दिया। अभी मांगने का कुछ रहा है क्या! बाप के भी सिर के ताज हो गये। वह माँगेगा क्या! तो वृक्षपति दिवस की, बृहस्पति के दशा की सदा ही बच्चों को बधाई सहित याद-प्यार।

(07-05-1983)

कुमारों से:- सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी – ऐसे अनुभव करते हो? जो सदा साक्षी होगा वह सदा ही हर कर्म करते हर कदम उठाते कर्म के बन्धन से न्यारे और बाप के प्यारे, तो ऐसे साक्षीपन अनुभव करते हो? कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अपने बन्धन में नहीं बाँधे इसको कहा जाता है - साक्षी । ऐसे साक्षी हो? कोई भी कर्म अपने बन्धन में बाँधता है तो उसको साक्षी नहीं कहेंगे। फँसने वाला कहेंगे। न्यारा नहीं कहेंगे। कभी आँख भी धोखा न दे। शारीरिक सम्बन्ध में आना अर्थात् आँख का धोखा खाना। तो **कोई भी कर्मेन्द्रिय**